सामुदायिक GOONJ
RNI No. MPBIL02443/2020-TC
National News Magazine

वर्ष 02, अंक 02 | फरवरी 2022 | मूल्य 25, पृष्ठ 52

विज़न ज़ीरो पर फोकस....

कृति सिंह
संपादक

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया विज़न ज़ीरों अभियान को आम जन तक पहुंचाने के लिए गूंज 90.8 एफएम एवं गूंज मीडिया ग्रुप निरंतर कार्य कर रहा है ताकि लोग यातायात के नियमों के प्रति जागरूक हो सकें। और सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने में मदद मिले। हमारा उद्देश्य है कि यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से शुरू किया गया विज़न ज़ीरो अभियान को आम जन तक पहुंचाने के लिए गूंज 90.8 एफएम एवं गूंज मीडिया ग्रुप निरंतर कार्य कर रहा है। ताकि लोग यातायात के नियमों के प्रति जागरूक हो सकें। और सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने में मदद मिले। हमारा उद्देश्य है कि यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

हम जिस तरह का सड़क सुरक्षा तंत्र तैयार करेंगे, उसी में हमें परिवार व मित्रों के साथ गुजरना होगा। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जा रहा है। विजन जीरो को सफल बनाने में सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। इसी कड़ी में गूंज भी निरंतर प्रयासरत है। गूंज मीडिया ग्रुप एवं गूंज 90.8 एफएम द्वारा ग्वालियर शहर में लोगों को यातायात के नियमों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से विज़न ज़ीरो पर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। विज़न ज़ीरो क्या है तथा इसके अंतर्गत आने वाली सभी चीजों को विस्तार पूर्वक लोगों को समझाने का कार्य हमारे द्वारा किया जा रहा है।

मध्य प्रदेश एक्सीडेंट के मामले में दूसरे स्थान पर हैं जिससे हम सबको बचना हैं। साथ ही बच्चों को रेड सिग्नल के बारे में जागरूक होना चाहिए जिससे वह शुरू से ही नियमों का पालन करें। किस प्रकार रोड पर चलना चाहिए एवं युवा किस प्रकार एक्सीडेंट होने से बच सकते हैं इस पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई। विजन जीरो कार्यक्रम में हमारे द्वारा दी जा रही है। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल हैं। परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएँ रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जाएगा। सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

और अन्त में यही कहना चाहूंगी कि गूंज द्वारा चलाई जा रही इस मुहिम में आप भी हमारे सहभागी बनें। हमारे द्वारा निरंतर कई कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं जिसमें विज़न ज़ीरो के बारे में जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है। जिसमें शहरवासी भी हमारे साथ लोगों को जागरूक करें जिससे सड़कों पर होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। जनहित से जुड़े इस मानव सेवी कार्य में हमारा साथ दें।

धन्यवाद

● कृति सिंह

जनवरी 2022 का अंक

ग्वालियर, फरवरी 2022

(वर्ष 02, अंक 02, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

सह संपादक
मनोज सिंह भदौरिया

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

क्रिएटिव टीम
दर्शिता चौबे, नेहल सिंह

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह, स्निग्ध तोमर

संकलन
भरत सिंह, सचिन सिंह

कानूनी सलाहकार
अरविन्द दूदावत

कार्यालय प्रभारी
आकांक्षा तिवारी

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्क: 7880075908)

IN THIS ISSUE...

VISION ZERO ROAD SAFETY

SPECIAL REPORT 47

चंबल क्षेत्र सहित देश-प्रदेश के 06

SPECIAL STORY 23

RADIO DAY 04

SOCIAL WORK 48

आया बसंत 03

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। **संपादक कृति सिंह।** सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा। **RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC** (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) **संपर्क: 7880075908**

आया बसंत....

भारत में पतझड़ ऋतु के बाद बसन्त ऋतु का आगमन होता है। हर तरफ रंग-बिरंगें फूल खिले दिखाई देते हैं। इस समय गेहूं की बालियां भी पक कर लहराने लगती हैं। जिन्हें देखकर किसान हर्षित होते हैं। चारों ओर सुहाना मौसम मन को प्रसन्नता से भर देता है।

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

बसन्त उत्तर भारत तथा समीपवर्ती देशों की छह ऋतुओं में से एक ऋतु है। जो फरवरी मार्च और अप्रैल के मध्य इस क्षेत्र में अपना सौंदर्य बिखेरती है। माना गया है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसन्त ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास बसन्त ऋतु के माने गए हैं। फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र पहला। इस प्रकार हिंदू पंचांग के वर्ष का अंत और प्रारंभ बसन्त में ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं। खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। अतः राग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है।

भारत में पतझड़ ऋतु के बाद बसन्त ऋतु का आगमन होता है। हर तरफ रंग-बिरंगें फूल खिले दिखाई देते हैं। इस समय गेहूं की बालियां भी पक कर लहराने लगती हैं। जिन्हें देखकर किसान हर्षित होते हैं। चारों ओर सुहाना मौसम मन को प्रसन्नता से भर देता है। इसीलिये वसन्त ऋतु को सभी ऋतुओं का राजा अर्थात ऋतुराज कहा गया है। इस दिन भगवान विष्णु, कामदेव तथा रति की पूजा की जाती है। इस दिन ब्रह्माण्ड के रचयिता ब्रह्मा जी ने सरस्वती जी की रचना की थी। इसलिए इस दिन देवी सरस्वती की पूजा भी की जाती है।

सभी शुभ कार्यों के लिए बसन्त पंचमी के दिन अत्यंत शुभ मुहूर्त माना गया है। बसन्त पंचमी को अत्यंत शुभ मुहूर्त मानने के पीछे अनेक कारण हैं। यह पर्व अधिकतर माघ मास में ही पड़ता है। माघ मास का भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष महत्व है। इस माह में पवित्र तीर्थों में स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। दूसरे इस समय सूर्यदेव भी उत्तरायण होते हैं। इसलिए प्राचीन काल से बसन्त पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा की जाती है अथवा कह सकते हैं कि इस दिन को सरस्वती के जन्म दिवस के रुप में मनाया जाता है। बसन्त पंचमी के दिन विद्यालयों में भी देवी सरस्वती की आराधना की जाती है। भारत के पूर्वी प्रांतों में घरों में भी विद्या की देवी सरस्वती की मूर्ति की स्थापना की जाती है और वसन्त पंचमी के दिन उनकी पूजा की जाती है।

उसके बाद अगले दिन मूर्ति को नदी में विसर्जित कर दिया जाता है। देवी सरस्वती को ज्ञान, कला, बुद्धि, गायन-वादन की अधिष्ठात्री माना जाता है। इसलिए इस दिन विद्यार्थी, लेखक और कलाकार देवी सरस्वती की उपासना करते हैं। विद्यार्थी अपनी किताबें, लेखक अपनी कलम और कलाकार अपने संगीत उपकरणो और बाकी चीजें मां सरस्वती के सामने रखकर पूजा करते हैं।

आमजन की सशक्त आवाज
गूंज रेडियो

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . आपकी अपनी आवाज़ अब शहरवासियों के बीच ऑन एयर हो चुका है शहरवासियों का गूंज 90.8 एफ.एम. को अच्छा रिस्पॉस मिल रहा है। लोग गूंज एफ. एम. के माध्यम से ग्वालियर शहर से जुड़े इतिहास, कला, संस्कृति, पर्यटन, कम्युनिटी, एग्रीकल्चर, शिक्षा आदि विषयों पर कई जानकारी मिल रही हैं। गूंज एक मंच प्रदान करता है उन आवाज़ों को जो समाज में उभरकर नहीं आप पा रही हैं। ऐसे बहुत हुनरमंद कलाकार हैं जो पूरे विश्व में ही शहर का नाम रोशन कर सकते हैं लेकिन उनको अपने सपने साकार करने की सीढ़ी नहीं मिल पा रही है। गूंज के ज़रिए वो अपनी कला का जादू बिखेर सकते हैं।

वहीं बात रेडियो की करें तो रेडियो मानवता को उसकी सभी विविधता में मनाने का एक शक्तिशाली माध्यम है और लोकतांत्रिक प्रवचन के लिए एक मंच का गठन करता है। वैश्विक स्तर पर, रेडियो सबसे अधिक खपत वाला माध्यम बना हुआ है। व्यापक दर्शकों तक पहुंचने की इस अनूठी क्षमता का मतलब है कि रेडियो समाज के विविधता के अनुभव को आकार दे सकता है, सभी आवाजों को बोलने, प्रतिनिधित्व करने और सुनने के लिए एक क्षेत्र के रूप में खड़ा हो सकता है। रेडियो स्टेशनों को

विविध समुदायों की सेवा करनी चाहिए, विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, दृष्टिकोणों और सामग्री की पेशकश करनी चाहिए, और उनके संगठनों और संचालन में दर्शकों की विविधता को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार, रेडियो दुनिया में सबसे भरोसेमंद और उपयोग किए जाने वाले मीडिया में से एक है। विश्व रेडियो दिवस के 2022 संस्करण का विषय इस प्रकार रेडियो और ट्रस्ट को समर्पित है।

20 सितंबर 2010 को स्पेनिश रेडियो अकादमी के अनुरोध के बाद, स्पेन ने प्रस्तावित किया कि यूनेस्को के कार्यकारी बोर्ड में विश्व रेडियो दिवस की घोषणा पर एक एजेंडा आइटम शामिल है। यूनेस्को का कार्यकारी बोर्ड 29 सितंबर 2011 को विश्व रेडियो दिवस की घोषणा के लिए अपने अनंतिम एजेंडे में एजेंडा आइटम है। यूनेस्को ने

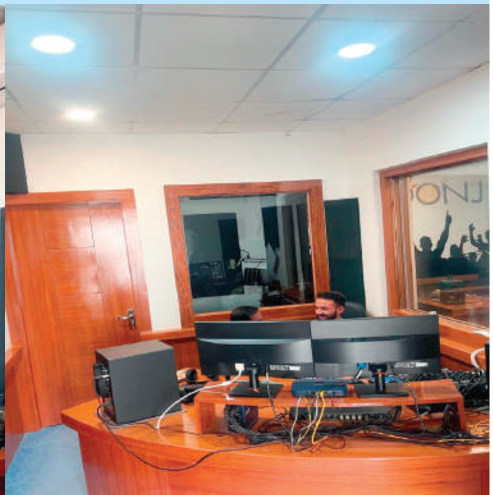

2011 में विविध हितधारकों, जैसे कि प्रसारण संघों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों, निधियों और कार्यक्रमों के साथ व्यापक परामर्श किया। एनजीओ, फाउंडेशन और द्विपक्षीय विकास एजेंसियां, साथ ही यूनेस्को के स्थायी प्रतिनिधिमंडल और यूनेस्को के लिए राष्ट्रीय आयोग। जवाबों में, 91त्र परियोजना के पक्ष में थे, जिसमें अरब स्टेट्स ब्रॉडकास्टिंग यूनियन , एशिया-पैसिफिक ब्रॉडकास्टिंग यूनियन , अफ्रीकन यूनियन ऑफ़ ब्रॉडकास्टिंग कैरेबियन ब्रॉडकास्टिंग यूनियन (सीबीयू), यूरोपियन ब्रॉडकास्टिंग यूनियन (ईबीयू), इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ ब्रॉडकास्टिंग (आईएबी), नॉर्थ

अमेरिकन ब्रॉडकास्टर्स एसोसिएशन (एनएबीए), ऑर्गेनाइज़ेशन डी टेलीकॉम्यूनिकेसिओन्स इबोरामेरिकानास (ओटीआई), बीबीसी, यूआरटीआई, वेटिकन रेडियो आदि।

बोर्ड ने यूनेस्को के 36वें सत्र को सामान्य सम्मेलन के लिए सिफारिश की कि वह अपने 36वें सत्र में विश्व रेडियो दिवस की घोषणा करे, और इस दिन को यूनेस्को द्वारा 13 फरवरी को मनाया जाए, जिस दिन संयुक्त राष्ट्र ने संयुक्त राष्ट्र रेडियो की स्थापना की थी। 1946 में। इसने सभी संयुक्त राष्ट्र सदस्य राज्यों, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के संगठनों और अन्य अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय संगठनों, पेशेवर संघों और प्रसारण संघों के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठनों और व्यक्तियों सहित नागरिक समाज को विश्व रेडियो का विधिवत जश्न मनाने के लिए आमंत्रित किया। दिन, जिस तरह से प्रत्येक सबसे पर्याप्त मानता है। बोर्ड ने आगे अनुरोध किया कि यूनेस्को के महानिदेशक संयुक्त राष्ट्र के महासचिव के ध्यान में प्रस्ताव लाए, ताकि विश्व रेडियो दिवस को महासभा द्वारा समर्थन दिया जा सके और पूरे सिस्टम द्वारा मनाया जा सके। इस मामले को बाद में यूनेस्को के सामान्य सम्मेलन द्वारा माना गया, जिसने फ़ाइल 36 सी/63 में निहित संकल्प को अपनाया। विश्व

रेडियो दिवस इस प्रकार नवंबर 2011 में यूनेस्को के सभी सदस्य राज्यों द्वारा सर्वसम्मति से घोषित किया गया था। दिसंबर 2012 में, संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने विश्व रेडियो दिवस की घोषणा का समर्थन किया, जो संयुक्त राष्ट्र की सभी एजेंसियों, फंडों और कार्यक्रमों और उनके सहयोगियों द्वारा मनाया जाने वाला दिन बन गया। दुनिया भर के विभिन्न रेडियो उद्योग निकाय विकसित देशों में स्टेशनों को विकासशील देशों की सहायता के लिए प्रोत्साहित करके पहल का समर्थन कर रहे हैं। यूनेस्को में, परामर्श, उद्घोषणा और समारोह मीडिया विकास के क्षेत्र के प्रमुख मिर्ता लौरेंको द्वारा नियंत्रित किए गए थे।

2022 में समारोह

विश्व रेडियो दिवस 2022 के अवसर पर, यूनेस्को ने इस कार्यक्रम के 11वें संस्करण और एक सदी से अधिक रेडियो का जश्न मनाने के लिए दुनिया भर के रेडियो स्टेशनों का आह्वान किया है।

रेडियो पत्रकारिता पर भरोसा

स्वतंत्र और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री तैयार करें वर्तमान उच्च गति वाले डिजिटल युग में नैतिक पत्रकारिता के बुनियादी मानकों का सम्मान करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। हालांकि, श्रोताओं के विश्वास को बनाए रखने या बढ़ाने के लिए, पत्रकारिता को सार्वजनिक हित में साझा की जाने वाली सत्यापन योग्य जानकारी पर आधारित होना चाहिए, जो शक्तिशाली हो और समाज को सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाने में मदद करे।

विश्वास और पहुंच अपने दर्शकों का ख्याल रखें

एक चयनित श्रोता समूह तक पहुँचने का अर्थ है सभी श्रोताओं की सूचनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करना और विकलांग व्यक्तियों सहित एकीकरण और सामाजिक भागीदारी के लिए उत्प्रेरक बनना। डिजिटल रेडियो प्लेटफॉर्म बाद के लिए सामग्री की पहुंच में नवाचार के लिए आधार प्रदान करते हैं, जैसे कि स्ट्रीमिंग के दौरान श्रवण-बाधित दर्शकों के लिए सांकेतिक भाषाओं या स्वचालित उपशीर्षक का उपयोग, या नेत्रहीन श्रोताओं के लिए सामग्री की घोषणा।

जन-जन की आवाज बना गूंज

होनहार प्रतिभाओं की आवाज़ बनकर उभरेगा गूंज 90.8 एफ.एम यह कहना है गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह का उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने का तथा अपने विचार प्रस्तुत करने का पूरा हक़ है और इसका ज़रिया बनेगा गूंज 90.8 एफ. एम. आपकी अपनी आवाज़। ग्वालियर शहर एवं अंचल के आसपास की होनहार प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के लिए गूंज एक प्लेटफार्म बनकर उभरेगा और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करेगा।

समाज का प्रत्येक व्यक्ति गूंज का हिस्सा बने और साथ में मिलकर समाज के विकास में अपना योगदान दे। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठक गूंज 90.8 एफ एम से जुड़ कर हमारे उद्देश्य को सफल बना समाज की उन्नति में अपना योगदान देंगे।

चंबल क्षेत्र सहित देश-प्रदेश के किसानों को मिलेगा आधुनिक टेक्नोलॉजी का लाभ : तोमर

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

नाबार्ड द्वारा ग्वालियर के राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित कृषि व्यवसाय इंक्यूबेशन सेंटर का उदघाटन केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने किया। कार्यक्रम में कमल पटेल, कृषि मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, श्री भारत सिंह कुशवाह, उधानिकी मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, श्री विवेक शेजवलकर सांसद, डॉ. जी.आर. चिंतला, अध्यक्ष, नाबार्ड, एस. के. राव कुलपति भी विशेष रूप से उपस्थित थे। साथ ही कृषि मंत्री श्री तोमर एवं तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा महाविद्यालय प्रांगण में इकोफेस्ट तथा नाबार्ड की राज्य स्तरीय प्रदर्शनी उमंग- 2022 का भी उद्घाटन किया गया।

एग्रीबिजनेस इनक्यूबेशन सेंटर का मुख्य उद्देश्य चंबल क्षेत्र में अगले चार वर्षों में 240 इंकुबेटीस एवं 100 स्टार्टअप्स खड़े करना रहेगा। साथ ही क्षेत्र में फ़सल उत्पाद एवं फ़सल सुरक्षा बढ़ाने एवं प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन की लगभग 130 टेक्नालाजी को विकसित करना एवं उसके प्रति जागरूकता पैदा करना है।

मंत्री श्री तोमर ने इस अवसर पर कहा कि सेंटर की मदद से चंबल क्षेत्र ही नहीं अपितु प्रदेश और देश के किसानों और कृषि उत्पादक संगठनों को मदद मिलेगी एवं आधुनिक टेक्नोलोजी को किसानों तक पहुंचा कर उन्हे लाभ प्रदान किया जायेगा। उन्होने नाबार्ड की प्रशंसा करते हुये कहा कि नाबार्ड ने सेंटर हेतु सहायता के लिए विशेष नीति बनाई और कृषि क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं के माध्यम से इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं।

मंत्री जी बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने बार-बार स्टार्ट अप के क्षेत्र में देश के योगदान को रेखांकित किया है। देश में 44 स्टार्ट अप यूनिकॉर्न की श्रेणी में हैं, परंतु उनमें से कोई भी कृषि फोकस स्टार्ट अप नहीं है। हम सबका प्रयास होना चाहिए कि कृषि क्षेत्र में पहला यूनिकॉर्न मध्य प्रदेश के ग्वालियर से आए। राजमाता सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में स्थापित इस सेंटर की गतिविधियों को मैं नजदीक से देखता रहूँगा और समय समय पर प्रगति के विषय में जानकारी भी लेता रहूँगा।

केंद्रीय मंत्री तोमर के प्रयासों से सैनिक स्कूल के लिए 100 करोड़ मंजूर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री तथा मुरैना-श्योपुर क्षेत्र के सांसद नरेंद्र सिंह तोमर के प्रयासों से सैनिक स्कूल के लिए 100 करोड़ रू. की स्वीकृति मिल गई है। मध्यप्रदेश का यह दूसरा सैनिक स्कूल चंबल अंचल के मालनपुर में खुलेगा, जिससे अंचलवासियों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी हो जाएगी। इसमें 600 बच्चे अध्ययन करेंगे। पहला सैनिक स्कूल रीवा में 20 जुलाई 1962 को खोला गया था। श्री तोमर ने रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह को धन्यवाद दिया है, वहीं भूमि देने के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का आभार माना है। चंबल अंचल में सैनिक स्कूल खोलने की मांग कुछ वर्षों से हो रही थी। यह विषय केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर की प्राथमिकता में रहा है। इस सैनिक स्कूल को खोले जाने के लिए केंद्रीय मंत्री श्री तोमर ने प्रारंभ से ही शासन-प्रशासन के स्तर पर अपनी ओर से पहल की थी। श्री तोमर ने अफसरों के साथ औद्योगिक क्षेत्र मालनपुर में यह सैनिक स्कूल संचालित किए जाने के लिए उस जमीन का भी निरीक्षण किया था, जहां स्कूल का निर्माण होना है। यह स्कूल खोले जाने के लिए पूर्व में श्री तोमर के प्रयासों से लगभग 50 हेक्टेयर जमीन राज्य सरकार द्वारा आवंटित की गई थी। पिछले कुछ समय में श्री तोमर ने एकाधिक बार रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह तथा रक्षा मंत्रालय के वरिष्ठ अफसरों से चर्चा की थी और उन्हें पत्र भी लिखा था। साथ ही, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान से भी श्री तोमर ने सैनिक स्कूल जल्द से जल्द प्रारंभ किए जाने को लेकर बातचीत की थी। श्री तोमर द्वारा गंभीरता से की गई पहल का सकारात्मक परिणाम आया और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के दिशा-निर्देशों पर रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) द्वारा अब 100 करोड़ रूपए मध्य प्रदेश सरकार को दिए जाने की मंजूरी प्रदान कर दी गई है। रक्षा मंत्रालय की सैनिक स्कूल सोसायटी के साथ समन्वय करते हुए म.प्र. सरकार द्वारा निर्धारित एजेंसी सुसज्जित सैनिक स्कूल का निर्माण करेगी। इस संबंध में म.प्र. के स्कूल शिक्षा विभाग और रक्षा मंत्रालय के संगठन के बीच समझौता ज्ञापन भी होगा तथा आवश्यक औपचारिकताएं शीघ्र पूरी की जाएगी। श्री तोमर के मुताबिक, यह एक महत्वाकांक्षी परियोजना है और इस क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण भी है।

बदलाव का बजट

"

केंद्र सरकार का यह बजट असाधारण परिस्थितियों के बीच पेश किया गया है। कोरोना महामारी का दौर अभी जारी है। ऐसे में, यह देश के आम बजट का महत्वपूर्ण योगदान रहा है कि जितनी आकांक्षाएं थीं और जितने वर्ग थे, सभी के लिए पूरी विविधता के साथ सकारात्मक व निश्चित कदम उठाए गए हैं। इस दृष्टिकोण से मैं इस बजट को एक अद्भुत प्रयास कहूंगा। इस बजट के तीन-चार मुख्य पहलुओं पर मैं प्रकाश डालना चाहूंगा। सर्वप्रथम व्यय को घटाने का जो रास्ता था, उससे हटकर चलते हुए पूंजीगत व्यय में बहुत सकारात्मक वृद्धि की गई है। पूंजीगत व्यय को 134 प्रतिशत बढ़ा दिया गया है, इसके माध्यम से कई काम किए जाएंगे। विकास के कार्यक्रमों को भी ध्यान में रखते हुए पूंजीगत व्यय के माध्यम से रेलवे, बंदरगाह, सड़क परिवहन में जो गति आएगी, वह बहुत सराहनीय है।

मोदी सरकार के इस बार के बजट में 25 हजार करोड़ रुपये का लक्ष्य नेशनल हाईवे के लिए रखा गया है। रेलवे में भी वंदे भारत ट्रेन, कार्गो टर्मिनल की घोषणा हुई है। कृषि क्षेत्र में टेक्नोलॉजी पर ध्यान दिया गया है। इसके लिए जरूरी प्रोत्साहन दिया गया है। अपने देश में भूमि रिकॉर्ड बहुत ही नाजुक मामला रहा है और भूमि कानून को कभी भी सहज नहीं बनाया जा सकेगा, यदि भूमि रिकॉर्ड पर हम ध्यान नहीं देंगे। तो डिजिटल टेक्नोलॉजी और डिजिटल ड्रोन मोड से भूमि रिकॉर्ड के बारे में वित्त मंत्री ने घोषणा की है। फसल विविधीकरण के बारे में बात कही गई है। तिलहन के बारे में बात हुई है। आज कृषि विविधिता की जरूरत है, तभी दुरुपयोग रुकेगा, और उदाहरण के लिए, तभी पराली जलाने जैसी समस्याओं से निपटने में भी ठोस मदद मिलेगी। कृषि क्षेत्र में खाद्य और सब्जियों पर बहुत ध्यान दिया गया है। दूसरा, एक निश्चित कदम के तहत छोटे व मझोले उद्यमों के लिए अलग से धन दिया गया है। कोरोना महामारी से हॉस्पिटैलिटी या सत्कार उद्योग बहुत प्रभावित हुआ है, उसके लिए वर्तमान बजट में पांच लाख करोड़ रुपये अलग से दिया गया है।

हालांकि, इस पर ज्यादा बात नहीं हो रही है। कोविड महामारी के समय शिक्षा के क्षेत्र में एक सबसे बड़ी समस्या डिजिटल डिवाइड की थी। गांवों के जो बच्चे हैं, उनके पास साधन नहीं हैं। ऐसे बच्चे शहरी क्षेत्रों में भी हैं, उनके लिए कई निश्चित कदम उठाए गए हैं। बच्चों के लिए 200 टीवी चैनलों की घोषणा की गई है, जिनसे उच्च गुणवत्ता के कंटेंट प्रसारित होंगे। डिजिटल यूनिवर्सिटी की घोषणा और चिकित्सा क्षेत्र में टेक्नोलॉजी पर ध्यान दिया गया है। शहरी विकास पर वर्षों बाद गंभीरता से ध्यान दिया गया है। एक निश्चित प्रयास है कि शहरी विकास के लिए यथोचित योजना बने। इसी संदर्भ

में उच्च स्तरीय कमेटी बनाने की घोषणा की गई है। शहरी विकास पर हमारा फोकस वापस जाएगा।

एक महत्वपूर्ण कदम डिजिटल तकनीक के माध्यम से और उसके अतिरिक्त भी प्रधानमंत्री ने पंचामृत की घोषणा जो कोप-26 में की थी, उस दिशा में प्रभावी घोषणा हुई है कि हरित ऊर्जा को कैसे बढ़ाया जाए, ताकि शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके और ऊर्जा बदलाव हम लोग हासिल कर सकें। सबसे सराहनीय बात है कि यद्यपि पूंजीगत व्यय में 135 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, फिर भी मेक्रो स्टेबिलिटी को ध्यान में रखते हुए, यद्यपि इस वित्तीय वर्ष में 34.83 लाख करोड़ रुपये का जो व्यय होगा, उसमें वृद्धि आएगी।

इस स्थायित्व से पूंजी निवेशकों को बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिलेगा। कर के मामले में भी कई निश्चित कदमों की घोषणा हुई है। सबसे पहले टैक्स की स्थिरता, दूरगामी विश्वास और निरंतरता जरूरी है, इससे लोगों का विश्वास बढ़ता जाएगा। सरकार ने इस पक्ष को ध्यान में रखा है। विशेष रूप से स्टार्टअप के लिए भी कदम उठाए गए हैं। डिजिटल मुद्रा या पूंजी की चर्चा हुई है। किस रूप में डिजिटल पूंजी है, इसका उल्लेख अभी नहीं किया है। रिजर्व बैंक स्वयं की डिजिटल करेंसी लाने वाला है। क्रिप्टो करेंसी पर 30 प्रतिशत तक टैक्स लगेगा और इसमें किसी प्रकार की रियायत नहीं दी जाएगी। यह आज जो स्वाभाविक स्थिति है, उसकी एक स्वीकारोक्ति है। यह अच्छा है या बुरा, इसका विश्लेषण अलग से हो सकता है, लेकिन अर्थव्यवस्था के इस पहलू को बजट में स्वीकार करके अच्छा कदम उठाया गया है। डिजिटल मुद्रा पर अभी तक कोई नियंत्रण नहीं था, इसका प्रचार-विज्ञापन हर जगह किया जा रहा था, अब इस क्षेत्र में निवेश करने वालों को टैक्स चुकाना होगा। सरकार द्वारा इस दिशा में स्थिति स्पष्ट करना जरूरी था। इस बजट से आत्मनिर्भर भारत को प्रोत्साहन मिलना है। निरंतरता, विश्वास, विकास और जो लक्ष्य है 75 वर्ष से आगे भारत के 100 साल का, जिसे अमृत अवसर कहते हैं, उस दिशा में यह बजट बहुत सकारात्मक कदम है।

बजट में किसानों के लिए बड़ी घोषणाएं

यूं तो केंद्र सरकार के आगामी वित्तीय वर्ष के बजट में किसानों के लिये कई बड़ी घोषणाएं की गयी हैं जिनमें एमएसपी के लिये एकमुश्त रकम तय करने, 1208 मीट्रिक टन गेहूं-धान खरीदने, प्राकृतिक खेती विकसित करने के लिये राज्यों व एमएसएमई की भागीदारी बढ़ाने, ड्रोन का उपयोग बढ़ाने, केन-बेतवा लिंक योजना से

सिंचाई का दायरा बढ़ाने, रेलवे की मदद से लॉजिस्टिक विकसित करने जैसी घोषणाएं शामिल हैं।

लेकिन एक घोषणा ने देश का ध्यान खींचा, वह है इस साल को मोटा अनाज वर्ष के रूप में मनाया जाना। दरअसल, सदियों से भारत में मोटे अनाज का उत्पादन होता रहा है। इसकी वजह यह कि इसकी उत्पादन लागत कम होती है। अधिक तापमान में खेती संभव है। इसमें सिंचाई के लिये पानी की कम खपत होती है। साथ ही कम उपजाऊ भूमि में इसका उत्पादन हो सकता है। इसके अलावा कीटनाशकों की कम जरूरत होती है और किसान रासायनिक खादों से परहेज करते हुए कंपोस्ट खाद से भी इसका उत्पादन कर सकते हैं। दरअसल, केंद्र सरकार ने वर्ष 2018 में इस दिशा में पहल की थी जिसके उपरांत मोटे अनाज का उत्पादन जो वर्ष 2017-18 में 164 लाख टन था, वह वर्ष 2020-21 जून-जुलाई में बढ़कर 176 लाख टन हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस मुद्दे पर विशेष ध्यान रहा और उन्होंने वैश्विक स्तर पर भी प्रयास किये। यह भारत के प्रयासों की बड़ी कामयाबी है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भारत के प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार करते हुए वर्ष 2023 को मोटे अनाज का अंतर्राष्ट्रीय वर्ष घोषित किया है। दरअसल,मोटे अनाज में बाजरा, ज्वार, जौ, कोदो आदि फसलें आती हैं। इस प्रस्ताव को दुनिया के 70 देशों का समर्थन मिला है। निस्संदेह यह इन फसलों के पारिस्थितिकीय लाभ को प्रोत्साहित करने की ओर सार्थक कदम है। इस पहल से न केवल खाद्य सुरक्षा व किसानों के कल्याण को प्रोत्साहन मिलेगा बल्कि यह कृषि वैज्ञानिकों और स्टार्ट-अप समूहों के लिये शोध व नवोन्मेष के रास्ते खोलता है। निस्संदेह, वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष घोषित करने से अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय किसानों के लिये नये अवसर विकसित होते हैं। देश के संदर्भ में यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इनकी पौष्टिकता की संभावनाओं से लोगों के स्वास्थ्य की भी रक्षा होती है। जाहिरा तौर पर परंपरागत फसलों से अधिक कीमत होने के कारण बाजार में ज्वार-बाजरा जैसे मोटे अनाज की मांग बढ़ेगी। इन फसलों के उत्पादन में पानी, रासायनिक खाद व कीटनाशकों की खपत कम होने से किसान की लागत घटेगी। कम उपजाऊ मिट्टी में इन फसलों की खेती की जा सकती है। इतना ही नहीं, ग्लोबल वार्मिंग संकट के चलते मौजूदा फसलों पर जो खतरा मंडरा रहा है, उसे भी कम किया जा सकेगा। बशर्ते अनाज विपणन, भंडारण और आपूर्ति श्रृंखला की विसंगितियों को दूर किया जाए। देश के कृषि व खाद्य प्रसंस्करण उद्योग को भी इस दिशा में पहल करनी चाहिए। दरअसल, हरित क्रांति के बाद खेती-किसानी के तौर-तरीके बदले और कृषि गेहूं-धान पर केंद्रित हो गई। इसका एक कारण इन फसलों को मिलने वाले न्यूनतम समर्थन का भरोसा भी रहा। देश में संपन्नता आने से लोगों की खानपान की आदतों में भी बदलाव आया जिससे परंपरागत फसलें हाशिये पर चली गईं। दरअसल, आज देश में लोगों को मोटे अनाज से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बारे में जागरूक करने की जरूरत भी है। देश के संभ्रांत वर्ग व विदेशों में मोटे अनाज को 'स्मार्ट फूड' के तौर पर देखा जा रहा है। ये किसान व खाने वाले की सेहत के लिये फायदेमंद हैं। विशेषज्ञ बता रहे हैं कि इनमें पौष्टिक तत्व अधिक होते हैं। अध्ययनों के मुताबिक, कोदो व बाजरा मधुमेह को नियंत्रित करने में मददगार होते हैं और कोलेस्ट्रॉल स्तर सुधारते हैं। इनमें कैल्शियम, जिंक व आयरन की प्रचुर मात्रा होती है।

उम्मीद से उलट बजट

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव करीब हैं, इसलिए यह आम सोच थी कि बजट लोकलुभावन होगा। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इस सोच को गलत साबित किया है। बजट का फोकस सरकारी खर्च बढ़ाकर आर्थिक विकास दर तेज करने पर है, जिसकी जरूरत भी थी। इसलिए यह ग्रोथ का बजट है, बोल्ड बजट है। सरकार ने वित्त वर्ष 2023 में कैपिटल एक्सपेंडिचर में 35.4 फीसदी की बढ़ोतरी का प्रस्ताव रखा है। यह बहुत बड़ा फैसला है, लेकिन इससे महंगाई दर बढ़ेगी। वित्त मंत्री ने वित्त वर्ष 2023 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य 6.4 फीसदी रखा है, जो इससे पिछले साल में 6.8 फीसदी रहा। यह भी ठीक है। अभी आर्थिक रिकवरी को मजबूत बनाने की जरूरत है, इसलिए आने वाले वर्षों में राजकोषीय घाटे को धीरे-धीरे कम किया जा सकता है। पीएम गति शक्ति के जरिये वित्त मंत्री ने इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश बढ़ाने का एलान किया।

यह भी अच्छा कदम है। सरकार कुछ समय से पीएलआई स्कीम के जरिये 14 क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा दे रही है। यह आत्मनिर्भर भारत के अजेंडा के साथ निर्यात बढ़ाने में भी कारगर हुआ है। रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर भारत के अजेंडा को सरकार ने आगे बढ़ाया है। वित्त मंत्री ने बजट में क्रिप्टोकरंसी पर भी निवेशकों की उलझन दूर कर दी। उन्होंने इससे हुए मुनाफे पर 30 फीसदी टैक्स लगाने का प्रस्ताव रखा। वित्त वर्ष 2023 में रिजर्व बैंक डिजिटल करंसी लाएगा, इसका ऐलान भी निर्मला सीतारमण ने किया। इन दोनों बातों से लगता है कि सरकार ने क्रिप्टोकरंसी को एक एसेट तो मान लिया है, लेकिन वह इन्हें बढ़ावा नहीं देना चाहती। पर्सनल इनकम टैक्स की दरों में कोई बदलाव नहीं किया गया, वैसे, अगर इसमें राहत दी गई होती तो उससे खपत बढ़ाने में मदद मिलती। खासतौर पर यह देखते हुए कि हाल के वर्षों में मध्य वर्ग की आय में भी कमी आई है और आर्थिक असमानता भी बढ़ी है। यहां तक कि समृद्ध तबके को भी लॉन्ग टर्म कैपिटल गेंस टैक्स पर सरचार्ज घटाकर राहत दी गई है। निम्न-मध्यम आय वर्ग के लिए हाउसिंग सेक्टर में सौगात दी गई है।

कृषि क्षेत्र के लिए एमएसपी पर रेकॉर्ड खरीद की बात वित्त मंत्री ने की, लेकिन किसी और राहत का एलान नहीं किया। विनिवेश के लिए भी लक्ष्य 65 हजार करोड़ का ही रखा गया है, जो कम है, लेकिन इस मामले में सरकार के खराब रेकॉर्ड को देखते हुए ठीक लगता है। वित्त मंत्री ने इस मामले में यह जरूर कहा कि कुछ महीनों में एलआईसी का आईपीओ आएगा। इधर, रोजगार का मुद्दा भी राजनीतिक रंग ले रहा है। इस मामले में बजट को देखकर लगता है कि सरकार कैपिटल एक्सपेंडिचर से बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा होने की उम्मीद कर रही है। कुल मिलाकर, सरकार ने बजट के साथ एक रिस्क लिया है। देखना होगा कि यह कैसा रिटर्न देता है।

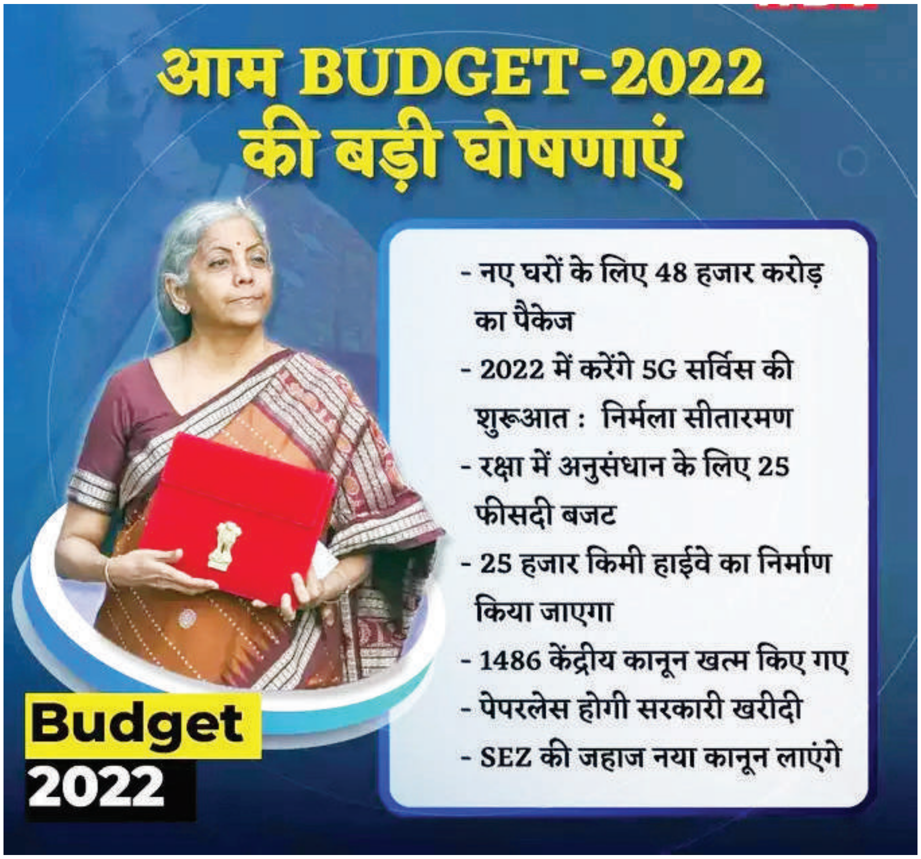

खामोश हो गए स्वर कोकिला लता मंगेशकर के सुर

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के निधन पर देश और उसके बाहर उमड़ा भावनाओं का ज्वार बताता है कि लोग उनसे कितना प्यार करते थे, और उनके प्रति कितना गहरा सम्मान रखते थे। वह सही मायने में इस उप-महाद्वीप की सबसे लोकप्रिय गायिका थीं। पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल आदि देशों के शासनाध्यक्षों व सरकारों के शोक संदेश बताते हैं कि उनकी लोकप्रियता ने कितनी दूरी तय की थी। लता जी का जीवन लंबा ही नहीं, बेहद सार्थक भी रहा, और अब जब वह इस नश्वर दुनिया से कूच कर गई हैं, तब उनके गीत लोगों को यह आश्वस्ति देते हैं कि अपनी सुरीली आवाज में वह हमेशा उनके साथ रहेंगी। लता मंगेशकर का जीवन न सिर्फ संगीत की दुनिया के लोगों के लिए, बल्कि हर उस संघर्षशील व्यक्ति के लिए प्रेरक है, जो अपनी सलाहियत और परिश्रम से देश-समाज में ऊंचा मुकाम पाने की हसरत रखता है। शुरुआती जिंदगी में लता जी को काफी संघर्ष करना पड़ा था। छोटी उम्र में ही पिता की मौत हो गई थी और उसके बाद घर की सबसे बड़ी संतान की जिम्मेदारी ने उन्हें फिल्मों में एक्टिंग की मजबूरी थमा दी। 1947 में वह भी छूट गया। उसके बाद उन्होंने पार्श्व गायकी में ही करियर बनाने का फैसला किया। लेकिन वहां भी पहली मुलाकात इनकार से हुई। फिल्मिस्तान के मालिक ने इस टिप्पणी के साथ उन्हें लौटा दिया था कि लता की आवाज बहुत बारीक है और उनकी अभिनेत्री के मुफीद नहीं है। पर लता जी ने हार नहीं मानी। अपना रियाज बढ़ाया, मास्टर गुलाम हैदर से बाकायदा पार्श्व गायकी की बारीकियां सीखीं और फिर 1949 में आई फिल्म महल के गीत ने उनके लिए अवसरों के दरवाजे खोल दिए। अनेक भाषाओं में हजारों गीतों को मधुर स्वर देने वाली लता मंगेशकर के कई तरानों ने तो वह हैसियत पा ली है कि उनके बिना कुछ आयोजन अधूरे-से लगते हैं। लोरी, भजन, गजल, हर विधा में वह बेजोड़ रहीं। देशभक्ति से जुड़ा कोई भी जलसा उनके गाए ऐ मेरे वतन के लोगों और वंदे मातरम् के बिना पूरा नहीं होता। वह क्रिकेट की कितनी बड़ी प्रशंसक थीं, इसका प्रमाण सन 1983 में मिला था, जब भारत ने पहला एकदिवसीय विश्व कप जीता था। लता जी ने विजेता खिलाड़ियों की आर्थिक मदद की खातिर एक संगीत कार्यक्रम के लिए हुलसकर हामी भरी थी। उस जलसे में उन्होंने व अभिनेता दिलीप कुमार ने भारतीय क्रिकेटरों की शान में जो कुछ कहा, वह किसी तरन्नुम से कम न था।

लता जी को मिलने वाले पुरस्कारों का आलम यह रहा कि एक वक्त उन्हें स्वयं अनुरोध करना पड़ा कि वह अब ट्रॉफी स्वीकार नहीं कर सकतीं, नए कलाकारों का हौसला बढ़ाया जाना चाहिए। भारतीय संगीत की सेवा और देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने में उनके अप्रतिम योगदान को तमाम सरकारों ने सराहा और वह कई विशिष्ट नागरिक अलंकरणों से नवाजी गईं। साल 2001 में उन्हें 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। लता मंगेशकर के सम्मान में राजकीय शोक की घोषणा साबित करती है कि वह भारत के लिए कितनी महत्वपूर्ण थीं। संगीत के जरिये दुनिया भर में भारतीयता का परचम बुलंद करने वाली इस महान कलाकार को हमारी श्रद्धांजलि!

स्वर-माधुर्य की साम्राज्ञी थीं लता मंगेशकर जिन्हें कभी भूलाया नहीं जा सकता

ल लता का जन्म गोमंतक मराठा समाज परिवार में, मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में हुआ था। उनके पिता रंगमंच कलाकार और गायक थे। इनके परिवार से भाई हृदयनाथ मंगेशकर और बहनों उषा मंगेशकर, मीना मंगेशकर और आशा भोंसले सभी ने संगीत को ही अपनी आजीविका के लिये चुना। हालांकि लता का जन्म इंदौर में हुआ था लेकिन उनकी परवरिश महाराष्ट्र मे हुई। वह बचपन से ही गायक बनना चाहती थीं। पिता की मृत्यु के बाद (जब लता सिर्फ़ तेरह साल की थीं), लता को पैसों की बहुत किल्लत झेलनी पड़ी और काफी संघर्ष करना पड़ा। उन्हें अभिनय बहुत पसंद नहीं था लेकिन पिता की असामयिक मृत्यु की कारण से पैसों के लिये उन्हें कुछ हिन्दी और मराठी फिल्मों में काम करना पड़ा।

अभिनय से शुरू हुआ था सफ़र

लता जी के बचपन में ही पिता के गुज़रने के बाद उन्हें छोटे-मोटे रोल में अभिनय कर परिवार के लिए पैसा कमाना पड़ रहा था। लेकिन लता को मेक-अप, एक्टिंग से कोई खास लगाव नहीं था क्योंकि उन्हें तो बस गायिका बनना था। इसी दौरान उनकी ज़िंदगी में संगीत निर्देशक उस्ताद गुलाम हैदर आए। उन्होंने लता की आवाज़ सुनी तो उन्हें लेकर निर्देशकों के पास गए। उस समय लता जी केवल 19 साल की थी और उनकी पतली आवाज़ नापसंद कर दी गई। लेकिन ग़ुलाम हैदर अपनी बात पर अड़े रहे और फ़िल्म मजबूर में लता से मुनव्वर सुल्ताना के लिए प्लेबैक करवाया। लता बताती हैं कि ग़ुलाम हैदर ने उनसे कहा था कि एक दिन तुम बहुत बड़ी कलाकार बनोगी और जो लोग तुम्हें नकार रहे हैं, वही लोग तुम्हारे पीछे भागेंगे।

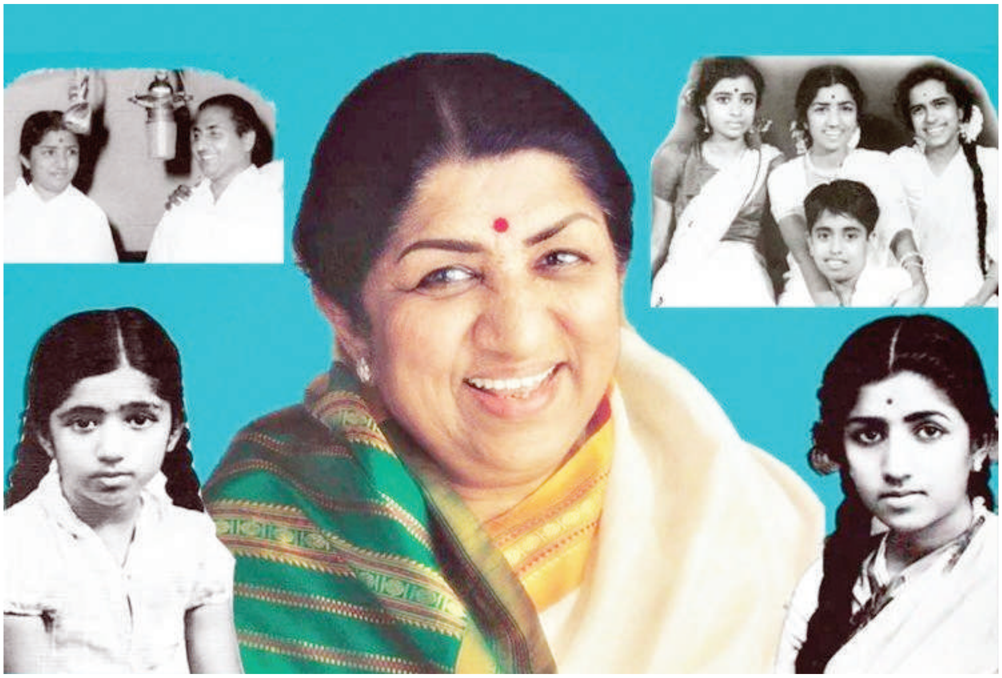

जीवन में बहुत संघर्ष कर आगे बढ़ी लता जी

लता जी ने अपने जीवन में बहुत से संघर्षों का सामना किया। कैरियर के शुरूआती दिनों में उन्हें बहुत से संगीतकारों ने पतली आवाज के कारण मना कर दिया लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। धीरे-धीरे अपनी प्रतिभा, मेहनत तथा धैर्य से आगे बढ़ी और संगीत की दुनिया में प्रसिद्ध प्राप्त की।

लता जी ने लगातार छः दशकों तक अपनी प्रतिभा से दुनिया भर में छायी रहीं। उन्होंने 20 भाषाओं में 30,000 गाने गाए। उनके गानों ने कभी भी सीमा पर खड़े जवानों को हिम्मत दी तो किसी की आंखों में आंसू भर दिए। अपनी बहन आशा भोसले के साथ मिलकर उन्होंने बहुत से गाने गाए। पिता दिनानाथ मंगेशकर शास्त्रीय गायक थे। उन्होने अपना पहला गाना मराठी फिल्म किती हसाल (कितना हसोगे?) (1942) में गाया था। लता मंगेशकर को सबसे बड़ा ब्रेक फिल्म महल से मिला। उनका गाया

आयेगा आने वाला सुपर डुपर हिट था। लता मंगेशकर ने 1980 के बाद से फ़िल्मो में गाना कम कर दिया और स्टेज शो पर अधिक ध्यान देने लगी। वे हमेशा नंगे पाँव गाना गाती थीं।

पांच साल की उम्र में पिता के साथ गाया था गाना

कम ही लोग जानते हैं कि पांच साल की उम्र में, गायिका ने मराठी में अपने पिता के संगीत नाटकों में एक अदाकारा के रूप में काम करना शुरू कर दिया था। मंगेशकर पर लिखी किताब में लेखक यतींद्र मिश्रा ने नाट्यमंच पर गायिका की शुरुआत का जिक्र किया है। उन्होंने 'लता- सुर गाथा' में लिखा है, ''पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर की नाटक कंपनी 'बलवंत संगीत मंडली' ने अर्जुन और सुभद्रा की कहानी पर आधारित नाटक 'सुभद्रा' का मंचन किया।

मराठी सिनेमा से लेकर हॉलीवुड तक का सफर

मंगेशकर ने 1942 में वसंत जोगलेकर की मराठी फिल्म 'किती हसाल' के लिए सदाशिवराव नेवरेकर द्वारा रचित एक मराठी गीत 'नाचू या गाड़े, खेलो सारी मणि हौस भारी' गाया था, लेकिन दुर्भाग्य से गीत को हटा दिया गया था। मास्टर विनायक ने मंगेशकर को एक मराठी फिल्म 'पहिली मंगला गौर'' में एक छोटी भूमिका की पेशकश की थी और उनसे 'नताली चैत्रची नवलई' गीत भी गवाया था। 1945 में जब मंगेशकर मुंबई चली आईं , तो उन्होंने संगीत की शिक्षा लेनी शुरू कर दी। मंगेशकर को 1945 में मास्टर विनायक की हिंदी की फिल्म ''बड़ी मां'' में अपनी छोटी बहन आशा भोसले के साथ एक छोटी भूमिका निभाने का अवसर मिला।

लता मंगेशकर क असली नाम हेमा था। उनका जन्म 28 सितंबर 1929 में हुआ था। उन्होंने अपने करियर में संगीत की दुनिया में वो मुकाम हासिल किया जहां तक न कोई पहुंच पाया है और शायद न ही पहुंचेगा। एक भारतीय पार्श्व गायिका और सामयिक संगीतकार लगा आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके गाने सदाबहार रहेंगे। उन्हें व्यापक रूप से भारत में सबसे महान और सबसे सम्मानित पार्श्व गायिकाओं में से एक माना जाता था। सात दशकों के करियर में भारतीय संगीत उद्योग में उनके योगदान ने उन्हें नाइटिंगेल ऑफ़ इंडिया और क्वीन ऑफ़ मेलोडी जैसी सम्मानजनक उपाधियाँ प्राप्त की हैं।

36 भाषाओं में भी आजाव दी

लता ने छत्तीस से अधिक भारतीय भाषाओं और कुछ विदेशी भाषाओं में गाने रिकॉर्ड किए हैं, हालांकि उन्होंने मुख्य रूप से हिंदी और मराठी में गाने गाये हैं। भारतीय सिनेमा की बेहतरीन गायिकाओं में शुमार लता ने 13 साल की उम्र में 1942 में अपने करियर की शुरूआत की थी। उन्होंने विभिन्न भारतीय भाषाओं में अब तक 30 हजार से अधिक गाने गाये हैं। सात दशक के अपने करियर में उन्होंने कई ऐसे गाने गाये हैं, जो आज भी लोगों के जेहन में हैं। इनमें ''अजीब दास्तां है ये' 'प्यार किया तो डरना

क्या' और 'नीला आसमां सो गया' शामिल है। लता को भारत की 'सुर साम्राज्ञी' के नाम से जाना जाता है।

लता मंगेशकर की उपलब्धियां

लता मंगेशकर अपने पूरे करियर में कई सम्मान मिले हैं। 1989 में, दादा साहब फाल्के पुरस्कार उन्हें भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया था। 2001 में, राष्ट्र में उनके योगदान के सम्मान में, उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया था और यह सम्मान प्राप्त करने के लिए एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी के बाद केवल दूसरी गायिका हैं। फ़्रांस ने उन्हें 2007 में अपने सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार, ऑफ़ द लीजन ऑफ़ ऑनर से सम्मानित किया। वह तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार, 15 बंगाल फिल्म पत्रकार संघ पुरस्कार, चार फिल्मफेयर सर्वश्रेष्ठ महिला पार्श्व पुरस्कार, दो फिल्मफेयर विशेष पुरस्कार, फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार और कई अन्य प्राप्तकर्ता हैं। 1974 में, वह लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में प्रदर्शन करने वाली पहली भारतीय बनीं।

1940 के दशक में प्रारंभिक कैरियर

1942 में, जब लता 13 वर्ष की थीं, उनके पिता की हृदय रोग से मृत्यु हो गई। नवयुग चित्रपट फिल्म कंपनी के मालिक और मंगेशकर परिवार के करीबी दोस्त मास्टर विनायक (विनायक दामोदर कर्नाटकी) ने उनकी देखभाल की। उन्होंने लता को एक गायक और अभिनेत्री के रूप में अपना करियर शुरू करने में मदद की। लता ने ÷नाचू या गाड़े, खेलो सारी मणि हौस भारी÷ गाना गाया था, जिसे सदाशिवराव नेवरेकर ने वसंत जोगलेकर की मराठी फिल्म किती हसाल (1942) के लिए संगीतबद्ध किया था, लेकिन गीत को अंतिम कट से हटा दिया गया था। विनायक ने उन्हें नवयुग चित्रपट की मराठी फिल्म पहिली मंगला-गौर (1942) में एक छोटी भूमिका दी, जिसमें उन्होंने नताली चैत्रची नवलई गाया, जिसे दादा चंदेकर ने संगीतबद्ध किया था। मराठी फिल्म गजभाऊ (1943) के लिए उनका पहला हिंदी गाना माता एक सपूत की दुनिया बदल दे तू था।

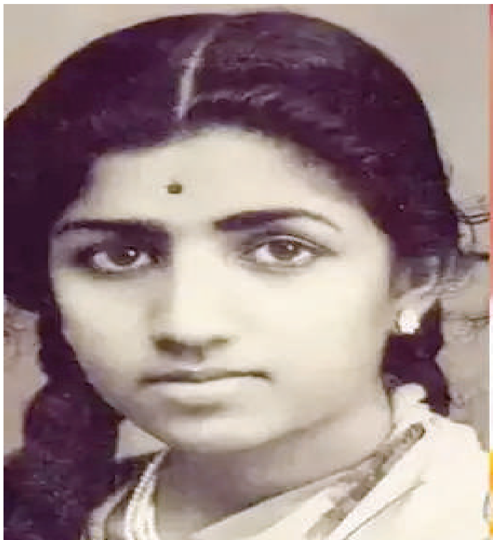

कौन बनेगा सत्ता का किंग

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव लंबे समय तक याद रहेंगे। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में चुनाव किसी लोक पर्व से कम नहीं रहे। धर्म-क्षेत्र विशेष के दायरे से परे चुनाव हर भारतीय की भागीदारी का उत्सव रहे हैं। इसलिए जन साधारण का उत्साह देखते ही बनता रहा है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव से पहले ग्रामीण क्षेत्रों में तो चुनाव प्रचार किसी दीर्घकालीन मेले जैसा ही नजर आता था, पर इस बार सब कुछ बदला-बदला सा है। सभाओं में उपस्थिति की संख्या सीमित है तो घर-घर जन संपर्क का सिलसिला अरसे बाद लौटा है।

मतगणना तो 10 मार्च को होगी, लेकिन उससे पहले भी यह बात दावे से कही जा सकती है कि 2017 के चुनाव परिणामों की पुनरावृत्ति इन सीटों पर हरगिज नहीं होने जा रही। यह उत्तर प्रदेश की चुनावी चिंता का ही परिणाम था कि मजबूत प्रधानमंत्री की छवि वाले नरेंद्र मोदी देश से क्षमा याचना सहित तीनों विवादास्पद कृषि कानून वापस लेने को बाध्य हुए, क्योंकि दिल्ली की दहलीज पर साल भर चले किसान आंदोलन में पंजाब और हरियाणा के बाद सबसे बड़ी और मुखर भागीदारी पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ही थी। साल भर बाद तीन कृषि कानूनों की वापसी से भी भाजपा को वांछित राजनीतिक लाभ नहीं मिला–इसका संकेत चुनाव प्रचार के बीच भी जयंत चौधरी पर डोरे डालने तथा मतदाताओं को बार-बार दंगों की याद दिलाने से मिल जाता है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ही 55 विधानसभा सीटों पर 14 फरवरी को मतदान हो गया है। कुल मिला कर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ये 103 सीटें शेष पांच चरणों के मतदान की दिशा भी तय कर सकती हैं। अगर किसान आंदोलन से जाट-मुस्लिम विभाजन की खाई पटी है और सवालिया निशानों वाले अतीत के बावजूद अखिलेश, जयंत के साथ मिलकर दो लड़कों की छवि से निकल कर विश्वसनीय विकल्प का विश्वास मतदाताओं में जगाने में सफल रहे हैं तो तय मानिए कि उत्तर प्रदेश की सत्ता का सूर्य इस बार पश्चिम से ही उदय होगा। बेशक अंतिम परिणाम 10 मार्च को ही पता चलेंगे, लेकिन अगर इन 103 सीटों पर भाजपा आधी ही रह गयी तो उसके लिए 403 सदस्यीय विधानसभा में बहुमत के लिए जरूरी 202 का आंकड़ा छू पाना आसान तो हरगिज नहीं होगा। हां, अंतिम तस्वीर उभरने में अहम भूमिका उस बसपा की रह

सकती है, जिसे फिलहाल प्रेक्षक ज्यादा महत्व नहीं दे रहे। दलित वर्ग में जाटव मतदाता अभी भी मायावती के साथ एकजुट हैं।

अगर बसपा परंपरागत रूप से मुस्लिम मतों में हिस्सा बंटाने में सफल रही तो उसका सीधा लाभ भाजपा को ही मिलेगा, जो जातिगत राजनीति की चुनौतियों को हिंदुत्व के नारे से नाकाम करने की जांची-परखी रणनीति पर चल रही है। संक्षिप्त में कहें तो अगर अखिलेश अपने गठबंधन सहयोगियों के साथ मिल कर भाजपा के कमंडल से मंडल के बड़े हिस्से को निकाल पाने में सफल रहे तो लखनऊ ही नहीं, दिल्ली की राह भी भाजपा के लिए मुश्किल हो सकती है।

वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले तक पंजाब की राजनीति मुख्यत- दो दलीय नहीं तो दो ध्रुवीय ही रही है। 2014 में चार लोकसभा सीटें जीत कर आम आदमी पार्टी पंजाब की तीसरी बड़ी राजनीतिक धारा बनी तो 2017 के विधानसभा चुनाव में सत्ता की दावेदार भी बन गयी, पर अंतिम क्षणों में बाजी पलटी और कांग्रेस सत्ता पर काबिज हो गयी। पिछले पांच सालों में पंजाब की राजनीति ने कई रंग बदले हैं। जिन कैप्टन अमरेंद्र सिंह को चेहरा बना कर पिछली बार कांग्रेस ने सत्ता हासिल की थी, उन्हें ही बेआबरू कर सत्ता से बेदखल कर दिया गया।

कैप्टन अमरेंद्र की विदाई में निर्णायक भूमिका भाजपाई से कांग्रेसी बने जिन नवजोत सिंह सिद्धू ने निभायी थी, उनके हिस्से सिर्फ प्रदेश अध्यक्ष पद ही आया और मुख्यमंत्री पद के लिए चरणजीत सिंह चन्नी की लॉटरी खुल गयी। सुनील जाखड़ या सुखजिंदर सिंह रंधावा को मुख्यमंत्री बनने से रोकने के लिए सिद्धू भी चन्नी के नाम पर मान गये। शायद उन्हें उम्मीद रही कि नये चुनाव के बाद तो वह ही मुख्यमंत्री पद के स्वाभाविक दावेदार होंगे, लेकिन सर्वाधिक प्रतिशत दलित मतदाताओं वाले पंजाब में कांग्रेस ने चन्नी को चुनावी ट्रंप कार्ड के रूप में इस्तेमाल करना चाहा तो सिद्धू के होश उड़ गये। अभी तक दबाव की राजनीति में सफल रहे सिद्धू ने इस बार मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करने के लिए कांग्रेस आलाकमान पर जो दबाव बनाया, वह उन पर ही भारी पड़ गया। चन्नी के मुख्यमंत्रित्व में चुनाव लड़ते हुए किसी अन्य को चेहरा घोषित करना आत्मघाती होगा–यह समझने में कांग्रेस आलाकमान को भी मुश्किल नहीं हुई। चेहरा घोषित किये बिना चुनाव में कांग्रेस को बहुमत मिलने पर तो शायद सिद्धू के लिए संभावनाओं के द्वार खुले भी रहते, पर उतावलेपन में गुरु खुद तो गुड़ ही रह गये, जबकि चन्नी शक्कर बन गये।

पांचों राज्यों में कौन मुख्यमंत्री कितना है धनवान ?

पांच राज्यों में चुनावी तापमान गर्म होता जा रहा है। यूपी में किसान आंदोलन, लखीमपुर कांड के बाद से ही सियासी पारा लगातार चढ़ा हुआ है। वहीं नेताओं के गर्मी और चर्बी वाले बयानों ने इसकी तपिश को और बढ़ाने का काम किया है। वहीं पंजाब में भी सत्ताधारी कांग्रेस में उठापटक के दौर के बीच सीएम पद को लेकर स्थिति बीते दिनों राहुल गांधी की तरफ से साफ कर दी गई। यूपी से लेकर पंजाब, उत्तराखंड, मणिपुर और गोवा की जनता के मन में क्या है। इसका पता तो 10 मार्च को वोटिंग के नतीजे के बाद ही पता चलेगा। लेकिन आज आपको बताते हैं कि जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं, उन पांच राज्यों के मुख्यमंत्री के पास कितनी संपत्ति है।

20 ग्राम की कुंडल, 10 ग्राम की रुद्राक्ष माला

पहली बार विधानसभा का चुनाव लड़ने जा रहे 49 वर्षीय योगी ने खुद को अपने गुरु महंत अवैद्यनाथ का पुत्र बताया है। योगी ने अपने नामांकन पत्र के साथ दाखिल हलफनामें में अपने पास एक करोड़ 54 लाख 94 हजार 54 रुपए की संपत्ति मौजूद होने की जानकारी दी है और यह उनकी चल संपत्ति है। हलफनामें के अचल संपत्ति वाले कॉलम में उन्होंने लागू नहीं लिखा है। योगी ने देनदारियों वाले कॉलम में लागू नहीं का उल्लेख किया है। मुख्यमंत्री ने हलफनामे में बताया है कि उनके पास 20 ग्राम वजन के कुंडल हैं जिनकी कीमत खरीद के समय 49000 रुपये थी। इसके अलावा उनके पास 10 ग्राम की रुद्राक्ष माला है जो सोने की जंजीर में बनी हुई है। इसकी कीमत खरीद के समय 20000 रुपये थी। इसके अलावा उनके पास 12000 रुपये का एक मोबाइल फोन है। योगी ने यह भी घोषित किया है कि उनके पास एक लाख रुपये का रिवाल्वर और 80 हजार रुपये की राइफल भी है। शैक्षिणक योग्यता वाले कॉलम में योगी ने खुद को स्नातक बताया है।

13 लाख की एफडी और 2 लाख की देनदारी

साल 2017 के विधानसभा चुनाव के दौरान पुष्कर सिंह धामी ने हलफनामा दायर किया था उसके मुताबित उनकी कुल संपत्ति 49,15,197 रुपए यानी करीब 49 लाख से अधिक की है। इसके साथ ही उनके ऊपर 2 लाख से अधिक की देनदारी भी है। चल संपत्ति की बात करें तो उनके पास 48 हजार से कुछ अधिक कैश के साथ साथ उनकी पत्नी के पास 38 हजार से कुछ अधिक कैश है। इसके अलावा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में 13 लाख से अधिक की राशि एफडी के तौर पर जमा है। एनएसए और पोस्टल सेविंग्स में करीब 1, 61, 336 रुपये, एलआईसी और दूसरी पॉलिसी में 15,09,953 रुपए जमा हैं, मोटर गाड़ी के तौर पर स्कूटरस सोना के नाम पर 3 लाख से कुछ अधिक के गहने हैं। इसके अलावा करीब 2 लाख 40 हजार की और संपत्ति है। अचल संपत्ति के तौर पर गांव नागला तराई में 1.878 एकड़ जमीन है, इने पास ना तो गैर कृषि भूमि, ना ही कॉमर्शियल या आवासीय भवन है।

फॉर्च्यूनर गाड़ी और 2.62 करोड़ रुपये की चल व अचल संपत्ति

पंजाब के मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी ने निर्वाचन आयोग को दिये अपने हलफनामें में 9.44 करोड़ रुपये की संपत्ति की घोषणा की है। हलफनामे में कहा गया है कि 58 वर्षीय चन्नी के पास एक एसयूवी टोयोटा फॉर्च्यूनर है जिसकी कीमत करीब 32.57 लाख रुपये है जबकि उनकी पत्नी के पास 45.99 लाख रुपये कीमत की दो गाड़ियां हैं और वह एक डॉक्टर हैं। पंजाब के पहले दलित मुख्यमंत्री के पास 2.62 करोड़ रुपये की चल व अचल संपत्ति है जबकि उनकी पत्नी के पास 6.82 करोड़ रुपये की चल व अचल संपत्ति है। हलफनामे के मुताबिक, चन्नी और उनकी पत्नी पर कार ऋण समेत कुल देनदारी 88.35 लाख रुपये है।

39 लाख रुपये की अचल संपत्ति

मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बिरेन सिंह की कुल चल संपत्ति 69,46,392.98 रुपये है। इसमें हाथ में 1,95,000 रुपये नकद और तीन बैंक खातों में 58,26,872 रुपये की शेष राशि शामिल है। उनके पास 6 लाख रुपये से अधिक की महिंद्रा बोलेरो और एक.32 वाल्टर पिस्टल है। बीरेन सिंह ने 39 लाख रुपये की अचल संपत्ति घोषित की है, जिसमें से 9 लाख रुपये की जमीन स्व-अर्जित है जबकि विरासत में मिली संपत्ति 30 लाख रुपये की है। सिंह पर 1,44,300 रुपये देनदारी (ऋण) के रूप में हैं।

प्रमोद सावंत की इतनी है कुल संपत्ति

प्रमोद सावंत 2017 में उन्होंने गोवा के चुनावों में संकुएलिम विधानसभा क्षेत्र से विधायक चुने गए थे। उन्होंने चुनाव में इलेक्शन कमीशन को एफिडेविट दिया था। उसमें उन्होंने अपनी कुल संपत्ति 2,78,98,739 रुपए बताई थी। उन्होंने उस अपनी हाथों में कैश 30,000 रुपए दिखाया था। जबकि अपनी पत्नी सुलक्षणा सावंत के हाथों में 15 रुपए दिखाया था।

पांच साल का रिपोर्ट कार्ड मुख्यमंत्री योगी ने गिनाईं उपलब्धियां, बोले-

उत्तर प्रदेश में सुशासन का मॉडल दिया

यूपी विधानसभा चुनाव में मतदान से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनता के सामने अपने पांच वर्षों का हिसाब-किताब रखा है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि डबल इंजन की सरकार ने बीते पांच साल में उत्तर प्रदेश में सुशासन का मॉडल दिया है। पांच में से दो साल कोरोना की चुनौतियां भी आईं लेकिन इसे भी सेवा का अवसर मानते हुए जीवन और जीविका बचाने का काम हुआ।

यूपी ने इन पांच सालों में देश के छठवीं नम्बर की अर्थव्यवस्था से आज दूसरे नम्बर की यात्रा तय की है, अब सुरक्षा से समृद्धि की इस यात्रा को अनवरत जारी रखते हुए अगले पांच साल में उत्तर प्रदेश को सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला राज्य बनाने के साथ-साथ देश में विकास के हर मानक पर नम्बर एक बनाने के लक्ष्य के साथ काम होगा। लखनऊ स्थित पार्टी मुख्यालय में मुख्यमंत्री ने पत्रकारों के सामने पूरे पांच साल का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत क़िया। इस खास मौके पर भाजपा ने नया गीत ÷यूपी में योगी हैं उपयोगी÷ भी लांच किया। वहीं, मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार की जवाबदेही जनता के प्रति है और इसी उद्देश्य से पहले 100 दिन, 06 महीने, 01 वर्ष, 02 वर्ष, 03 वर्ष, 04 वर्ष और साढ़े 04 वर्ष के कामकाज का ब्योरा दिया था। अब जबकि पांच साल पूरे होकर चुनाव होने जा रहे हैं तो एक बार फिर पूरा हिसाब-किताब रखना जरूरी है।

पत्रकारों से संवाद करते हुए सीएम ने एक-एक कर अपनी सरकार की योजनाओं से बदले यूपी के परिदृश्य की जानकारी दी तो तथ्य-तर्क और आंकड़ों के साथ समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के कार्यकाल की असलियत भी रखी। उन्होंने कहा कि पांच साल पहले 36,000 करोड़ रुपये से 86 लाख किसानों की कर्जमाफी से शुरू हुई यह यात्रा माफियाओं-अपराधियों के खात्मे से होते हुए हर गरीब के सिर पर अपने घर की छत का सुकून देने वाली है।

पांच साल पहले तक देश जहां नौकरियों में भाई-भतीजावाद और जातिवाद हावी था, आज पांच साल में 05 लाख युवाओं को बिना भेदभाव, भ्रष्टाचार मुक्त सिस्टम से सरकारी नौकरी मिली है। कभी किसानों से फसल खरीदी में आढ़तियों और बिचौलियों का कब्जा था, 38 जिलों में सैकड़ों बच्चे हर साल इंसेफेलाइटिस से मरते थे, वहां हर जिले में मेडिकल कॉलेज बन रहे हैं। रिकॉर्ड फसल खरीदी हुई तो हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में अभूतपूर्व काम हुआ। उन्होंने कहा है कि 2017 के चुनाव में जनता के बीच जो संकल्प लिए थे, आज 2022 में उसे लक्ष्य से कहीं अधिक पूर्ति कर एक बार फिर जनता के सामने है। भाजपा जो कहती है वो करती है। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि बसपा सरकार में 364 दंगे प्रदेश में हुए, जबकि सपा सरकार में 2012 से 2017 के बीच 700 से ज्यादा बड़े दंगे हुए। वहीं बीते 5 साल में कोई दंगा या आतंकी घटना नहीं हुई। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश पहला राज्य है, जहां पिछले 05 साल में कोई दंगा नहीं हुआ और यह हमारी सरकार में हुआ है।

उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश में एंटी रोमियो स्क्वाड सफलतापूर्वक काम कर रही हैं। इसी तरह, सपा शासन काल में दंगों और अपराध के सत्ता पोषित होने का आरोप लगाते हुए उन्होंने एनसीआरबी के ताजा आंकड़ों के हवाले से यूपी के बदले हालात की स्थिति बयान की उन्होंने बताया कि एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में डकैती में 58 फीसदी, हत्या के मामलों में 23 फीसदी, फिरौती में 53 फीसदी और बलात्कार के मामलों में 45 फीसदी की कमी आई है। यही नहीं, बीते 05 साल में 694 पेशेवर अपराधियों पर राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत कार्रवाई हुई। उन्होंने कहा, %माफिया जो बेटी-बहनों की सुरक्षा के लिए खतरे थे, उनकी 2046 करोड़ की प्रॉपर्टी को ध्वस्त किया गया। सीएम ने बहुचर्चित धर्मांतरण विरोधी क़ानून और सार्वजनिक संपत्ति के तोड़फोड़ करने वालों के खिलाफ बने सख्त कानून का भी जिक्र किया। किसानों की खुशहाली को प्राथमिकता बताते हुए सीएम योगी ने कहा कि बसपा की सरकार के दौरान 240 लाख मीट्रिक टन और समाजवादी पार्टी के दौरान 217 लाख मीट्रिक टन अनाज खरीदा गया था। खास बात यह कि यह खरीद भी आढ़तियों के माध्यम से होती थी।

यूपी में भाजपा दोहराने जा रही इतिहासः अमित शाह

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहली बार विधानसभा चुनाव लड़ रहे भाजपा के फायरब्रांड नेता ने गोरखपुर सीट से पर्चा भरा। भाजपा ने इस मौके पर बड़ा शक्ति प्रदर्शन किया। नामांकन से पहले योगी आदित्यनाथ ने

गोरक्षनाथ मंदिर में रुद्राभिषेक और हवन-पूजन किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत तमाम बड़े नेता गोरखपुर पहुंचे। भारी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे। योगी आदित्यनाथ के नामांकन से पहले अमित शाह ने कहा, भाजपा उत्तर प्रदेश में इतिहास दोहराने जा रही है। 2014, 2017 और 2019 में प्रचंड जीत वाले यूपी में हम 300 से अधिक सीट जीतेंगे। यह गोरखनाथ, बुद्ध, महावीर और कबीर की धरती है। 2013 में जब यूपी आया तो लोगों ने कहा था डबल डिजिट में नहीं पहुंचेंगे। यह हाल विपक्ष का हुआ। योगी ने कानून का शासन स्थापित किया। माफिया जेल में हैं। अपराधी जमानत तुड़वाकर जेल जा रहे हैं। योगी आदित्यनाथ ने जनसभा को संबोधित करते हुए कहा, 5 साल में डबल इंजन की सरकार इसलिये काम कर पाई क्योंकि पीएम मोदी और शाह का मार्गदर्शन था। समाज को योजनाओं का भेदभाव रहित लाभ दिया। हम अग्निपरीक्षा के लिए उत्तर रहे हैं। हमारा एक-एक कार्यकर्ता क्षेत्र में जाए और विजयी बनाएं।

महायुद्ध की आहट!

यूक्रेन और रूस के बीच तल्खी

यूक्रेन को लेकर रूस और पश्चिम के बीच खींचतान जारी है। यह शीत युद्ध के दौर के भू-राजनीतिक तनाव की याद दिला रहा है। हालांकि, बड़ी ताकतें जहां यूक्रेन के भविष्य को लेकर उलझी हुई हैं, वहीं यूक्रेनवासियों की आवाज बिल्कुल किनारे कर दी गई है। फिलहाल यूक्रेन जंग का एक ऐसा मैदान बन गया है, जो आने वाले दिनों में यूरोप के सुरक्षात्मक ढांचे को आकार दे सकता है। इसीलिए, पश्चिम और रूस के बीच तनाव महज यूक्रेन के भविष्य को लेकर नहीं है, बल्कि इससे निहितार्थ कहीं अधिक गहरे हैं, क्योंकि इससे शीत युद्ध के बाद की पूरी भू-राजनीतिक संरचना ढहती दिख रही है।

वाशिंगटन ने दावा किया है कि यूक्रेन पर हमला करने के लिए जरूरी सैन्य-संसाधन का 70 फीसदी साजो-सामान रूस ने सीमा पर तैनात कर दिया है। उसने यह भी चेतावनी दी है कि रूसी हमले की सूरत में 50 हजार से अधिक नागरिक और 25 हजार के करीब यूक्रेनी सैनिक मारे जा सकते हैं। रूस ने इस दावे को 'उन्माद और खौफ फैलाने वाला' बताया और इसे पूरी तरह से खारिज कर दिया है। यूक्रेन भी सीमा पर रूसी सैन्य ढांचे के निर्माण को तवज्जो नहीं दे रहा। राष्ट्रपति वलोडिमिर जेलेंस्की ने अपने देशवासियों से कहा है, 'वे तबाही की आशंकाओं पर विश्वास न करें। यूक्रेन किसी भी तरह के घटनाक्रम के लिए तैयार है। आज यूक्रेन के पास एक मजबूत सेना और अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय समर्थन है। यूक्रेनवासी भी अपने देश पर पूरा विश्वास करते हैं। दुश्मन को हमसे डरना चाहिए, न कि हमें उससे।' हालांकि, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और जर्मन चांसलर ओलाफ शोल्ज की मदद से परदे के पीछे से कूटनीतिक प्रयास भी जारी हैं। मैक्रों जहां मॉस्को और कीव का दौरा कर चुके हैं, वहीं शोल्ज अगले हफ्ते दोनों देशों की यात्रा करेंगे। यूरोप में यही मान्यता है कि यूक्रेन-रूस जंग से बचा जा सकता है। मैक्रों ने यूरोपीय देशों की सुरक्षा और रूस को

संतुष्ट करने के लिए 'नए संतुलन' का आह्वान किया है। ऐसा करते हुए उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि रूस का अपनी सुरक्षा के लिए चिंतित होना लाजिमी है। फ्रांस पिछले कुछ समय से रूस के साथ यूरोप के संबंधों को नए सिरे से गढ़ने की वकालत कर रहा है और यूरोपीय संघ से कह रहा है कि वह वाशिंगटन के चश्मे से मॉस्को को न देखे। मगर नाटो की मुख्यत- अमेरिका पर निर्भरता और आगामी रुख को लेकर यूरोपीय संघ के अंदरूनी मतभेदों के कारण ब्रसेल्स (यूरोपीय संघ का मुख्यालय) सिर्फ कूटनीतिक तरीकों से ही जमीनी हालात को प्रभावित कर सकता है। दूसरी ओर, चीन के साथ रूस के रिश्ते लगातार मजबूत हो रहे हैं, और दोनों देश पश्चिम से मुकाबला करने के लिए अपनी साझेदारी को आगे बढ़ा रहे हैं।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन शीतकालीन ओलंपिक में भाग लेने के लिए बीजिंग भी पहुंचे, और पिछले दो वर्षों में पहली बार किसी ताकतवर देश के राष्ट्राध्यक्ष के साथ चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की निजी मुलाकात हुई। अपनी यात्रा के दौरान, दोनों नेताओं ने एक साझा बयान भी जारी किया, जिसमें उनके द्विपक्षीय संबंधों का विस्तार से वर्णन था। बयान में कहा गया, '(रूस और चीन) की आपसी दोस्ती की कोई सीमा नहीं है। सहयोग का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जो 'वर्जित' हो।' साझा बयान में नाटो को घेरा गया कि वह शीत युद्ध की सोच को आगे बढ़ा रहा है, और 'ऑक्स' (ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन और अमेरिका का समूह) पर भी चिंता जताई गई। इसके अलावा, मॉस्को ने बीजिंग की 'एक चीन नीति' का भी समर्थन किया, क्योंकि उसने 'ताइवान की आजादी के किसी भी रूप का विरोध' किया। आर्थिक रिश्ते को बढ़ाने के साथ-साथ रूस और चीन ने गैस सौदे की भी जानकारी बयान में दी, जिसके तहत चीन को अब गैजप्रोम हर साल 38 अरब क्यूबिक मीटर के बजाय 48 अरब क्यूबिक मीटर गैस देगी। हालांकि, इसमें यूक्रेन का कोई जिक्र नहीं था, लेकिन दोनों देशों का इरादा स्पष्ट था- रूस और चीन बाहरी ताकतों के उन प्रयासों के खिलाफ हैं, जिसके जरिये वे साझा निकटवर्ती इलाकों की सुरक्षा और स्थिरता को कमजोर करने की जुगत में हैं। इतना ही नहीं, संप्रभु राष्ट्रों में बाहरी ताकतों की किसी भी तरह की दखलंदाजी के भी वे खिलाफ हैं, सत्ता विरोधी आंदोलनों का वे विरोध करते हैं और कई क्षेत्रों में वे आपसी सहयोग बढ़ाएंगे।

कोविड विदा नहीं होगा, उसका विकराल रूप चला जाएगा

आपदा कैसी भी हो, उसके अंत की एक तारीख होती है। कुछ वैज्ञानिकों ने उस तारीख की घोषणा कर दी है, जब एक महामारी के रूप में कोविड इस दुनिया से विदा हो जाएगा। कोविड वायरस विदा नहीं होगा, लेकिन उसका वह रूप चला जाएगा, जो उसे महामारी बनाता है। फिर वह एक ऐसे मर्ज में बदल जाएगा, जो एक साथ बड़े पैमाने पर लोगों को अपना शिकार नहीं बनाएगा, लेकिन गाहे-बगाहे लोगों को होता रहेगा, ठीक वैसे ही, जैसे सर्दी-जुकाम, वायरल, टायफाइड और निमोनिया वगैरह होते हैं।

वैसे, जिस समय कोविड संक्रमण फैलना शुरू हुआ था, उसी समय यह साफ हो गया था कि यह वायरस सिर्फ फेफड़े पर असर नहीं डाल रहा। उस दौरान बहुत सारे लोगों की जान दिल, किडनी या गुर्दे वगैरह के फेल हो जाने के कारण भी गई। तब बहुत से लोग इस बहस में उलझे हुए थे कि इस तरह के संबद्ध रोगों से होने वाली मौतों को महामारी से हुई मौत माना जाए या नहीं। इस दौरान जो लोग ठीक होकर अपने-अपने घर वापस चले गए, वे खुद को खुशनसीब समझ रहे थे और उन पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। निस्संदेह, खुशनसीब तो वे थे, लेकिन उन्हें कोविड महारोग बाद में भी परेशान करता रहेगा, यह किसी ने नहीं सोचा था। इस महामारी ने कई-कई मोर्चों पर समाज की परीक्षा ली है, लेकिन इसने सबसे ज्यादा परीक्षा चिकित्सा विज्ञान की ली है। लगता है, अभी भी यह परीक्षा खत्म नहीं हुई है। कोरोना महामारी ने समाज और अर्थव्यवस्था को बहुत पीछे धकेला है। इस दौरान सिर्फ चिकित्सा विज्ञान ही है, जो लगातार दम साधकर लगातार आगे बढ़ा है, लेकिन अभी उसे मीलों चलना है। हमें अभी नहीं पता कि कोविड अगर महामारी के बजाय एक आमफहम रोग बन गया, तो हमारे शरीर के अन्य अंगों पर उसका क्या असर होगा? कोरोना वायरस के बारे में अभी बहुत कुछ जानना शेष है।

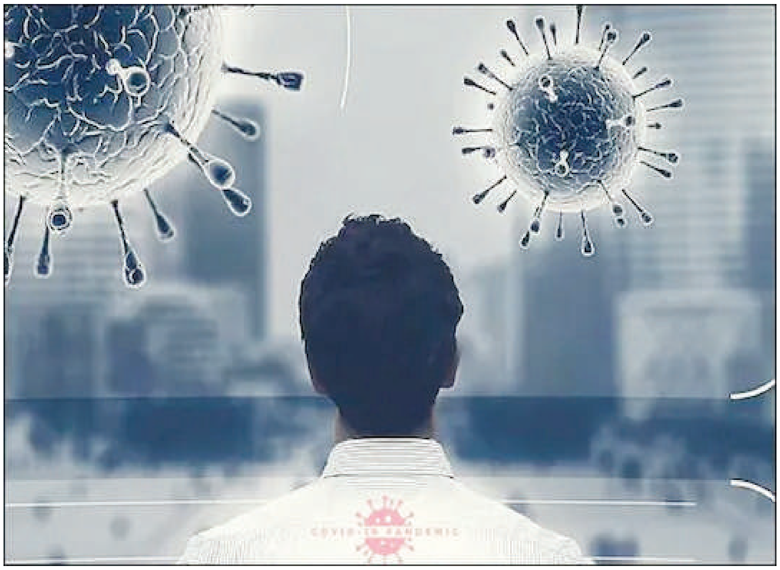

ऐसा हुआ, तो हमें पूरी राहत भले न मिले, लेकिन आंशिक रूप से जरूर मिल जाएगी। उम्मीद की जानी चाहिए कि जल्द ही इसकी ज्यादा कारगर वैक्सीन तैयार हो जाए और लोगों को ज्यादा भरोसेमंद सुरक्षा-चक्र मिले। लेकिन कोविड को लेकर जो अन्य खबरें आ रही हैं, वे कहीं ज्यादा परेशान करने वाली हैं। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल में प्रकाशित एक हालिया शोध के अनुसार, जिन बुजुर्गों को कोविड हुआ था, उन्हें ठीक होने के बाद भी ऐसी कई नई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, जो पहले कभी नहीं थीं। इस शोध में 65 साल से ऊपर के उन 1,33,366 अमेरिकी लोगों का अध्ययन किया गया है, जिन्हें 1 अप्रैल, 2020 से पहले कोविड संक्रमण हुआ था।

शोध में पाया गया कि ऐसी परेशानियां हर तीन में से एक बुजुर्ग में पाई गई हैं। इनमें ऐसे लोग भी हैं, जिन्हें स्थायी तौर पर उच्च-रक्तचाप की बीमारी मिल गई है। ऐसे लोग भी हैं, जिनके दिल, किडनी और गुर्दे के कामकाज पर असर पड़ा है। कई लोगों के हृदय की समस्या संक्रमण के एक साल बाद ज्यादा घातक हो गई है। कुछ लोगों को सांस लेने की समस्या हो रही है। मस्तिष्क पर भी असर पड़ने के मामले मिले हैं। यह पाया गया कि कोविड ठीक होने के एक साल बाद 32 प्रतिशत लोग ऐसी समस्या के लिए या तो डॉक्टर से मिले हैं या फिर अस्पताल में भर्ती हुए हैं।

कोरोना : अनलॉक होता देश

लगातार कोरोना संक्रमण के प्रसार में गिरावट के आंकड़े सामने आ रहे हैं। एक माह बाद एक लाख से कम केस सामने आये। संक्रमण दर में भी गिरावट है। सुखद यह है कि बच्चे स्कूल जाते दिखे। स्कूल-कॉलेजों में रौनक लौटने लगी। अधिकतर राज्यों में कक्षा नौ से ऊपर के स्कूल खुलने लगे हैं। कुछ राज्यों में छोटे बच्चों के भी स्कूल खुले हैं। सही बात है कि जब सब कुछ खुलने लगा है तो स्कूल क्यों बंद रहें। पिछले दो सालों में बच्चों ने महामारी के भय, मानसिक तनाव तथा घुटन का वातावरण जीया है। कहने को बच्चों के लिये ऑनलाइन पढ़ाई का विकल्प मौजूद था, मगर कितने प्रतिशत बच्चों को यह लाभ मिला?

अंग्रेजीदां स्कूल में तो यह कोशिश कुछ सीमा तक कामयाब रही, लेकिन सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं की मजबूरी किसी से छिपी नहीं है। बहरहाल, यह निष्कर्ष सामने आया कि ऑनलाइन पढ़ाई परंपरागत पढ़ाई का अंतिम विकल्प नहीं है क्योंकि इसकी अपनी सीमाएं हैं। इसमें बच्चों का स्वाभाविक मानसिक विकास संभव नहीं है। संगी-साथियों के मिलने-जुलने के बिना उनका सामाजीकरण अधूरा रह जाता है। स्वाभाविक मानवीय संवेदनाएं विकसित नहीं होतीं। महामारी विशेषज्ञों ने भी कहा कि बच्चों में स्वाभाविक, मजबूत रोग प्रतिरोधक क्षमता उनका बचाव करती है।

उन्हें संक्रमण का खतरा कम था लेकिन यदि स्कूल खुलते तो घर के बड़े-बुजुर्गों के लिये वे संक्रमण के वाहक बन सकते थे। सुखद है कि देश के पांच करोड़ किशोरों को पहला टीका लग चुका है। अच्छी बात है कि विद्यार्थी अब बोर्ड की परीक्षाओं की तैयारी कर पायेंगे। बहरहाल, जब देश में धूम-धड़ाके से चुनाव के सारे प्रपंच हो रहे हैं तो स्कूल ही क्यों बंद रहें? बशर्ते सुरक्षित दूरी, थर्मल स्क्रीनिंग से जांच और सैनिटाइजेशन की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। इसे कुछ सालों के लिये जीवन के लिये न्यू नॉर्मल मान लें। दरअसल, महामारी विशेषज्ञ भी आश्वस्त नहीं हैं कि फिर कोई नया वेरिएंट नहीं आयेगा। बहरहाल, देश खुलने लगा है। सामान्य

गतिविधियां चलने लगी हैं। बाजार खुल गये हैं। चुनाव आयोग भी राजनीतिक दलों को कुछ छूट देने लगा है। केंद्र सरकार ने सौ फीसदी उपस्थिति के साथ ऑफिस चलाने को कह दिया। इसके बावजूद कोरोना के बचाव के तीनों मंत्रों मास्क, शारीरिक दूरी और सैनिटाइजेशन को हमें नहीं भूलना चाहिए।

याद रहे कि देश में कोरोना संक्रमण से मरने वालों का सरकारी आंकड़ा पांच लाख पार कर चुका है। यह बहस का विषय हो सकता है कि यह आंकड़ा वास्तविकता के कितने करीब है। याद रहे कि पहली लहर के बाद लापरवाही की हमने बड़ी कीमत चुकाई थी और अप्रैल से जुलाई के बीच दो महीनों में दो लाख लोगों ने जान गंवायी थी। इस सबक को हम अच्छी तरह याद रखें। आने वाले समय में यदि ये सबक स्कूलों के पाठ्यक्रमों का हिस्सा बनें तो आने वाली पीढ़ियों को किसी भी संक्रामक रोग से बचाव में मदद मिल सकेगी। निष्कर्ष यही है कि किसी भी तरह की लापरवाही हमें बड़े जोखिम में ला सकती है। प्रत्येक दिन के संक्रमण के आंकड़ों में गिरावट, इलाज कराने वाले मरीजों की संख्या में कमी तथा संक्रमण दर में गिरावट का मतलब यह कदापि नहीं है कि महामारी चली गई है। यह वायरस हमारे जीवन का हिस्सा बना रहेगा और कम रोग प्रतिरोधक क्षमता वाले लोगों को परेशान करता ही रहेगा। वहीं ये संकट बताता है कि हमें अपने खानपान व जीवन शैली में सुधार की जरूरत है। ऐसे में बड़ी लापरवाही नई लहर की पृष्ठभूमि भी तैयार करती है। यद्यपि पूरा देश चाहता है कि हम जल्दी सामान्य स्थिति की ओर लौटें लेकिन इसके लिये हमारे जिम्मेदार व्यवहार की बड़ी भूमिका होगी। साथ ही टीकाकरण अभियान को सार्थक परिणति देना भी उतना ही जरूरी है। यह सर्वविदित है कि सफल टीकाकरण के चलते हम तीसरी लहर को घातक बनाने से रोक पाये हैं। पूरे भारत में एक अरब सत्तर करोड़ से अधिक डोज लगाने के बाद यह सुखद ही है कि तीसरी लहर देश में उतार पर है। डब्ल्यूएचओ भी महामारी में राहत की उम्मीद जता रहा है।

कोरोना महामारी का सबसे ज्यादा शिक्षा पर पड़ा असर

कोरोना महामारी से शिक्षा सर्वाधिक प्रभावित एवं निस्तेज हुई है। स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए जरूरी अवसर, साधन या पहुंच नहीं थी। (यूनिसेफ) की एक रिपोर्ट में सामने आयी है। रिपोर्ट कहती है कि इसका मतलब है कि उन्होंने पढ़ने के लिए किताबें, वर्कशीट, फोन या वीडियो कॉल, व्हाट्सऐप, यूट्यूब, वीडियो कक्षाएं आदि का इस्तेमाल नहीं किया है। बहरहाल, सर्वेक्षण में पाया गया है कि स्कूलों के बंद होने के बाद अधिकतर छात्रों का अपने अध्यापकों के साथ बहुत कम संपर्क रहा। रिपोर्ट में कहा गया है, 5-13 वर्ष की आयु के कम से कम 42 प्रतिशत छात्र और 14-18 वर्ष की आयु के 29 प्रतिशत छात्र अपने शिक्षकों के संपर्क में नहीं रहे। कोरोना काल के दौरान खाली रहने से बच्चों के दिमाग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यूनिसेफ की रिपोर्ट के अनुसार भारत में 14-18 वर्ष के आयु वर्ग के कम से कम 80 प्रतिशत छात्रों ने कोविड-19 महामारी के दौरान सीखने के स्तर में कमी आयी है। बार-बार स्कूल बंद होने से बच्चों के लिए सीखने के अवसरों में चिंताजनक असमानताएं पैदा हुई हैं।

कोरोना महामारी के कारण बच्चों के शिक्षा पर भी गहरा असर पड़ा है। लंबे समय तक स्कूल बंद होने से बच्चों के सीखने के स्तर में भारी गिरावट देखने को मिली है। हालांकि, अब देश के शिक्षण संस्थानों ने सामान्य हालात की ओर कदम बढ़ा दिये हैं।

सोमवार को देश के बहुत से प्रदेशों में स्कूल-कॉलेज खुल गए, उनके परिसरों में पुरानी रौनक लौट आई। लगभग दो वर्षों बाद कंधों पर बस्ते लादे स्कूल जाते छोटे-छोटे बच्चों को देखना संभव हुआ है, जो सुखद अहसास का सबब बन रहा है। देश के ज्यादातर प्रदेशों में कक्षा नौ से ऊपर की सभी कक्षाओं की पढ़ाई सोमवार से शुरू हो गई है, जबकि एकाध राज्य में इसका उल्टा तरीका अपनाया गया है। वहां छोटे बच्चों के स्कूल पहले खोले गए हैं। यह अच्छी बात है कि देश के तकरीबन सभी राज्य एक साथ महामारी के दौर में ठहरी हुई शिक्षा-व्यवस्था को सामान्य बनाने में जुट गए हैं। इस समय जब नए संक्रमितों की दैनिक संख्या और संक्रमण की दर, दोनों नीचे आ रहे हैं, तब इस तरह का फैसला स्वाभाविक ही था, शिक्षा पर पसरे सन्नाटे को दूर करने के लिये यह नितांत अपेक्षित भी हो गया था।

महामारी के खतरों को देखते हुए स्कूलों को खोला जाए या नहीं, इसे लेकर पिछले दो साल में पूरी दुनिया में खासी जद्दोजहद होती रही है। कोरोना वायरस से हरेक व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा के प्रयास में बच्चों की शिक्षा का हरण कर लिया गया। बच्चों के हितों के बलिदान की भरपाई के लिए, सरकारों को अंततः इस चुनौती के लिए कमर कसना जरूरी हो गया और सभी बच्चों के लिए तत्काल स्कूलें खोलना जरूरी हो गया। अमेरिका आदि अनेक देशों में तो महामारी की पहली लहर के बाद ही स्कूल खोलने की कोशिशें शुरू हो गई

थीं। लेकिन तब परिणाम अच्छे नहीं रहे थे। तभी यह खतरा भी समझ में आया था कि कोरोना वायरस भले बच्चों को शिकार नहीं बनाता, लेकिन कुछ बच्चे अगर इस वायरस को लेकर घर पहुंचते हैं, तो वयस्कों और बुजुर्गों को इससे खतरा हो सकता है। इस दो साल में पूरी दुनिया ने स्कूलों के गेट बंद कर ऑनलाइन शिक्षा की संभावनाएं और सीमाएं भी समझ ली हैं। यह भी समझ में आ गया है कि इस माध्यम से बच्चों को शिक्षित तो किया जा सकता है, लेकिन उनका पूरा मानसिक विकास नहीं हो सकता।

महामारी के दौर भारत में तो स्कूलों में सभी छात्रों को समान रूप से दूरस्थ शिक्षा देने की पूरी तरह तैयारी भी नहीं थी। इसका कारण सरकारों की अपनी शिक्षा प्रणाली में भेदभाव और असमानताओं को दूर करने, या घरों में सस्ती, सुचारू बिजली जैसी बुनियादी सरकारी सेवाएं सुनिश्चित करने या सस्ती इंटरनेट सुविधा उपलब्ध कराने में उनकी नाकामयाबी है। कम आय वाले परिवारों के बच्चों के ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित होने के अधिक आसार थे क्योंकि वे पर्याप्त डिवाइस या इंटरनेट नहीं खरीद सकते थे। ऐतिहासिक रूप से कम संसाधनों वाले स्कूलों ने, जिनके छात्र पहले से ही शिक्षा संबंधी बड़ी बाधाओं का सामना कर रहे थे, ने डिजिटल सीमाबद्धताओं के समक्ष अपने छात्रों को पढ़ाने में विशेष कठिनाइयों का सामना किया।

भारत की शिक्षा प्रणाली अक्सर छात्रों और शिक्षकों के लिए डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रही है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि छात्र और शिक्षक इन तकनीकों का सुरक्षित और आत्मविश्वास के साथ उपयोग कर सकें।

लॉकडाउन के दौरान ऑनलाइन क्लास का ठीक से न चल पाना, इंटरनेट और मोबाइल जैसी सुविधाओं का न होना और पढ़ाई के प्रति अरूचि ने बच्चों को शिक्षा के लिहाज से पीछे धकेल दिया है। हाल यह है कि अब उन्हें भाषा और गणित में सबसे ज्यादा दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। लॉकडाउन की वजह से बच्चों की शिक्षा से जुड़े नुकसान का आंकलन करने के लिए अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा की गयी एक फील्ड स्टडी में पाया गया कि कोरोना के बीच स्कूल बंद होने से बच्चों ने पिछली कक्षाओं में जो सीखा था वो उसे भूलने लगे हैं। इसकी वजह से वर्तमान सत्र की कक्षाओं में उन्हें सीखने में दिक्कत आ रही है। स्कूल खुलने के साथ एक अहम बात जो इनमें देखने को मिल रही है कि किताबों को पढ़कर अर्थ समझने में भी बच्चों को दिक्कत आ रही है। पढ़ाई में गैप आने की वजह से उनमें अभी वह तेजी देखने को नहीं मिल रही। इसलिए बचे हुए सत्र में छात्र और शिक्षक दोनों को कम समय में दोगुनी मेहनत करनी होगी।

परिवारवाद-वंशवाद पर बरसे पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अगुआई में बीजेपी ने पिछले कुछ दिनों से वंशवाद-परिवारवाद पर नए सिरे से हमला शुरू कर दिया है। न सिर्फ चुनाव में बल्कि हर मंच से इस मुद्दे को सियासत के केंद्र में लाने की कोशिश की जा रही है। एक दिन पहले जब प्रधानमंत्री ने एक न्यूज एजेंसी को इंटरव्यू दिया, तो सबसे तेज प्रहार इसी मुद्दे पर था। ऐसा नहीं कि यह मुद्दा अभी उठा है। जबसे नरेंद्र मोदी राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में आए हैं, उनका विपक्ष पर हमला करने का यह सबसे बड़ा हथियार रहा है। उन्हें इस मुद्दे पर नैरेटिव बनाने में सफलता भी मिली है। तमाम राजनीतिक दल परिवारवाद-वंशवाद के आरोपों को काउंटर करने के लिए नई रणनीति बनाने में जुटे रहते हैं। अब एक बार फिर वह नए तरीके से इस मुद्दे पर मुखर हुए हैं। उन्होंने कांग्रेस पर तीखा हमले करते हुए कहा कि परिवारवादी पार्टियां लोकतंत्र की सबसे बड़ी दुश्मन हैं। बोले, 'जब परिवार सर्वोपरि होता है, तो एक ही लक्ष्य रहता है, परिवार को बचाओ। पार्टी बचे न बचे, देश बचे न बचे। बेटा ही अध्यक्ष बनेगा वाली पार्टियों में सबसे बड़ी कैजुअलिटी टैलंट की होती है।'

संसद के अंदर भी उन्होंने कुछ ऐसा ही हमला किया था। अभी तक चुनावी रैलियों में भी उनका यह मुद्दा प्रमुखता से आता रहा है। 2014 में भी उन्होंने अपने चुनावी सफर में राहुल गांधी को शहजादा कहकर संबोधित किया था। बाद के सालों में तमाम राज्यों में सियासी परिवारों की अगली पीढ़ी ने इन हमलों के बीच खुद को स्थापित कर लिया। कांग्रेस का नेतृत्व संकट भले अभी पूरी तरह हल नहीं हुआ हो, लेकिन पार्टी की कमान राहुल गांधी के ही हाथों में दिख रही है।

बाकी क्षेत्रीय दलों में परिवारवाद के तहत ही अगली पीढ़ी न सिर्फ स्थापित हुई, बल्कि अभी कई राज्यों में सत्ता में भी है। जहां सत्ता में नहीं है, वहां भी इनकी हालत पिछले कुछ सालों के मुकाबले बेहतर हुई है। अपने पिता लालू प्रसाद यादव की छत्रछाया से निकलकर तेजस्वी यादव 2020 विधानसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। भले वह चुनाव हारे, लेकिन खुद को अगली पीढ़ी के नेता के रूप में स्थापित कर लिया। तेलंगाना में भी केसीआर अपने बेटे केटीआर को स्थापित करने में लगे हैं। अब इन तमाम दलों का सीधा टकराव बीजेपी से है। ऐसे में बीजेपी को लगता है कि इस मुद्दे को उठाने से न सिर्फ कांग्रेस बल्कि तमाम क्षेत्रीय दलों को भी एक साथ घेरा जा सकता है। साथ ही पीएम मोदी चतुराई से इन दलों के बाकी नेताओं तक यह संदेश भी पहुंचाने में सफल रहते हैं कि उन दलों में परिवारवाद से जुड़े नेताओं के अलावा बाकी की कोई पूछ नहीं है।

बीजेपी को लगता है कि अगर नई पीढ़ी स्थापित हो गई तो इससे राजनीति की दिशा बदल सकती है। अगर भारतीय

राजनीति का ट्रेंड देखें तो परिवारवाद एक कड़वी हकीकत रही है। 2014 के लोकसभा चुनावों में 122 ऐसे बेटे-बेटी रहे जिन्हें अपने पिता की विरासत के रूप में उनकी पार्टी ने टिकट दिए थे। 2009 में लोकसभा में 543 लोकसभा सांसदों में 169 ऐसे सांसद थे, जिनकी पिछली पीढ़ी राजनीति में रही है। लेकिन 2014 में इसकी संख्या 132 और 2019 में इसकी संख्या 102 हो गई। इससे यह तो मालूम पड़ता है कि पिछले कुछ चुनावों में टिकट बांटने में परिवारवाद का प्रभाव कम हुआ है, लेकिन यह तथ्य बरकरार है कि 25 से 40 वर्ष तक की उम्र के पहली बार सांसद बने युवाओं में 70 फीसदी से ऊपर राजनीतिक परिवार से आते हैं। यह बताता है कि भारतीय राजनीति में कोई सौ से ऊपर राजनीतिक परिवारों का सात दशकों से किस तरह से दबदबा रहा है। देश के लगभग हर छोटे-बड़े राज्य में वंशवाद की राजनीति खूब होती रही है। बीजेपी इस ट्रेंड के समानांतर धारा बनाकर इसका सियासी प्रीमियम लेने में सफल रही। बीजेपी ने खुद को ऐसी पार्टी और नेतृत्व के रूप में पेश किया, जहां जमीन से जुड़े कार्यकर्ताओं को उनकी मेहनत का फल मिलता है। इसी छवि की बदौलत बीजेपी दूसरे दलों के कई बड़े नेताओं को अपनी ओर खींचने में सफल रही। इसके बाद तमाम राजनीतिक दलों ने भी अपनी इस छवि को तोड़ने के लिए कई कदम उठाए।

उत्तर प्रदेश में इस बार अखिलेश यादव ने परिवार के लोगों को टिकट नहीं देने की नीति बनाई। अपने चाचा शिवपाल यादव को जब टिकट दिया तो यह तर्क दिया कि वह दूसरे दल के हैं। कांग्रेस के अंदर भी वंशवाद की छवि से पार्टी को बचाने के लिए नए नेतृत्व को मौका देने की रणनीति अपनाई गई। छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल और पंजाब में चरणजीत चन्नी को सीएम बनाने के पीछे भी यही रणनीति थी। चन्नी का नाम जब राहुल गांधी ने बतौर सीएम उम्मीदवार घोषित किया तो उन्होंने उनके गरीब परिवार वाले बैकग्राउंड का खास तौर पर जिक्र किया। सूत्रों के अनुसार इस छवि से निकलने के लिए कांग्रेस अगले कुछ दिनों में और कई कदम उठा सकती है। हालांकि पिछले कुछ सालों में बीजेपी ने भी परिवारवाद से जुड़े नेताओं को प्रमोट किया। ऐसे में अन्य दलों की ओर से उस पर सवाल उठाने में भी कमी नहीं हुई। कुल मिलाकर वंशवाद-परिवारवाद की राजनीति का 2.0 दौर शुरू हो रहा है जिसमें दोनों ओर से हमला करने और नए ढंग से बचाव करने की रणनीति बन रही है। सवाल है कि क्या इस बार बाकी के दल इस हमले का जवाब देने के लिए कोई नया समानांतर नैरेटिव सामने ला सकते हैं।

संसद में गरजे राहुल गांधी

लोकसभा में बुधवार को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर पेश धन्यवाद प्रस्ताव को लेकर चर्चा शुरू हुई। इस दौरान विपक्ष की ओर से सबसे पहले कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने अपनी बात रखी। इस दौरान उन्होंने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति के अभिभाषण में भारत की चुनौतियों के बारे में एक-दो बातों का जिक्र नहीं किया गया है। मुझे लगता है कि राष्ट्रपति का अभिभाषण ब्यूरोक्रेटिक विचारों का जिक्र था। राष्ट्रपति के अभिभाषण में भारत की चुनौतियों के बारे में एक-दो बातों का जिक्र नहीं किया गया है। मुझे लगता है कि राष्ट्रपति का अभिभाषण ब्यूरोक्रेटिक विचारों का जिक्र था। इसमें सच्चाई का काफी अभाव था। अभिभाषण में कामों की लंबी सूची तो थी, लेकिन इसमें यह नहीं बताया गया कि आज भारत बंट चुका है। आज एक नहीं दो भारत हो गए हैं।

उन्होंने कहा कि ये स्थिति पैदा कैसे हुई। ये दो हिंदुस्तान पैदा कैसे हुए? रोजगार, स्मॉल-मीडियम इंडस्ट्री और इनफॉर्मल सेक्टर है। लाखों-करोड़ रुपया आपने उनसे छीनकर हिंदुस्तान के सबसे बड़े अरबपतियों को दिलवा दिया। अपने पिछले सालों में स्मॉल-मीडियम एंटरप्राइजेज पर एक के बाद एक हमला किया है। मैं आपको खुश करने के लिए अपने भाषण में आखिरी साठ साल की बात करुंगा। नोटबंदी, गलत जीएसटी और कोरोना के समय जो गरीबों को समर्थन देना था, वो आपने उन्हें नहीं दिया। नतीजा यह हुआ कि आज 84 फीसदी हिंदुस्तान के लोगों की आमदनी घटी है। और वे तेजी से गरीबी की ओर बढ़ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि हमारे देश में दो हिंदुस्तान बसते हैं- एक अमीरों का हिंदुस्तान और एक गरीबों का हिंदुस्तान। अब इन दोनों हिंदुस्तानों में खाई बढ़ती जा रही है। रोजगार ढूंढने के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार में रेलवे की नौकरी के लिए युवाओं ने क्या किया। उसके बारे में जिक्र नहीं हुआ। भारत के युवाओं के पास रोजगार नहीं है। राष्ट्रपति के अभिभाषण में बेरोजगारी का जिक्र नहीं है। सब जगह युवा सिर्फ एक ही चीज मांग रहा है- रोजगार। यह आपकी सरकार नहीं दे पा रही है। उन्होंने कहा कि इस पिछले साल तीन करोड़ युवा रोजगार खो चुके हैं। आप बात करते हो रोजगार देने की। 2021 में तीन करोड़ युवा खो चुके हैं। पचास साल में सबसे ज्यादा बेरोजगारी आज हिंदुस्तान में है। आपने मेक इन इंडिया की बात की, मगर जो रोजगार युवाओं को मिलना चाहिए, वो उन्हें नहीं मिला और ऊपर से बेरोजगारी पैदा हुई है।

राजनीति में चर्बी और गर्मी की नहीं, देश के विकास की भाषा बोलनी चाहिए

गाजियाबाद में कांग्रेस महासचिव और यूपी प्रभारी प्रियंका गांधी ने कहा कि राजनीति में चर्बी और गर्मी की भाषा नहीं, देश के विकास की भाषा बोली जानी चाहिए। युवाओं के रोजगार और दुकानदारों की दिक्कतों पर चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने जनता से कहा उत्तर प्रदेश में ऐसी सरकार लाइए जो इन समस्याओं को समझे और आपकी बात करें। प्रियंका गांधी शुक्रवार सुबह करीब पौने 12 बजे गाजियाबाद विधानसभा के प्रत्याशी सुशांत गोयल के समर्थन में घर-घर जनसंपर्क करने विजयनगर क्षेत्र के कृष्णा नगर-बागू क्षेत्र में पहुंची थीं। जनसंपर्क के शुरूआत में उन्होंने एक महिला दुकानदार प्रीति और उसके पति सुनील से बात की।वह उनकी दुकान में करीब 15 मिनट रुकी और आर्थिक हालातों पर भी चर्चा की। इसके बाद उन्होंने क्षेत्र के कई दुकानदारों से उनकी दुकानों पर जाकर बात की। प्रियंका गांधी की एक झलक देखने के लिए समर्थकों से लेकर महिलाएं और युवतियों की भीड़ उमड़ पड़ी। लोगों ने उन पर फूलों की बारिश की। उन्होंने कहा कि दुकानदार बता रहे हैं कि लॉकडाउन से बिजनेस चौपट हुआ तो फिर पटरी नहीं आ पाया। प्रियंका ने कहा, हर दुकानदार, छोटे बिजनेस करने वालों की यही समस्या है। एक फरवरी को केंद्र सरकार ने जो बजट पेश किया, उसमें छोटे दुकानदारों-व्यापारियों के लिए कोई राहत नहीं है। सिर्फ बड़े उद्योगपतियों और अपने चंद मित्रों को आगे बढ़ाने की लिए बात की है। उन्होंने जनता से अपील की है कि ऐसी सरकार लाइए जो इन समस्याओं को समझे और आपकी बात करें।

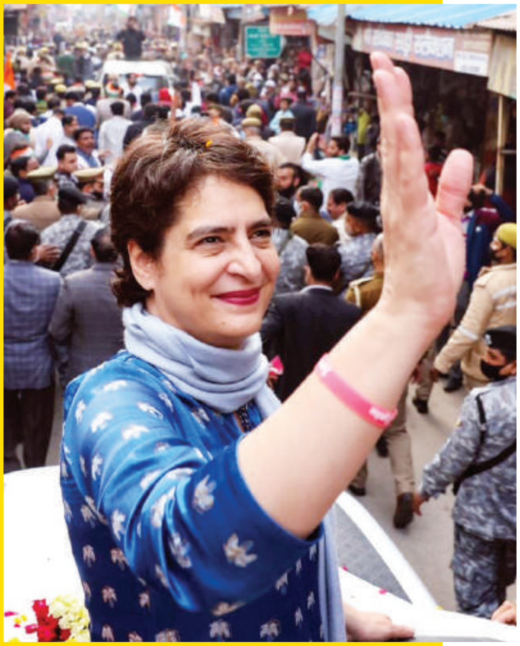

बुलंदशहर में अखिलेश यादव और जयंत चौधरी से शिष्टाचार अभिवादन पर उन्होंने कहा कि राजनीति में चर्बी और गर्मी की भाषा नहीं होनी चाहिए। शिष्टाचार और देश को आगे बढ़ाने की भाषा होनी चाहिए। राजनेता युवाओं को रोजगार देने की भाषा बोलें, उनके विकास की, छोटे दुकानदारों के विकास की भाषा बोलें। शिष्टाचार आपस में रहना चाहिए, यही हमारी सभ्यता और संस्कृति है।

‘सशक्त बालिका–सशक्त समाज–सशक्त मध्यप्रदेश’

राष्ट्रीय बालिका दिवस पर कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने कहा

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि उन्हें यह कहते हुए खुशी है कि पहले एक हजार पुरूषों पर 927 महिलायें होती थीं। लेकिन लाड़ली लक्ष्मी योजना के फलस्वरूप प्रदेश में अब यह अनुपात बढ़कर एक हजार पुरूषों पर 956 महिलाओं का हो गया है। इस संख्या को सरकार बराबर करना चाहती है। यह बात मुख्यमंत्री ने ग्वालियर में राष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में कही। यह समारोह जीवाजी विश्वविद्यालय के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में ‘सशक्त बालिका-सशक्त समाज-सशक्त मध्यप्रदेश’ नाम से आयोजित किया गया। इसमें प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना तथा लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत राशि का वितरण सिंगल क्लिक के जरिए किया गया। इसके अलावा लाड़ली लक्ष्मी योजना के प्रमाण-पत्र एवं महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाओं को सशक्त नारी सम्मान प्रदान किया गया। कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया (वर्चुअल), प्रदेश के

ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) भारत सिंह कुशवाह, पूर्व मंत्री एवं लघु उद्योग निगम की अध्यक्ष इमरती देवी, जिला अध्यक्ष भाजपा (शहर) कमल माखीजानी, जिला अध्यक्ष भाजपा (ग्रामीण) कौशल शर्मा, जिला पंचायत प्रशासकीय समिति की अध्यक्ष मनीषा यादव, सफाई दूत सरस्वती तथा बड़ी संख्या में महिलायें एवं बालिकायें उपस्थित थीं।

कौन कहता है भगवान नजर नहीं आता, विपत्ति में सिर्फ वही नजर आता है: गृह मंत्री डॉ. मिश्रा

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि अपने प्राणों को संकट में डालकर दूसरों की जान बचाने वाले होमगार्ड के जवान देवदूतों की तरह लोगों की मदद करते हैं। आपदा में वे वास्तव में धरती पर भगवान का रूप होते हैं। राज्यपाल श्री पटेल ने सोमवार को होमगार्ड मुख्यालय में शिल्प उपवन का लोकार्पण करते हुए यह बातें कहीं। उन्होंने गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा द्वारा गत वर्ष अपनी जान जोखिम में डालकर बाढ़ पीड़ितों की मदद करने पर मुक्त कंठ से सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गृह मंत्री डॉ. मिश्रा ने कहा कि कौन कहता है कि भगवान नजर नहीं आता, आपदा में सिर्फ वही नजर आता है। होमगार्ड के जवान संकट में फँसे लोगों की ईश्वर की तरह ही मदद करते हैं। महानिदेशक होमगार्ड एवं आपदा प्रबंधन श्री पवन जैन ने कहा कि हमारे जवान दूसरों के प्राणों की रक्षा के लिये अपने प्राण देने के लिये भी तैयार रहते हैं। पुलिस महानिदेशक श्री विवेक जौहरी, अपर मुख्य सचिव गृह डॉ. राजेश राजौरा और पुलिस के अन्य आला अधिकारी उपस्थित थे।

गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि जिंदगी हिम्मत से जीती जाती है। होमगार्ड के जवान शेरदिल हैं। हिम्मत की कोई कमी नहीं है। आपदा के समय जब ये मौजूद होते हैं, तो जनता में दृढ़ विश्वास होता है कि हर संकट चाहे

बाढ़ हो, आग हो, कोई दुर्घटना हो, सभी से होमगार्ड के जवान बचाकर ले आयेंगे। उन्होंने कहा कि प्रदेश में होमगार्ड के जितने जवान हैं, उतनी ही जिंदगियाँ एक साल में उन्होंने बचाई हैं। मंत्री डॉ. मिश्रा ने राज्यपाल श्री पटेल का होमगार्ड परिवार की ओर से आभार व्यक्त किया। महानिदेशक होमगार्ड श्री पवन जैन ने कहा कि हमारे जवान हर तरह के संकट में लोगों की जान-माल की सुरक्षा के लिये तत्पर रहते हैं। जवान परिंदों की तरह हैं, जो पूरे आसमान में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। उन्होंने कहा कि होमगार्ड के जवानों ने 16 दिसम्बर, 2021 को 12 घंटे के सतत रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद छतरपुर में जिंदगी बचाने का अद्भुत कार्य किया। भोपाल में ही 5 सदस्यीय परिवार को 3 बार पानी की टंकी से उतार कर उनके जीवन की प्राण-रक्षा की। हमारे जवान हुनरमंद हैं। उनके द्वारा पत्थरों को तराश कर शिल्प उपवन को तैयार करने में महती भूमिका निभाई गई है।

नवागत आईजी अनिल शर्मा को पुष्प गुच्छ भेंटकर स्वागत करते पुलिस अधीक्षक अमित सांघी।

अनिल शर्मा
आईजी ग्वालियर

बेहतर पुलिसिंग के प्रयास होंगे, कानून व्यवस्था बेहतर रहे, उसका प्रयास रहेगाःआईजी

यातायात व्यवस्था बेहतर हो यह करें प्रयास

● **टीम गूंज न्यूज नेटवर्क**

ग्वालियर रेंज के नवागत आईजी अनिल शर्मा ने कहा है कि रेंज में बेहतर पुलिसिंग के प्रयास होंगे, कानून व्यवस्था बेहतर रहे, उसका प्रयास रहेगा। इसके साथ ही फरियादी को थाने में आने पर पर्याप्त संतुष्टि मिले, उसकी सुनवाई हो, इस पर फोकस रहेगा। आईजी अनिल शर्मा ने कहा कि माफियाओं पर कारवाई वह सख्ती से करेंगे। गुंडे-बदमाश अब रेंज से पलायन कर जाएं, उनका यही पहला टारगेट भी रहेगा।

पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर के सभागार में ग्वालियर जिले की अपराध समीक्षा बैठक आहूत की गई। बैठक में आईजी ग्वालियर रेंज अनिल शर्मा और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अमित सांघी विशेष रूप से मौजूद थे। बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गण के अलावा जिले के समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारीगण तथा जिले के समस्त थाना प्रभारीगण एवं यातायात के अधिकारीगण उपस्थित थे।

बैठक के प्रारम्भ में आईजी ग्वालियर द्वारा उपस्थित समस्त पुलिस अधिकारियों से परिचय प्राप्त किया। तद्उपरान्त वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा जिले के अपराध ट्रेंड के संबंध में आईजी ग्वालियर को अवगत कराया गया। साथ ही विगत वर्ष में जिन अपराध शीर्ष में अच्छी कार्यवाही की गई है उनके संबंध में जानकारी दी गई तथा अन्य शीर्ष जहां और अच्छी कार्यवाही की जा सकती है उसकी भी जानकारी आईजी ग्वालियर को दी गई। आईजी ग्वालियर ने हाल ही में ग्वालियर पुलिस द्वारा लूट की घटना का खुलासा करने के लिये शाबासी देते हुए टीम के सदस्यों को प्रशंसा पत्र देने की घोषणा की और अवैध मादक पदार्थ के खिलाफ की जा रही कार्यवाही को भी सराहा साथ ही उनके द्वारा अफीम, स्मैक, गॉजा की कार्यवाही में जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया और अफीम, स्मैक, गॉजा बेचने वालों के खिलाफ प्रभावी कार्यवाही करने हेतु थाना प्रभारियों को निर्देशित किया। बैठक में आईजी ग्वालियर द्वारा माननीय उच्च न्यायालय के वारंटों की शत्प्रतिशत तामीली पर जोर दिया गया। उन्होने कहा कि समंस-वारंट तामीली को लेकर माननीय न्यायालय बहुत गंभीर है इसलिए समंस-वारंट तामीली में कोताही न बरती जाए और तामीली के यथासंभव प्रयास किये जाए। बैठक में पुलिस महानिरीक्षक ग्वालियर ने अपनी प्राथमिकताओं को जाहिर किया। उनके द्वारा कहा गया कि पुलिस की उपस्थिति शहर की सड़कों पर दिखनी चाहिए जिससे अपराधियों के मन में भय व्याप्त हो तथा पुलिस द्वारा चैकिंग अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समय में की जाना चाहिए साथ ही चैकिंग के दौरान चैकिंग कर रहे अधिकारी व कर्मचारियों द्वारा इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि

महिला तथा वुजुर्गो को किसी प्रकार की परेशानी न हो। इस अवसर पर आईजी ग्वालियर ने कहा कि सभी थाना प्रभारी अपने-अपने थाना क्षेत्रों में स्थित प्रतिष्ठांनों पर सीसीटीव्ही कैमरे लगवाने हेतु व्यापारियों को प्रोत्साहित करें, क्योंकि कई अपराधों के खुलासे में सीसीटीव्ही से प्राप्त साक्ष्य महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। गुम बालक-बालिकाओं की दस्तायाबी हेतु समस्त थाना प्रभारी अपने-अपने थाने के प्रकरणों में विशेष रूचि लेकर अधिक से अधिक संख्या में गुम बालक-बालिकाओं की दस्तायाबी हेतु प्रभावी कार्यवाही करें।

चार मूल मंत्रों को ज़रुर याद रखें: मास्क टीकाकरण, सोशल डिस्टेंसिंग, हाथ सेनिटाइज़ेशन

नियमों का पालन करें और कोरोना मुक्त जीवन जिएं: डॉ. अजय पाल

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

इस वक्त जब पूरी दुनिया कोरोना जैसी महामारी से जूझ रही है। तब डॉक्टरों की महत्वपूर्ण भूमिका और उनकी कड़ी मेहनत को अनदेखा नहीं किया जा सकता। डॉक्टरों को समाज में भगवान का दर्जा प्राप्त है। अब जो लोग समाज और देश की सेवा में अपनी जान की चिंता किए बगैर दिन रात लग रहते हैं। डॉक्टरों की मदद हमेशा हमें मुश्किल से बचाती है. यही एक पेशा है जहां दवा और दुआ का अनोखा संगम देखने को मिलता है, इंसान को भगवान भी यहीं बनाया जाता है. कोरोना काल में सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में डॉक्टर समर्पण भाव से मरीजों की सेवा में लगे हैं और पूरे समर्पण भाव के साथ मरीजों की सेवा कर रहे हैं आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्य से ग्वालियर शहर के ऐसे ही कोरोना वॉरियर्स डॉ. अजय पाल सिंह जो कि जीआर मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन विभाग में सहध्यापक ग्वालियर के पद पर कार्य कर रहे हैं। डा. पाल करीब 17 वर्षों से बिना थके सेवा भाव के साथ मरीजों की सेवा कर रहे हैं। गूंज पत्रिका को दिए साक्षात्कार के प्रमुख अंश।

सर पहले अपने बारे में कुछ बतायें

मैं डॉ. अजय पाल मैं जीआर मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन विभाग में सहध्यापक के पद पर पदस्थ हूं और पिछले करीब 17 सालों से इस संस्थान में अपनी सेवा दे रहा हूं।

सर बच्चों को वैक्सीन नहीं लगी है? उन्हें किस तारीके से हम कोविड से बचायें

देखो भारत सरकार से जो गाइडलाइन हैं वो कोविड की वैक्सीन के लिए जो प्रोटोकॉल है वो 15 वर्ष से ऊपर आयु के जो किशोर हैं उन्हें वैक्सीन दी जा रही है और साथ ही precaution dose जिसको बूस्टर dose भी कहते हैं। वो ऐसे लोगों को दी जाती है जो फ्रंटलाइन वर्कर हैं, जो डॉक्टर हैं, हेल्थकेयर वर्कर हैं, पैरामेडिकल स्टाफ हैं, पुलिस डिपार्टमेंट है या जो ऐसी व्यक्ति है जो बुजुर्ग हैं और जिनको डायबिटीज है जिसमें कोविड निमोनिया का खतरा ज्यादा होता है। ऐसे लोगों को ऐहतियात के तौर पर दिया जा रहा है। आपका सवाल सही है क्योंकि जो 15 साल से कम उम्र के बच्चे हैं उन्हें कैसे बचाएं क्योंकि वो वैक्सीनेटेड भी नहीं है और कोविड के लिए भी हैं और कोविड की बिमारी उनमे भी पई जा रहा है तो वहां क्या है भीड भाद वाले इलके में ना ले जाए खस्तोर पे मार्केट हैं, मॉल हैं या कोई फंक्शन है या शादी है और याद कुछ जरूर करें से वो बहार जाते हैं तोह मास्क का अपयोग करे और मास्क लगा कर ही बहार निकले।

सर कोविड का तेज रफ्तार से फेलने का क्या करन है?

देखें कोविड मूल रूप से एक विशनों यानि वायरस से फेलने वाली बिमारी है और ये संक्रामक हैं, जो एक व्यक्ति से दुसरे व्यक्ति में फेलता है, कोविड का जो मूल वायरस

डॉ. अजय पाल सिंह
(सहध्यापक)
जीआर मेडिकल कॉलेज, मेडिसिन विभाग

था धीरे उसमे mutation होता गया, ये एक natural process होता है। इससे उसे विषाणु और जो संक्रामण करने की क्षमता है उसमें परिवर्तन होता है। ये उत्परिवर्तन 2 तारीकों का हो सकता है। कुछ मामलों में ऐसा होता है जिसमें वायरस और भी विकराल हो जाता है और भी घातक हो जाता है। कुछ ऐसी परिस्थितियां होती हैं जिसमें उत्परिवर्तन जिसमें कौन सा वायरस को थोड़ा कम गंभीर या कम विषाक्त बनाता है पर उसमें जो संक्रमण क्षमता है जो ज्यादा बन जाती है। कोविड का वर्तमन में ओमाइक्रोन और ओमाइक्रोन के वैरिएंट हैं। ये बताता है की इसकी पौरुष या घटक शमता तो कम हुई है परंतु संक्रामण करना की शमता ज्यादा है और जो एक साथ का लोगों को संक्रांति करता है।

सर कोविड की दूसरी लहर में और इस लहर में क्या अंतर है

कोविड की दूसरी लहर जो अप्रैल की अंतिम सप्ताह और मध्य अप्रैल से शुरू हुई थी और जून तक जो चली थी उस वायरस को मुख्य रूप से पहचान किया गया जो उसका नामांकन किया गया जो डेल्टा आधार के रूप में किया गया। उसे हम डेल्टा वायरस की लहर कहते हैं। कौन एक बहुत ही घटक लहर थी और उस लहर में जिन्को भी वायरस ने संक्रामण किया है उसमें ज़्यादतर लोगन को कोविड निमोनिया हुआ है।

ओमीक्रॉन को हल्के में ना लें

तो हमको ये नहीं समझना है की ओमीक्रॉन सिंपल सर्दी जुखाम है और इस में हम कोई एहतियात ना लें। ये बिल्कुल गलत धारणा है। और याद मान लिजिये की आप युवा हैं और अपने जॉब में, मार्केट में जाते हैं । और वहां से ओमिक्रॉन आपको होता है लपरवाही से या मास्क ना लगाने से तो इसका असर घर में, आपको पड़ेगा। आपके घर में दादा-दादी हैं या कोई आपके परिवार के ऐसे सदस्य हैं जो किसी बीमारी से पीड़ित हैं, मधुमेह से या किडनी की बीमारी से, उनमें यदि आपके मध्यम से वायरस उनमें वायरस आ जाता है। तो उनमें ये जानलेवा भी हो सकता है।

समाज को क्या संदेश देना चाहेंगे?

देखिये गूंज के मध्यम से मैं लोगों को ये संदेश देना चाहता हूं की 2020 मार्च में पिछले हफ्ते से ये महामारी तरह तरह के लोग प्रभाव हो रहे हैं। शारिरिक रूप, मानसिक रूप से व्यवसाय से ले हर लेवल पे। ना सिर्फ पेशेंट के लेवल पे, प्रशासन के लेवल पे, सामान्य लॉग, डॉक्टर या पैरामेडिकल स्टाफ में, गवर्नमेंट में, साइंटिस्ट्स में रिसर्च कंडक्टिंग एजेंसियां हैं, वैक्सीन की निर्माता साथी हैं। सबी कोई कहीं न कहीं बहुत चीज से गुजरा पड़ा है। जैसा संभव है वैसा ही समय धीरे-धीरे निकलेगा और जिन लोगों, खस्तौर पे दूर लहर में मृत्यु दर ज्यादा रही है, उन लोगों ने जो सहा है वो एक बड़े दुख की बात है उनके लिए। इससे हमें तलाश ये मिलनी चाहिए की हम इस बीमा को बहुत हल्के रूप में ना ले और हम इसे ये न समझेंगे कि ये एक समाने बीमा हैं और ठीक हो जाएंगे। जो इम्यून सिस्टम है जो हर व्यक्ति में अलग होता है, उस पर वायरस का असर किस तारिके से होगा कोई नहीं जनता। ये चीज संक्रांति के बाद ही पता चलती है। तो बच्चा ही इस्का एक मातृ उपय हैं। और जितना संभव हो खातिर मास्क का इस्तमाल करे। अपना डेली रूटीन में दाल लें, जैसे कपड़े पहनने ना एक रूटीन होता है, मोबाइल रखना हमारी आदत में शामिल हो जाता है। चार मूल मंत्रों को ज़रुर याद रखें- मास्क टीकाकरण, सोशल डिस्टेंसिंग, हाथ सेनिटाइज़ेशन हमेशा इन चीजों का ध्यान रखें नियमों का पालन करें और कोरोना मुक्त जीवन जिएं।

56 शहरों में 750 करोड़ रूपये की लागत से होगा आंतरिक सड़कों का सुदृढ़ीकरण

अटल एक्सप्रेस-वे से जुड़ी बाधाएँ दूर हुई

भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और सागर में बनेंगी रिंग रोड

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली प्रवास में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात की। केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर विशेष रूप से उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने श्री गडकरी से भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और सागर में भारतमाला परियोजना में बायपास, रिंग रोड निर्माण सहित विभिन्न कार्यों के संबंध में विस्तार से चर्चा की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी द्वारा मध्यप्रदेश के लिए किए जा रहे सहयोग के लिए हृदय से धन्यवाद दिया। मध्यप्रदेश में विभिन्न कार्यों के लिए निरंतर स्वीकृतियाँ प्राप्त हो रही हैं। अटल एक्सप्रेस-वे से जुड़े कार्यों की अनेक बाधाएँ भी समाप्त की गई हैं, जिससे सभी निर्माण कार्य पूर्ण करने में आसानी होगी। प्रदेश की आर्थिक गतिविधियों को नई गति मिलेगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में सुदृढ़ अधो-संरचना स्थापित करना राज्य शासन की पहली प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आज केन्द्रीय मंत्री श्री गडकरी से प्रदेश के 56 शहरों में 750 करोड़ रुपये की लागत से आंतरिक सड़कों को सुदृढ़ बनाने और निर्माण भारत माला परियोजना के प्रथम चरण में 5 बड़े शहरों भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर और सागर के छूटे हुए हिस्से में बायपास/रिंगरोड के निर्माण पर चर्चा की। इससे शहरों में यातायात का दबाव कम होगा। केन्द्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने इस पर सहमति प्रदान की। इसके लिए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और श्री गडकरी के प्रति आभार ज्ञापित किया है।

सार्थक प्रयास, सार्थक वार्ता

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी से मुलाकात के बाद कहा कि ग्वालियर चंबल क्षेत्र से गुजरने वाला 404 किलोमीटर लंबा अटल प्रगति पथ (एक्सप्रेस-वे) मध्यप्रदेश के विकास को गति देगा। यह पथ चंबल और ग्वालियर क्षेत्र के समग्र विकास की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। क्षेत्र के नगरों, कस्बों और छोटे-बड़े सभी ग्रामों की अर्थ-व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि इस एक्सप्रेस-वे के लिए भूमि अधिग्रहण की दिक्कतों को दूर किया गया है। सार्थक प्रयासों से बाधाएँ दूर करने में सफलता मिल रही है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि मध्यप्रदेश के 5 महत्वपूर्ण शहरों भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर एवं सागर के रिंग रोड के छूटे हुए हिस्सों को एनएचएआई के माध्यम से शीघ्र पूरा कराया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि इन रिंग रोड से ओद्योगिक केन्द्र तथा लॉजिस्टिक हब विकसित करना आसान होगा। उन्होंने बताया कि भोपाल शहर का 75 प्रतिशत रिंग रोड निर्मित है। शेष 25 प्रतिशत लम्बाई में मण्डीदीप से इंदौर रोड तक रिंग रोड बनाया जाना आवश्यक है। यह प्रस्तावित रिंग रोड एनएच-64 (भोपाल-ओबेदुल्लागंज) को स्टेट हाई-वे क्रमांक-28 (भोपाल-देवास) से जोड़ेगी।

मध्यप्रदेश के कार्यों के लिए निरंतर मिल रही हैं स्वीकृतियाँ, मुख्यमंत्री चौहान ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केन्द्रीय मंत्री गडकरी का माना आभार

इसी प्रकार इंदौर शहर की रिंग रोड का आधा हिस्सा पूर्व से मौजूद है। रिंग रोड के पश्चिमी हिस्से की योजना भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा बनाई गई है। यह प्रस्तावित रिंग रोड एनएच-52 (आगरा-मुम्बई) को जोड़ेगी। जबलपुर शहर के लिए प्रस्तावित रिंग रोड राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक-30 (जबलपुर-रीवा), एस. एच. क्रमांक-55 (जबलपुर-दमोह), एनएच-45 (जबलपुर-भोपाल), एनएच-30 (जबलपुर-नागपुर), एनएच-30 (जबलपुर-मण्डला), एनएच-45 (जबलपुर-अमरकंटक) को जोड़ेगी।

ग्वालियर शहर में पूर्वी/दक्षिण की तरफ 42 कि.मी. बायपास निर्मित है। शेष 28 कि.मी. में प्रस्तावित रिंग रोड है। प्रस्तावित रिंग रोड एनएच-44 (ग्वालियर-झाँसी) से प्रारंभ होकर एनएच-46 (ग्वालियर-गुना) को जोड़ेगी।

इसी प्रकार सागर शहर में भारतीय राष्ट्रीय राज्यीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा बरखेड़ी से गढ़पहरा तक 28 कि.मी. लम्बाई का मार्ग प्रस्तावित है, जिसकी निविदा प्रक्रियाधीन है। इसके निर्माण से बीना-भोपाल-इंदौर के यातायात को सुगमता मिलेगी। कटनी-जबलपुर से भोपाल-बीना जाने वाले यातायात की सुगमता के लिए रिंग रोड का निर्माण आवश्यक है। यह रिंग रोड एनएच-146 (भोपाल-सागर) एवं एनएच-44 (जबलपुर- लखनादौन) से एनएच-934 (सागर-कानपुर) को जोड़ेगा। सागर के दक्षिणी और एनएच 146 (भोपाल-सागर) को एसएच 21 (सागर-रेहली) को जोड़ेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रस्तावित नर्मदा एक्सप्रेस-वे प्रदेश में औद्योगिक, पर्यटन गतिविधियों के विकास की रीढ़ साबित होगा। यह महत्वाकांक्षी परियोजना अमरकंटक (कबीर चबूतरा) से मध्यप्रदेश गुजरात सीमा तक बनायी जाना प्रस्तावित है। इसमें प्रदेश के 10 जिले अनुपपूर, डिंडौरी, जबलपुर, नरसिंहपुर, रायसेन, सीहोर, देवास, इंदौर, धार और झाबुआ जुड़ेंगे। साथ ही 8 जिलों शहडोल, रीवा, भोपाल, हरदा, खण्डवा, खरगौन, बड़वानी एवं अलीराजपुर को फीडर रूट्स से जोड़ा जाएगा।

डिस्को किंग, द गोल्डन मैन ऑफ इण्डिया बप्पी लहरी

बप्पी लहिरी ने देश में डिस्को को किया था लोकप्रिय, हमेशा याद रहेगा उनका जिंदादिली स्वभाव

“ याद आ रहा है, तेरा प्यार! वक्त को ना जाने क्या हो गया है कि एक-एक करके हमारा सुरीला साथी हमसे विदा ले गया। डिस्को किंग, द गोल्डन मैन ऑफ इण्डिया और गोल्डमाइन कहे जाने वाले बप्पी लाहिड़ी आज हमारे बीच नहीं रहे। हिन्दी फिल्मी व क्षेत्रीय भाषा के गानों को लोकप्रियता के शिखर पर ले जाने में बप्पी लाहिड़ी की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आई एम अ डिस्को डांसर, यार बिना चैन कहाँ रे, तू है मेरी फैंटेसी जैसे गानों से बप्पी दा हर तबके के लोगों का मनोरंजन करने में सफल रहे थे। संगीत की कोई सीमा नहीं होती और जब कोई संगीत हर उम्र, हर जुबान और हर तबके के लोगों को एकसाथ थिरकने पर मजबूर कर दे तो एक संगीतकार के लिए इससे बड़ी उपलब्धि क्या होगी! बप्पी लाहिड़ी भारतीय सिने जगत का वह नाम है जिसने पाश्चात्य संगीत को देसी स्टाइल में पिरोकर एक अलग पहचान दी। बप्पी दा का संगीत ईस्ट और वेस्ट का अनूठा संगम है।

सोने की मोटी जंजीरें और चश्मा पहनने के लिए पहचाने जाने वाले गायक-संगीतकार बप्पी लहिरी ने 70-80 के दशक में कई फिल्मों के लिए संगीत रचना की जिन्हें खासी लोकप्रियता मिली। इन फिल्मों में ''चलते-चलते'', ''डिस्को डांसर'' और ''शराबी'' शामिल हैं। बप्पी लहिरी के परिवार में उनकी पत्नी चित्राणी, पुत्री रीमा और पुत्र बप्पा लहिरी हैं। बप्पी लहिरी के दामाद गोविंद बंसल ने कहा, ''अंतिम संस्कार जुहू के पवन हंस शवदाहगृह में किया जाएगा।'' बप्पी लहिरी के परिवार की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है ''यह हमारे लिए अत्यंत दुखद समय है। हमारे प्रिय बप्पी दा बीती रात हमें छोड़ गए। हम उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। उनका आशीर्वाद हमेशा हमारे साथ रहेगा।'' बप्?पी लहिरी ने आखिरी बार सितंबर 2021 में ''गणपति बप्पा मोरिया'' में काम किया था। उन्होंने अमेरिका स्थित भारतीय गायक अनुराधा जुजु पलाकुर्ती की आवाज वाले भक्ति गीतों के लिए भी संगीत दिया।

बप्पी लहिरी को 1970 से लेकर 1990 के दौरान भारतीय सिनेमा में ''आय एम ए डिस्को डांसर'', ''जिम्मी जिम्मी'', ''पग घुंघरू'', ''इंतेहा हो गयी'', ''तम्मा तम्मा लोगे'', ''यार बिना चैन कहां रे'', ''आज

रपट जाए तो'' तथा ''चलते चलते'' जैसे गीतों से डिस्को संगीत का दौर शुरू करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने 2000 के दशक में ''टैक्सी नंबर 9211'' (2006) का ''बम्बई नगरिया'' और ''द डर्टी पिक्चर'' (2011) के ''उह ला ला'' जैसे हिट गीतों को भी अपनी आवाज दी। वह उन गायकों में से एक हैं जिन्होंने 2014 में आयी फिल्म ''गुंडे'' का ''तूने मारी एंट्रियां'' गीत भी गाया था। उन्होंने बंगाली, तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और गुजराती फिल्मों में भी संगीत दिया। लाहिड़ी 2014 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हुए। उन्होंने श्रीरामपुर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा लेकिन तृणमूल कांग्रेस के कल्याण बनर्जी से हार गए। उनका आखिरी बॉलीवुड गीत 2020 में आयी फिल्म ''बागी 3'' का ''भंकास'' था।

विरासत में मिला संगीत

संगीत तो उन्हें विरासत में मिली सौगात थी जिसका सदुपयोग कर उन्होंने न सिर्फ भारत, बल्कि दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई। बप्पी लाहिड़ी का जन्म 27 नवम्बर 1952 को पश्चिम बंगाल के जलपाईगुड़ी में हुआ था। उनके पिता अपरेश लाहिड़ी और माता बाँसुरी लहरी शास्त्रीय संगीत तथा श्यामा संगीत के फनकार व

गायक थे। बप्पी उनकी एकलौती संतान थे और उनका असल नाम अलोकेश लाहिड़ी था, जो कालांतर में बप्पी के नाम से मशहूर हुआ। अलोकेश को संगीत की शिक्षा बचपन से ही मिलनी शुरू हो गयी थी।

नन्हीं उम्र में ही दिखा हुनर

तीन वर्ष की नन्हीं सी उम्र में ही उनकी छोटी-छोटी उँगलियों ने तबले पर अपना कमाल दिखाना शुरू कर दिया था। विश्वविख्यात बनने का सपना भी बहुत छोटी उम्र से ही उनके साथ रहा। उनकी जीवन संगिनी चित्राणि भी संगीत घराने से ताल्लुक रखतीं हैं बेटी रेमा एक उम्दा गायिका हैं और बेटा बप्पा लाहिड़ी पिता के समान ही हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री में संगीतकार के रूप में पैर जमा रहे हैं। संगीत साधकों के इस परिवार में बप्पी लाहिड़ी की भूमिका अतुलनीय है। उनका संगीत जितनी विविधताओं से भरा है उतनी ही आकर्षक थी उनकी व्यक्तिगत स्टाइल।

अलग था अंदाज

बप्पी लाहिड़ी की पहचान का अटूट हिस्सा था उनका पब्लिक इमेज - वह भी उनकी संगीत की तरह ही ईस्ट और वेस्ट का अनुपम संगम कहा जा सकता है। पारंपरिक परिधानों में रँग-बिरंगे कुर्ते और शेरवानी एक तरफ जहाँ उन्हें भारतीय पहचान देते थे वहीं स्वेट शर्ट और ब्लेजर का पहनावा उनके वेस्टर्न अवतार को आकर्षक बनाता था। उसपर सोने और चाँदी के आभूषणों से लदे हमारे प्यारे बप्पी दा किसी पॉप सिंगर से कम नहीं लगते थे। तरह-तरह के गॉगल्स उनके लुक को सम्पूर्णता प्रदान करता था। ऊँगलियों में सोने की मोटी अँगूठियाँ और गले में मोटे-मोटे चेन पहनने वाले वे प्रथम भारतीय संगीतकार हैं। एक साक्षात्कार के दौरान उन्होंने अपने इस अवतार का श्रेय अंग्रेजी के एक रॉकस्टार एल्विस को दिया था जिसने बहुत छोटी उम्र में उन्हें बेहद आकर्षित किया था और तभी से वे अपनी खास पहचान बनाने को लेकर संजीदा हो गए थे। बप्पी लाहिड़ी ने मात्र 19 वर्ष की आयु से फिल्मों में संगीत देना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने 1972 में बांग्ला फिल्म 'दादू' के लिए पहली बार गाना कंपोज किया था जिसे लता मंगेशकर ने अपनी आवाज दी थी। उनका पहला हिन्दी गीत फिल्म 'नन्हा शिकारी' (1973) का 'तू ही मेरा चँदा' है, जिसे मुकेश ने गया था। इस तरह शुरुआत से ही उनके कम्पोजिशन को बेहतरीन गायकों की आवाजें

मिलती रहीं, और धीरे-धीरे वे इंडस्ट्री के जाने-माने नाम बनकर मशहूर हो गए। इतना ही नहीं, उनकी आवाज की कशिश भी लोगों पर जादू कर गयी और एक गायक के रूप में भी उन्हें अच्छी खासी लोकप्रियता मिली। वे किशोर कुमार के बहुत बड़े प्रशंसक थे और उन्हें मामा कहकर बुलाते थे। किशोर के जाने पर उन्हें इतना गहरा अघात लगा था कि वे संगीत छोड़ देना चाहते थे किन्तु फिर उन्हीं की प्रेरणा से नए जोश के साथ कार्य किया और फिर जो हुआ वह इतिहास बन गया। संगीत के हर बड़े नाम बप्पी दा के संगीत से जुड़े और उनके बनाये-गाये गाने चार्टबस्टर बन लोगों के दिलों पर छाते रहे।

अदाकारी में हाथ आजमाए

बप्पी दा ने कुछ फिल्मों में अदाकारी की और कई फिल्मों में डबिंग भी की थी। उनके गीत केवल हिन्दी भाषा तक सिमट कर नहीं रहे। बांग्ला, तेलगु, तमिल, कन्नड़, गुजराती आदि गीतों को भी अपने संगीत से सँवारा था। वर्ष 1986 में 33 फिल्मों के लिए 180 गाने रिकार्ड करने के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी दर्ज है। उनके नाम कई फिल्मफेयर अवार्ड भी हैं। वर्ष 2018 में, 63वें फिल्मफेयर अवार्ड में उन्हें लाइफ अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया था। अभी हाल ही में बच्चे पार्टी गाने में अपनी दमदार एंट्री से दर्शकों को रोमांचित करने वाले हम सबके चहेते बप्पी लाहिड़ी अपने पीछे बेहतरीन गानों और खुबसूरत यादों का कारवाँ छोड़ गए हैं।

बॉलीवुड में तेलुगू फिल्मों का जलवा

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

देश में कोरोना लॉकडाउन के दिनों में दर्शकों का मनोरंजन करने में तेलुगू फिल्म सबसे आगे रही हैं। हिंदी और अन्य भाषाओं के मुकाबले तेलुगू फिल्मों को लोगों ने ज्यादा पसंद किया और देखा है। हाल ही में आई अल्लू अर्जुन अभिनीत पुष्पा फिल्म (तेलुगू) वर्ष 2020–2021 में तान्हाजी (हिंदी) के बाद दूसरी सबसे अधिक कमाई करने वाली फिल्म रही है। ऑरमैक्स बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2020 और 2021 में बॉक्स-ऑफिस कमाई में तेलुगू सिनेमा की हिस्सेदारी पहले के मुकाबले काफी बढ़ गई है। अब ये हिस्सेदारी बढ़कर 29 फीसदी हो गई है जो हिंदी की 27 फीसदी और तमिल सिनेमा की 17 फीसदी की हिस्सेदारी से कहीं अधिक है। जबकि बॉक्स ऑफिस में चार दक्षिण भारतीय भाषाओं तमिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नड़ भाषा का योगदान 2020-21 में बढ़कर 59 फीसदी तक हो गया है, जो वर्ष 2019 में महज 36 फीसदी था। जबकि हिंदी की हिस्सेदारी 44 फीसदी से घटकर महज 27 फीसदी पर आ गई है। मुंबई स्थित ऑरमैक्स मीडिया देश की उन चुनिंदा बड़ी कंपनियों में शामिल है जो मनोरंजन कारोबार का विश्लेषण करती है। कंपनी अपनी सालाना रिपोर्ट फिल्म निर्माताओं, वितरकों और कारोबार विश्लेषकों जैसे उद्योग के सूत्रों से प्राप्त अनुमानों के आधार पर तैयार करती है। कंपनी अपनी यह रिपोर्ट अनुमानित आंकड़ों के आधार पर बनाती है।

20-21 में बॉक्स ऑफिस कमाई महज 5,757 करोड़ रुपये

रिपोर्ट के मुताबिक, कोरोना वायरस के प्रतिबंध के चलते देशभर के सिनेमाघर लंबे समय तक बंद रहे हैं जिससे फिल्म उद्योग का कारोबार बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। किसी भी फिल्म की कमाई में दो-तिहाई हिस्सा बॉक्स आफिस से आता है। वर्ष 2020 और 2021 की कुल बॉक्स ऑफिस कमाई महज 5,757 करोड़ रुपये रही। जबकि अकेले वर्ष 2019 में ही 11,000 करोड़ रुपये हुई थी। रिपोर्ट में विश्लेषकों का कहना है कि बॉक्स ऑफिस की सबसे बड़ी भाषा हिंदी की बजाय तेलुगू रही, यह चौंकाने वाली बात है। अन्य किसी भाषा की तुलना में हिंदी करीब आठ से 10 गुना अधिक लोगों द्वारा बोली और देखी जाती है। इसलिए हिंदी फिल्म प्रदर्शित करने के लिए कई राज्यों में सिनेमाघर खुले होना जरूरी हैं, जबकि तेलुगु या तमिल को केवल एक या दो राज्यों के खुले होने की ही जरूरत होती है। इस वजह से महामारी के दौरान हिंदी फिल्मों को रिलीज करना लगभग

नामुमकिन हो गया, क्योंकि एक समय सभी राज्यों में लॉकडाउन था।

एक्शन फिल्में हैं पसंद

दूसरा, दक्षिणी बाजार मुख्य रूप से सिंगल स्क्रीन सिनेमा पर निर्भर है। जबकि हिंदी सिनेमा पिछले करीब दो दशक में मल्टीप्लेक्स पर आधारित हो गया है। एक व्यापक जनसमूह के लिए एक्शन फिल्में अब हिंदी में मुश्किल से ही बनती हैं, जो सिंगल स्क्रीन की पसंदीदा होती हैं। दक्षिणी सिनेमा ने अब भी इन दर्शकों की नब्ज पकड़ रखी है। इसलिए 2020 और 2021 में जब-जब सिनेमा खुले, तमिल (मास्टर) और तेलुगू फिल्मों (वकील साब, उप्पेना) ने तगड़ा कारोबार किया।

साउथ की ब्लॉकबस्टर्स का बनेगा बॉलीवुड रीमेक

साउथ की फिल्में इन दिनों छाई हुई हैं। 'बाहुबली' से शुरू हुआ यह सफर हाल के समय में रिलीज हुई 'पुष्पा' ने रिकॉर्ड कमाई कर सबको हैरान कर दिया। हिन्दी बेल्ट में अल्लू अर्जुन का एक बड़ा फैन वर्ग तैयार हो गया है। यही नहीं 'पुष्पा' की सफलता को देखते हुए अब दूसरे साउथ के मेकर्स भी अपनी फिल्मों को हिन्दी में रिलीज करने पर जोर दे रहे हैं। बॉलीवुड में आने वाले समय में कई साउथ की फिल्मों का रीमेक बनने वाला है। ये तमिल, तेलुगू, मलयालम और कन्नड़ की ब्लॉबस्टर हैं। एक नजर डालते हैं ऐसी ही फिल्मों पर...

अला वैकुंठपुरमुलु–अल्लू अर्जुन की फिल्म 'पुष्पा' की सफलता को देखते हुए उनकी आने वाली फिल्म फिल्म %अला वैकुंठपुरमुलु के मेकर्स काफी उत्साहित हैं। इसका रीमेक 'शहजादा' के नाम से बन रहा है। फिल्म में कार्तिक आर्यन और कृति सेनन की मुख्य भूमिका है। इसे रोहित धवन निर्देशित कर रहे हैं। फिल्म नवंबर में रिलीज होगी। अला वैकुंठपुरमुलु पहले सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली थी लेकिन अब इसे 6 फरवरी को टीवी पर प्रीमियर किया जाएगा।

मास्टर–कोरोना काल के बाद जब सिनेमाघर खुले तो विजय और विजय सेतुपति स्टारर 'मास्टर' रिलीज हुई जिसने बॉक्स ऑफिस पर कमाई के नए रिकॉर्ड बनाए। 'मास्टर' का रीमेक सलमान खान करेंगे। हालांकि अभी इसका आधिकारिक ऐलान नहीं किया गया है।

विक्रम वेधा– विक्रम बेताल की कहानी पर आधारित फिल्म 'विक्रम वेधा' 2017 में आई थी। एक्शन ड्रामा फिल्म में आर माधवन और विजय सेतुपति की मुखय् भूमिका थी। इस फिल्म को बॉलीवुड में ऋतिक रोशन

और सैफ अली खान कर रहे हैं। फिल्म 30 सितंबर 2022 को सिनेमाघरों में आएगी।

ड्राइविंग लाइसेंस–2019 में पृथ्वीराज और सूरज वेंजारामूदु की मलयालम फिल्म आई थी 'ड्राइविंग लाइसेंस'। अब इस पर हिन्दी में 'सेल्फी' नाम से फिल्म बनने जा रही है। बीते दिनों ही अक्षय कुमार ने एक टीजर शेयर कर इसकी जानकारी दी थी। फिल्म में उनके साथ इमरान हाशमी होंगे। इसे राज मेहता निर्देशित करेंगे और यह 2023 में आएगी।

हिट द फर्स्ट केस–तेलुगू फिल्म 'हिट- द फर्स्ट' केस एक मिस्ट्री थ्रिलर फिल्म है। फिल्म का हिन्दी रीमेक इसी नाम से बनेगा। इसमें राजकुमार राव और सान्या मल्होत्रा मुख्य भूमिका में है। फिल्म के निर्माता भूषण कुमार हैं। अभी इसका प्रोडक्शन का काम चल रहा है।

बसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा से होती है इच्छाएं पूरी

हिंदू धर्म के अनुसार, बसंत पंचमी का पर्व माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाते हैं। इस दिन मां सरस्वती की पूजा-अर्चना की जाती है। पंडितों के अनुसार, बसंत पंचमी के दिन ज्ञान की देवी मां सरस्वती की पूजा करने से बुद्धि व विद्या का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

क्यों पहने जाते हैं पीले कपड़े

पंडितों का मानना है कि वसंत पंचमी के दिन पीले कपड़े पहनना शुभ होता है। इस दिन पीले कपड़े पहनना प्रकृति के साथ एक हो जाना या उसमें मिल जाने का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि हम प्रकृति से अलग नहीं है। जैसी प्रकृति ठीक वैसे ही मनुष्य भी हैं। आध्यात्म के दृष्टिकोण से पीला रंग प्राथमिकता को भी दर्शाता है। ऐसा माना जाता है कि जब ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई थी तब तीन ही प्रकाश की आभा थी लाल, पीली और नीली। इनमें से पीली आभा सबसे पहले दिखाई दी थी। इन्हीं कारणों से वसंत पंचमी को पीले कपड़े पहने जाते हैं। इस दिन पीला रंग खुशनुमा और नएपन को महसूस कराता है। वहीं पीला रंग सकारात्मकता का प्रतीक है और शरीर से जड़ता को दूर करता है। पंडितों का मानना है कि इस दिन से वसंत ऋतु की शुरुआत होती है और इस मौसम में हर जगह पीला ही दिखाई देता है। पीला रंग हमारे स्नायु तंत्र को संतुलित और मस्तिष्क को सक्रिय रखता है। इस तरह यह ज्ञान का रंग बन जाता है। यही कारण है कि ज्ञान की देवी सरस्वती के विशेष दिन पर पीले वस्त्र पहने जाते हैं।

पीले रंग का है खास महत्व

मांगलिक कार्य में पीला रंग प्रमुख होता है। यह भगवान विष्णु के वस्त्रों का रंग है। पूजा-पाठ में पीला रंग शुभ माना जाता है। केसरिया या पीला रंग सूर्यदेव, मंगल और बृहस्पति जैसे ग्रहों का कारक है और उन्हें बलवान बनाता है। इससे राशियों पर भी प्रभाव पड़ता है। पीला रंग खुशी का प्रतीक है। मांगलिक कार्यों में हल्दी का इस्तेमाल किया जाता है जो कि पीले रंग की होती है. वहीं धार्मिक कार्यों में पीले रंग के वस्त्र धारण किए जाते हैं जो कि शुभ होता है। यही कारण है कि वसंत पंचमी पर पीले रंग के कपड़े जरूर पहनने चाहिए।

बसंत पंचमी का दिन बहुत खास होता है इसलिए इस दिन देवी सरस्वती की पूजा करनी चाहिए। मां सरस्वती की पूजा से पहले इस दिन नहा-धोकर सबसे पहले पीले

वस्त्र धारण कर लें। उसके बाद देवी की मूर्ति अथव चित्र स्थापित करें और फिर सबसे पहले कलश की पूजा करें। इसके बाद नवग्रहों की पूजा करें और फिर मां सरस्वती की उपासना करें। इसके बाद पूजा के दौरान उन्हें विधिवत आचमन और स्नान कराएं। फिर देवी को श्रंगार की वस्तुएं चढ़ाएं। बसंत पंचमी के दिन देवी मां को सफेद वस्त्र अर्पित करें। साथ ही, खीर अथवा दूध से बने प्रसाद का भोग मां सरस्वती को लगाएं।

क्यों की जाती है मां सरस्वती की पूजा

हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार, ज्ञान देवी मां सरस्वती शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को ही ब्रह्माजी के मुख से प्रकट हुई थीं। इसलिए बसंत पंचमी के दिन मां सरस्वती की पूजा की जाती है। सरस्वती मां को ज्ञान की देवी कहा जाता है। इसलिए इस दिन पूरे विधि विधान से मां सरस्वती की पूजा करने से वो प्रसन्न होती हैं और भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूरी करती हैं।

भारतीय मूल की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री थीं कल्पना चावला

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में बनारसी लाल चावला के घर 17 मार्च 1962 को हुआ था। अपने चार भाई-बहनों में वे सबसे छोटी थीं। घर पर उन्हें प्यार से मोंटू कहकर पुकारा जाता था। कल्पना जब आठवीं क्लास में थीं तब उन्होंने अपने पिता से इंजीनियर बनने की इच्छा जाहिर कर दी थीअनंत अंतरिक्ष सभी के मन में एक जिज्ञासा उत्पन्न करता है। आज भी हमारा यह सपना कि एक बार अंतरिक्ष में जाएं और देखें कि वहाँ से हमारी धरती कैसी दिखती है, कइयों ने देखा होगा। लेकिन, यथार्थ में अंतरिक्ष में पहुँच पाने वाले विरले ही हैं। उन्हीं में से एक हैं भारतीय मूल की पहली महिला अंतरिक्ष-यात्री, कल्पना चावला।

जीवन के प्रेरक किस्से

हमारे देश की ऐसी ही बेटियों में शुमार हैं अंतरिक्ष परी कल्पना चावला का नाम जिनकी कल्पना सिर्फ धरती तक ही सीमित नहीं थी। उन्होंने उससे भी कहीं ऊंचे अन्तरिक्ष में उड़ान भरने के ख्वाब देखे और उन्हें साकार भी किया। कल्पना चावला पहली भारतीय महिला थीं जिन्होंने 19 नवंबर 1997 को अंतरिक्ष में अपनी प्रथम उड़ान एसटीएस 87 कोलंबिया शटल से भरी। उन्होंने अन्तरिक्ष में 372 घंटे बिताए और अरबों मील की यात्रा तय कर पृथ्वी की 252 परिक्रमाएं पूरी कीं। बचपन से ही कल्पना चावला का सपना अन्तरिक्ष की ऊंचाइयां छूने का था, वे अक्सर कहा करती थीं कि मैं अंतरिक्ष के लिए ही बनीं हूं।

कल्पना चावला का जन्म हरियाणा के करनाल में बनारसी लाल चावला के घर 17 मार्च 1962 को हुआ था। अपने चार भाई-बहनों में वे सबसे छोटी थीं। घर पर उन्हें प्यार से मोंटू कहकर पुकारा जाता था। कल्पना जब आठवीं क्लास में थीं तब उन्होंने अपने पिता से इंजीनियर बनने की इच्छा जाहिर कर दी थी। कल्पना की शुरुआती पढ़ाई करनाल के टैगोर बाल निकेतन स्कूल में हुई। पंजाब इंजीनियरिंग कॉलेज से 1982 में उन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग की डिग्री पाई और इस विषय में मास्टर्स डिग्री के लिए वे अमेरिका गईं, यहां पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात जीन पिएर्रे हैरिसन से हुई। हैरिसन एक फ्लाइंग इंस्ट्रक्टर और एविएशन लेखक थे। उन्हीं से कल्पना ने प्लेन उड़ाना सीखा। साल 1983 में कल्पना चावना ने हैरिसन से शादी की।

1984 में अमेरिकी टेक्सस यूनिवर्सिटी से एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में मास्टर्स डिग्री प्राप्त करने के पश्चात अगले पांच सालों तक कल्पना ने कैलीफोर्निया की कंपनी ओवरसेट मेथड्स में रहकर एयरोडायनमिक्स के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण अनुसंधान किए जो अनेक नामी जर्नल में प्रकाशित हुए। फ्लुइड डायनमिक्स के क्षेत्र में अपने एक महत्वपूर्ण अनुसंधान को कर 1988 में वे नासा में शामिल हो गईं। कल्पना चावला की योग्यताओं और उनके हौसलों के चलते 1995 में उन्हें नासा में बतौर अंतरिक्ष यात्री शामिल किया गया।

नासा में कुछ समय के कड़े प्रशिक्षण और कोलंबिया अंतरिक्ष यान एसटीएस-87 मिशन में विशेषज्ञ की हैसियत से काम करने के पश्चात 19 नवंबर 1997 को वह दिन आया जब कल्पना चावला को अपने सपनों को साकार करती अंतरिक्ष की पहली उड़ान भरने का मौका मिला। इस मिशन को कल्पना ने 5 दिसंबर 1997 को सफलता पूर्वक सम्पन्न किया। अपने पहले मिशन में कल्पना ने पृथ्वी की 252 कक्षाओं में 6.5 अरब मील की यात्रा की और अंतरिक्ष में 376 घंटे और 34 मिनट बिताए। अंतरिक्ष में जाने वाली वे भारतीय मूल की पहली महिला थीं।

कल्पना के प्रथम सफल अंतरिक्ष मिशन के चलते नासा ने अगले पांच साल से भी कम समय में अपने जनवरी 2003 के कोलंबिया अंतरिक्ष यान एसटीएस-107 मिशन पर उन्हें न सिर्फ दूसरी बार अंतरिक्ष में भेजने का फैसला किया, बल्कि सात सदस्यीय मिशन टीम में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान भी दिया। सोलह दिवसीय नासा के इस मिशन में कल्पना विशेषज्ञ के रूप में शामिल की गईं।

कल्पना ने अंतरिक्ष में अपनी दूसरी उड़ान 16 जनवरी, 2003 को स्पेस शटल कोलंबिया से शुरू की। 16 दिन का यह अंतरिक्ष मिशन पूरी तरह से विज्ञान और अनुसंधान पर आधारित था। 1 फरवरी, 2003 को इस अंतरिक्ष मिशन में अपनी कामयाबी के झंडे लहराता जब उनका यान धरती से करीब दो लाख फीट की ऊंचाई पर था और यान की रफ्तार करीब 20 हजार किलोमीटर प्रति घंटा थी। यह यान अगले 16 मिनट में धरती पर अमेरिका के टैक्सस शहर में उतरने वाला था और पूरी दुनिया बेसब्री से यान के धरती पर लौटने का इंतजार कर रही थी। तभी दुर्भाग्यवश अचानक नासा का इस यान से संपर्क टूट गया और एक हृदयविदारक खबर ने सभी को दहला के रख दिया कि कोलंबिया स्पेस शटल दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। इस हादसे में कल्पना चावला सहित सातों अंतरिक्ष यात्रियों की मौत हो गई। अंतरिक्ष यात्रियों की इस टीम में कल्पना चावला सहित एक इजरायली वैज्ञानिक आइलन रैमन तथा अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री विलियम मैकोल, लॉरेल क्लार्क, आइलन रैमन, डेविड ब्राउन और माइकल एंडरसन शामिल थे। वैज्ञानिकों के मुताबिक-जैसे ही कोलंबिया ने पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश किया, वैसे ही उसकी उष्मारोधी परतें फट गईं और यान का तापमान बढ़ने से यह हादसा हुआ। कल्पना चावला हमेशा कहा करती थी कि मैं अंतरिक्ष के लिए बनी हूँ, और 19 वर्ष पहले, 01 फरवरी के दिन, उसी अंतरिक्ष में विलीन हो गईं। कल्पना चावला नहीं रहीं, लेकिन उनकी कहानी, उनकी उड़ान, आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणा बनी रहेगी।

मानवता के सशक्त संरक्षक थे शिवाजी

शिवाजी भारत के पहले ऐसे शासक थे जिन्होंने स्वराज्य में सुराज की स्थापना की थी। प्रत्येक क्षेत्र में मौलिक क्रांति की। शिवाजी मानवता के सशक्त संरक्षक थे। वे सभी धर्मों का आदर और सम्मान करते थे। लेकिन हिंदुत्व पर आक्रमण कभी सहन नहीं किया। उनके राज्य में गद्दारी, किसी भी प्रकार का भ्रष्टाचार, धन का अपव्यय आदि पर उनका कड़ा नियंत्रण था। शिवाजी में परिस्थितियों को समझने का चातुर्य था। शिवाजी ने अपने जीवनकाल में भारी यश प्राप्त किया था। इतिहास बताता है कि उन्होंने शून्य से सृष्टि का निर्माण किया। एक छोटी सी जागीर के बल पर बड़े राज्य का मार्ग प्रशस्त किया। शिवाजी ने उत्तर से दक्षिण तक अपनी विजय पताका फहराने में सफलता प्राप्त की थी।

महाराष्ट्र के ही नहीं अपितु पूरे भारत के महानायक थे वीर छत्रपति शिवाजी महाराज। वह एक अत्यंत महान कुशल योद्धा और रणनीतिकार थे। वीर माता जीजाबाई के सुपुत्र वीर शिवाजी का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब महाराष्ट्र ही नहीं अपितु पूरा भारत मुगल आक्रमणकारियों की बर्बरता से आंक्रांत हो रहा था। चारों ओर विनाशलीला व युद्ध के बादलों के दृश्य पैदा हो रहे थे। बर्बर हमलावरों के आगे भारतीय राजाओं की वीरता जवाब दे रही थी उस समय शिवाजी का जन्म हुआ। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब पूरा भारत निराशा के गर्त में डूबा हुआ था। कहा जाता है कि जिस कालखंड में सेक्युलर राज्य की कल्पना पश्चिम में लोकप्रिय नहीं थी उस समय शिवाजी ने ही हिंदू परम्परा के अनुकूल सम्प्रदाय निरपेक्ष धर्मराज्य की स्थापना की। शिवाजी का जीवन रोमहर्षक तथा प्रेरणास्पद घटनाओं का भंडार है।

शिवाजी की दूरदृष्टि व्यापक थी। शिवाजी के शासनकाल में अपराधियों को दण्ड अवश्य मिलता था लेकिन साबित हो जाने पर। शिवाजी का राज्याभिषेक होने के बाद ही सच्चे अर्थों में स्वराज्य की स्थापना हुई थी। हिंदू समाज में गुलामी और निराशा के भाव के साथ जीने की भावना को शिवाजी ने ही समाप्त किया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में बहुत से लोगों ने शिवाजी के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया।

शिवाजी का जीवन वीरतापूर्ण, अतिभव्य और आदर्श जीवन है। नयी पीढ़ी को शिवाजी की जीवनी अवश्य पढ़नी चाहिये। इससे उनके जीवन में एक नयी स्फूर्ति और उत्साह का वातावरण अवश्य पैदा होगा तथा निराशा का भाव छंटेगा।

जिस समय शिवाजी का जन्म हआ था उस समय पूरे भारत की हालत वास्तव में बहुत ही चिंतनीय व दारूण हो चुकी थी। चारों तरफ हाहाकार मचा था। एक के बाद एक भारतीय राजा मुगलों के अधीन हुये जा रहे थे। बिना युद्ध किये वे उनके गुलाम होते जा रहे थे। मंदिरों को लूटा जा रहा था, गायों की हत्या हो रही थी, नारी अस्मिता तार-तार हो चुकी थी। ऐसे भयानक समय में शिवनेरी किले में माता जीजाबाई ने वीर पुत्र को जन्म दिया। माता

जीजाबाई ने बचपन से ही शिवाजी को कहानियां सुनायीं जिसका असर उनके मन पर पड़ा। शिवाजी की निर्भयता का उदाहरण उनके बचपन से ही मिलने लगा था। उन्होंने बीजापुर में सुल्तान के आगे सिर नहीं झुकाया। बस यहीं से उनकी विजय गाथा प्रारम्भ होने लग गयी थी। 16 वर्ष की अवस्था तक आते-आते मुगलों के मन में शिवाजी के प्रति भय उत्पन्न होने लग गया था। बीजापुर दरबार से लौटते समय एक बार उन्होंने रास्ते में एक कसाई जो गायों की हत्या करने के लिये जा रहा था, का हाथ काट दिया था। यह उनकी एक और वीरता निर्भयता का अनुपम उदाहरण था।

सन् 1642 में रायरेश्वर मंदिर में कई नवयुवकों ने शिवाजी के साथ स्वराज्य की स्थापना करने का निर्णय लिया। सर्वप्रथम तोरण का दुर्ग जीता। उसके बाद उनका एक के बाद एक विजय अभियान चल निकला। 15 जनवरी 1656 को सम्पूर्ण जावली, रायरी सहित आधा दर्जन किलों पर कब्जा किया। सूपा, कल्याण, दाभोल, चोल बंदरगाह पर भी नियंत्रण कर लिया। 30 अप्रैल 1657 की रात्रि को जुन्नरनगर पर विजय प्राप्त की। शिवाजी की सफलताओं से घबरा कर तत्कालीन मुगल शासक ने शिवाजी को आश्वस्ति पत्र भेजा था। लेकिन शिवाजी यही नहीं रूके उनका अभियान तेज होता चला गया। बाद में अफजल खां शिवाजी को पकड़ने निकला लेकिन शिवाजी उससे कहीं अधिक चतुर निकले और अफजल खां मारा गया। इसके बाद शिवाजी के यश की कीर्ति पूरे भारत में ही नहीं अपितु यूरोप में भी सुनी गयी। विभिन्न पड़ावों, राजनीति और युद्ध से गुजरते हुए ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन शिवाजी का राज्याभिषेक किया गया। भारतीय इतिहास में पहली मजबूत नौसेना का निर्माण शिवाजी के कार्यकाल में माना गया है। शिवाजी की नौसेना में युद्धपोत भी थे तथा भारी संख्या में जहाज भी थे।

शिवाजी केवल युद्ध में ही निपुण नहीं थे अपितु उन्होंने कुशल शासन तंत्र का भी निर्माण किया। राजस्व, खेती, उद्योग आदि की उत्तम व्यवस्था ईजाद की। शिवाजी के शासनकाल में किसी भी प्रकार का तुष्टीकरण नहीं होता था। शिवाजी को एक कुशल शासक और प्रबुद्ध सम्राट के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कई बार शुक्राचार्य तथा कौटिल्य को आदर्श मानकर कूटनीति का सहारा लिया। उनकी आठ मंत्रियों की मंत्रिपरिषद थी जिन्हें अष्टप्रधान कहा जाता था। इसमें मंत्रियों के प्रधान को पेशवा कहा जाता था। वह एक समर्पित हिंदू थे तथा वह धार्मिक सहिष्णु भी थे। उन्होंने कई मस्जिदों के निर्माण में भी सहायता की थी और उनकी सेना में मुसलमान सैनिक भी थे। वह अच्छे सेनानायक के साथ अच्छे कूटनीतिक भी थे।

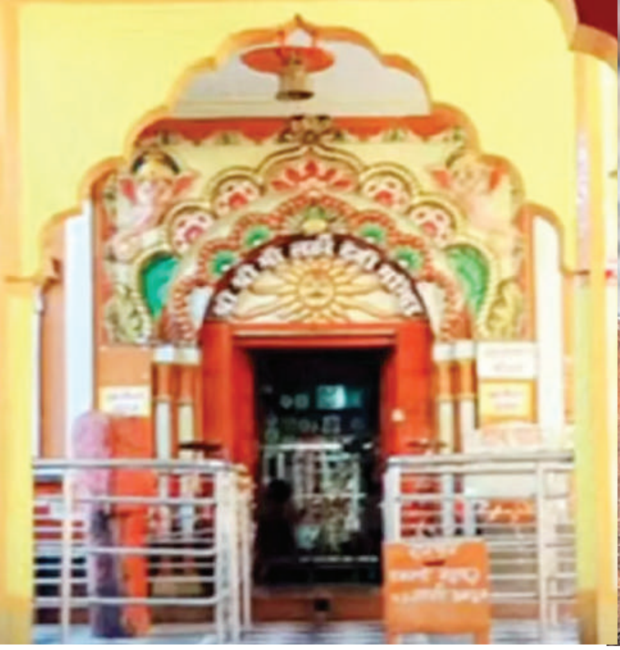

तीनों पहर बदलता है लहर देवी मंदिर माता का स्वरुप

दुनियां भर से आते हैं भक्त चमत्कार देखने

लहर की देवी मंदिर झांसी के सीपरी में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण बुंदेलखंड के चंदेल राज के समय किया गया था। यहां के राजा का नाम परमाल देव था। राजा के दो भाई थे, जिनका नाम आल्हा-उदल था। आल्हा की पत्नी और महोबा की रानी मछला का पथरीगढ़ के राजा ज्वाला सिंह ने अपहरण कर लिया था। ऐसा कहा जाता है कि आल्हा ने ज्वाला सिंह को पराजित करने के लिए और ज्वाला सिंह से रानी को वापस लाने के लिए अपने भाई के सामने अपने पुत्र की बलि इसी मंदिर में चढ़ा दी थी। लेकिन देवी ने इस बलि को स्वीकर नहीं किया और उस बालक को जीवित कर दिया। मान्यताओं के अनुसार जिस पत्थर पर आल्हा ने अपने पुत्र की बलि दी थी, वह पत्थर आज भी इसी मंदिर में सुरक्षित है।

माना जाता है कि इस मंदिर में मौजूद लहर की देवी की मूर्ति दिन में तीन बार स्वरूप बदलती है। प्रातःकाल में बाल्यावस्था में, दोपहर में युवावस्था में और सायंकाल में देवी मां प्रौढ़ा अवस्था में मां नजर आती हैं। हर पहर में देवी का अलग-अलग श्रृंगार किया जाता है। प्रचलित कथाओं के अनुसार कालांतर में पहूज नदी का पान पूरे क्षेत्र तक पहुंच जाता है। इस नदी की लहरें माता के चरणों को छूती थीं इसलिए मंदिर में स्थापित मां की मूर्ति को लहर की देवी कहा जाता है। मन्दिर में विराजमान देवी तान्त्रिक हैं इसलिए यहाँ पर अनेक तान्त्रिक क्रियाएँ भी होती हैं। नवरात्रों में माता के दर्शन के लिए यहाँ हज़ारों की संख्या में भीड़ उमड़ती है। नवरात्र में अष्टमी की रात को यहाँ भव्य आरती का आयोजन होता है।

लहर की देवी को मनिया देवी के रूप में भी जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि लहर की देवी, मां शारदा की बहन हैं। यह मंदिर 8 शिला स्तंभों पर खड़ा है। मंदिर के प्रत्येक स्तंभ पर आठ योगिनी अंकित हैं। इस प्रकार यहां 64 योगिनी मौजूद हैं। मंदिर परिसर में भगवान गणेश, शंकर, शीतला माता, अन्नपूर्णा माता, भगवान दत्तात्रेय, हनुमानजी और काल भैरव का भी मंदिर स्थित है। भारत के हर हिस्से में कई प्राचीन देवी-देवताओं के मंदिर हैं। इनमें से कई मंदिर का इतिहास हजारों साल से भी अधिक पुराना है। कहीं माता को मनसा देवी के नाम से जाना जाता है तो कहीं माता ज्वाला जी के रूप में विराजमान हैं, माता के भक्त उनके सभी रूपों की पूजा सच्चे मन और भक्तिभाव से करते हैं। आज के इस लेख में हम आपको एक बेहद चमत्कारी मंदिर के बारे में बताने जा रहे हैं। यहाँ स्थापित माता की मूर्ति तीन पहर में अलग-अलग स्वरुप बदलती है।

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

खजुराहो

मध्य प्रदेश के छतरपुर शहर का खजुराहो शहर भारत के पर्यटन मानचित्र में अहम स्थान रखता है क्योंकि देश-विदेश से बड़ी संख्या में सैलानी यहां घूमने के लिए आते हैं। धार्मिक पर्यटन के लिए विख्यात यह शहर यहां स्थित मंदिरों की वास्तुकला, भव्यता और स्थापित कामुक मूर्तियों के लिए भी प्रसिद्ध है। भले धार्मिक स्थलों में ऐसी चीजें वर्जित मानी जाती हों लेकिन मंदिरों की दीवारों और खंभों पर लगी इन मूर्तियों में दर्शाई गई कामुकता सकारात्मक संदेश देने के लिए है। यह मूर्तियां सेक्स की कला तो सिखाती ही हैं साथ ही कुछ लोग कामसूत्र के साथ भी इनका संबंध जोड़कर देखते हैं। सेक्स जीवन का एक अंग है, सच्चाई है और इसमें भी पवित्रता और संतुष्टि आवश्यक है, यह संदेश हमें यहां मिलता है।

खजुराहो में हर साल फरवरी के महीने में विश्व प्रसिद्ध खजुराहो नृत्य महोत्सव का आयोजन भी होता है हालांकि इस वर्ष कोरोना से उपजे हालात को देखते हुए इसका आयोजन नहीं हो सका है। खजुराहो के मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर की सूची में भी शामिल हैं। खजुराहो के मंदिरों को इन कामुक मूर्तियों के कारण कामसूत्र मंदिरों के नाम से भी जाना जाता है। देखा जाये तो हर मनुष्य के जीवन में एक ऐसा वसंती पड़ाव जरूर आता है जब दुनिया के लोकाचारों से दूर अपनी रुमानी दुनिया को भरपूर जी लेने की इच्छा मन में प्रबल हो उठती है। नवविवाहित जोड़े अपने नए जीवन की शुरुआत किसी ऐसी अनूठी जगह पर करना चाहते हैं जहां न तो बड़े-बजुर्गों का परदा हो न ही छुप-छुपकर प्यार करने की मजबूरी।

विवाह के कई साल बाद नीरसता से भरी गृहस्थी में भी प्यार का रस भरने के लिए यह आवश्यक है कि एक बार फिर कहीं दूर अपनी रोमांटिक दुनिया तलाशी जाए। रोमांस के लिए वैसे तो भारत भर में कई जगहें हैं लेकिन खजुराहो एक ऐसी जगह है जहां कि आप दोनों घर की टेंशन से तो दूर होंगे ही साथ ही प्रेम-प्यार का इतिहास भी जान पाएंगे। जब प्यार की बात कहते हैं तो वैसे भी खजुराहो का ही नाम पहले स्थान पर आता है। काम

कला की विभिन्न मुद्राओं में तराशी गई मूर्तियों को देखकर सहज ही कल्पना की जा सकती है कि भारतीय समाज पहले यौन संबंधों को लेकर कितना व्यापक नजरिया रखता था।

यहां पहुंचकर जब आप सैर को निकलेंगे तो रास्ते में पड़ने वाले मंदिरों और भवनों को देखकर आश्चर्यचकित हो जाएंगे। यह भवन चाहे आज जीर्णशीर्ण अवस्था में हों लेकिन इनकी शिल्पकला की दाद तो आपको देनी ही पड़ेगी। शायद यही कारण है कि यहां पर आपको कोई न कोई शोधार्थी भी मिल ही जाएगा जोकि यहां उपलब्ध मंदिरों या भवनों में से किसी न किसी विषय पर शोध कर रहा होगा।

हवाई मार्ग से आना चाहें तो खजुराहो हवाई अड्डा है जोकि छतरपुर से लगभग 45 मिनट की दूरी पर है। यह वाराणसी, दिल्ली और आगरा जैसे शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। रेल मार्ग से आना चाहें तो निकटतम रेलवे स्टेशन छतरपुर एवं खजुराहो रेलवे स्टेशन हैं जो मध्य प्रदेश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है। यह दिल्ली, ग्वालियर, आगरा, मथुरा, जम्मू, अमृतसर, मुंबई, बैंगलोर, भोपाल, चेन्नई, गोवा और हैदराबाद जैसे शहरों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

सामाजिक मुक्ति का संदेश देते हैं संत रविदास

"संत रविदास एक महान संत थे। उनके बारे में एक रोचक कथा भी प्रचलित है। इस कथा के अनुसार एक बार एक पंडित जी गंगा स्नान के लिए उनके पास जूते खरीदने आए। पंडित जी ने गंगा पूजन की बात रविदास को बतायी। उन्होंने पंडित महोदय को बिना पैसे लिए ही जूते दे दिए और निवेदन किया कि उनकी एक सुपारी गंगा मैया को भेंट कर दें। संत की निष्ठा इतनी गहरी थी कि पंडित जी ने सुपारी गंगा को भेंट की तो गंगा ने खुद उसे ग्रहण किया। संत रविदास के जीवन का एक प्रेरक प्रसंग यह है कि एक साधु ने उनकी सेवा से प्रसन्न होकर, चलते समय उन्हें पारस पत्थर दिया और बोले कि इसका प्रयोग कर अपनी दरिद्रता मिटा लेना। कुछ महीनों बाद वह वापस आए, तो संत रविदास को उसी अवस्था में पाकर हैरान हुए। साधु ने पारस पत्थर के बारे में पूछा, तो संत ने कहा कि वह उसी जगह रखा है, जहां आप रखकर गए थे।

सतगुरु रविदास भारत के उन महान संतों में से एक हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से सारे संसार को एकता, भाईचारा का संदेश दिया। साथ ही उन्होंने जीवन भर समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया। संत रविदास अपने समकालीन चिंतकों से पृथक थे उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। वह जन्म तथा जाति आधारित वर्ण व्यवस्था के भी विरूद्ध थे।

रविदास जयंती प्रमुख त्योहार है। इस साल गुरु रविदास जयंती 16 फरवरी को है। माघ पूर्णिमा के दिन हर साल गुरु रविदास जी की जयंती मनायी जाती है। संत शिरोमणि रविदास का जीवन ऐसे अद्भुत प्रसंगों से भरा है, जो दया, प्रेम, क्षमा, धैर्य, सौहार्द, समानता, सत्यशीलता और विश्व-बंधुत्व जैसे गुणों की प्रेरणा देते हैं। 14वीं सदी के भक्ति युग में माघी पूर्णिमा के दिन रविवार को काशी के मंडुआडीह गांव में रघु व करमाबाई के पुत्र रूप में इन्होंने जन्म लिया। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से आदर्श समाज की स्थापना का प्रयास किया। रविदास जी के सेवक इनको सतगुरु, जगतगुरू आदि नामों से भी पुकारते हैं।

संत रविदास बहुत प्रतिभाशाली थे तथा उन्होंने विभिन्न प्रकार के दोहों तथा पदों की रचना की। उनकी रचनाओं की विशेषता यह थी कि उनकी रचनाओं में समाज हेतु संदेश होता था। उन्होंने

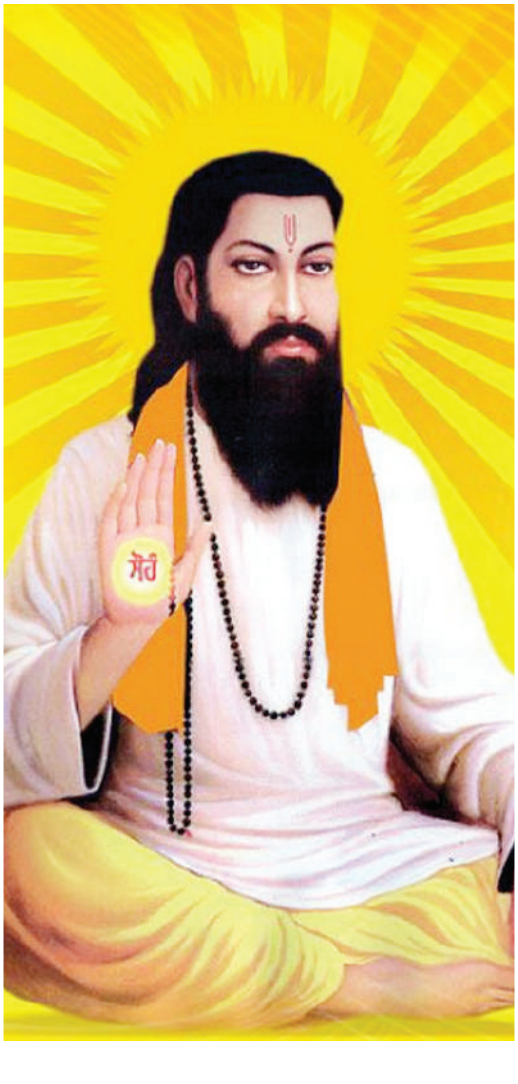

अपनी रचनाओं के द्वारा जातिगत भेदभाव को मिटा कर सामाजिक एकता को बढ़ाने पर बल दिया। उन्होंने मानवतावादी मूल्यों की स्थापना कर ऐसे समाज की स्थापना पर बल दिया जिसमें किसी प्रकार का भेदभाव, लोभ-लालच तथा दरिद्रता न हो।

संत रविदास पूरे भारत में बहुत लोकप्रिय थे। उन्हें पंजाब में रविदास कहा जाता था। उत्तर प्रदेश, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में उन्हें रैदास के नाम से भी जाना जाता था। बंगाल में उन्हे रूईदास के नाम से जाना जाता है। साथ ही गुजरात तथा महाराष्ट्र के लोग उन्हें रोहिदास के नाम से भी जानते थे। संत रविदास बहुत दयालु प्रवृत्ति के थे । वह बहुत से लोगों को बिना पैसे लिए जूते दे दिया करते थे। वह दूसरों की सहायता करने में कभी पीछे नहीं हटते थे। साथ ही उन्हें संतों की सेवा करने में भी बहुत आनंद आता था।

संत गुरु रविदास बिना किसी आदर्शवादी में न पड़ते हुए व्यावहारिक जीवन की वस्तु स्थिति को स्वीकारते हुए अपनी बात कही है। उनकी चेतना में उनकी जातीय-अस्मिता इस प्रकार व्याप्त है कि उसी मानदण्ड से वह अपने जीवन-व्यवहार एवं कार्य-व्यापार की हर गतिविधि का अवलोकन एवं मूल्यांकन करते हैं। उनका आत्मनिवेदन उनकी जातिगत विडम्बनाओं की उपस्थिति के स्वीकार के साथ व्यक्त हुआ है। संत गुरु रविदास का यह वैशिष्ट्य संकेत करता है कि उनकी अभिव्यक्ति में सिर्फ आध्यात्मिक क्षेत्र की मुक्ति का स्वप्न नहीं बल्कि सामाजिक मुक्ति का स्वप्न भी विद्यमान है।

वास्तु के अनुसार घर के किस हिस्से में करवाना चाहिए किस रंग का पेंट

रंगों का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है क्योंकि रंगों के कारण ही हमें अपनी दुनिया खूबसूरत दिखाई देती है। हर व्यक्ति के जीवन में अलग-अलग रंगों का अलग-अलग महत्त्व होता है। रंग बहुत हद तक हमारे मूड और सोच को प्रभावित करते हैं और इसीलिए घर में पेंट करवाते समय रंगों का ख़ास ख्याल रखना चाहिए। वास्तु और फेंगशुई में अलग-अलग रंगों को अलग-अलग तत्वों का प्रतीक माना गया है। वास्तुशास्त्र के मुताबिक घर की दीवारों के रंग का हमारे जीवन और सुख-समृद्धि पर बहुत असर होता है। आज के इस लेख में हम आपको फेंगशुई के अनुसार घर के विभिन्न हिस्सों के लिए बताए गए रंगों की जानकारी देंगे **नारंगी रंग**

यह रंग हमारे मन में भावनाओं और ऊर्जा का संचार करता है। नारंगी रंग से मूड अपलिफ्ट होता है इसलिए इस रंग को आप अपने किचन या डाइनिंग रूम में इस्तेमाल कर सकते हैं। नारंगी रंग आध्यात्म से जुड़ा हुआ रंग है इसलिए पूजा के कक्ष के लिए भी इस रंग का प्रयोग किया जा सकता है।

पीला रंग

पीला रंग गर्माहट का एहसास देता है। इसके साथ ही यह रंग सुकून और रौशनी देने वाला होता है। पीला रंग धन-समृद्धि और ताकत का प्रतीक है इसलिए ड्राइंग रूम, किचन या ऑफिस में इस रंग का प्रयोग किया जाए सकता है।

पर्पल

यह रंग धर्म और अधाय्त्म का प्रतीक है। इस रंग का हल्का शेड मन को सुकून और ताज़गी से भर देता है। पूजा के कक्ष के लिए इस रंग का प्रयोग किया जा सकता है।

हरा

हरा रंग हमारे मन को ताज़गी से भर देता है, इसके साथ ही यह रंग नई शुरुआत और आपसी मेल को भी दर्शाता है। हरे रंग के हलके शेड का प्रयोग बच्चों के कमरे, गेस्ट रूम, बेडरूम या ड्राइंग रूम के लिए किया जा सकता है।

नीला

नीला रंग शांति और सुकून देने वाला रंग है। यह रंग आराम का माहौल पैदा करता है इसलिए घर के ऐसे कमरे जहाँ आप ज़्यादा समय बिताते हैं, वहां इस रंग का इस्तेमाल करना चाहिए। आप बेडरूम या ड्राइंग रूम के लिए नीले रंग को सेलेक्ट कर सकते हैं।

घर में मौजूद वास्तु दोष और नेगेटिव एनर्जी को दूर करने के लिए जरूर रखें ये चीज़ें

वास्तुशास्त्र के अनुसार यदि घर में कोई वास्तु दोष तो इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी नई जगह जाने के बाद हम अच्छा महसूस नहीं करते हैं या बीमार हो जाते हैं। इसी तरह अगर आपके घर में बार-बार लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं, परिवार के सदस्य बीमार पड़ रहे हों या काम बनते-बनते रुक जाएं तो समझ लीजिए कि घर में नकारत्मक ऊर्जा है। वास्तुशास्त्र में नकारत्मकता को खत्म करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने के कई उपाय बताए गए हैं। इन उपायों के जरिए आप अपने घर में पॉजिटिव एनर्जी ला सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि घर में किन चीज़ों को रखने से घर में पॉजिटिव एनर्जी आती है -

पारद शिवलिंग

घर में सकारात्मकता और खुशहाली लाने के लिए पारद शिवलिंग बहुत शुभ माना जाता है। घर के मंदिर में पारद शिवलिंग रखने से भगवन शिव की कृपा सदैव बनी रहती है। इस से धन का लाभ होता है और मान-सम्मान में वृद्धि होती है।

श्री यंत्र

ज्योतिषशास्त्र में श्री यंत्र का विशेष महत्व है। घर में क्रिस्टल का श्री यंत्र रखना शुभ माना जाता है। इससे आस-पास की नकारात्मक ऊर्जा खत्म होती है और घर में पॉज़िटिव एनर्जी आती है। श्री यंत्र को धन के स्थान पर रखने से धन लाभ होता है। ज्योतिषशास्त्रों के अनुसार

श्री यंत्र बेहद प्रभावशाली माना जाता है। इससे जीवन की समस्याएं कम होती हैं और रुके हुए काम बन जाते हैं।

ताजे फूल

घर के हर कमरे में ताजे खुशबूदार फूल रखने से आस-पास की नेगेटिव एनर्जी खत्म हो जाती है। ताजे फूलों की खुशबू से मन तो प्रसन्न होता ही है साथ ही घर में पॉजिटिविटी भी आती है।

लाफिंग बुद्धा

घर या ऑफिस में लाफिंग बुद्धा रखना बहुत लकी माना जाता है। घर में लाफिंग बुद्धा रखने से घर में खुशियाँ और पॉजिटिव एनर्जी आती है।

इसे भी पढ़ें- बसंत पंचमी पर माँ सरस्वती को प्रसन्न करने के लिए पढ़ें यह मंत्र, जानें तिथि, शुभ मुहूर्त और पूजन विधि

इंडोर प्लांट्स

घर में हरे-भरे पौधे लगाने से सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है। हिन्दू धर्म के अनुसार घर के आँगन में तुलसी का पौधा लगाना बहुत शुभ माना जाता है। इसके अलावा आप कई अन्य इंडोर प्लांट्स जैसे मनी प्लांट, एरोकेरिया आदि घर के अंदर लगा सकते हैं।

सुगंधित चीज़ें

गंदी और बदबूदार जगहों पर नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव ज़्यादा होता है। घर में पॉजिटिव एनर्जी लाने के लिए घर में सुगंधित अगरबत्ती, मोमबत्ती या अरोमा ऑयल का इस्तेमाल करें। यह भी ध्यान रखें कि अगर घर में कोई बदबूदार चीज़ हो तो उसे बाहर फेंक दें और घर को साफ़-सुथरा रखें।

सीने में जलन से हैं परेशान तो आजमाएं ये आसान घरेलू नुस्खे

कई बार पेट में एसिड आवश्यकता से अधिक मात्रा में बन जाता है जिससे सीने में जलन महसूस होती है। इसके लिए आमतौर पर लोग दवाइयों का सेवन करते हैं। लेकिन आप कुछ घरेलू उपचारों से भी सीने में जलन की समस्या को ठीक कर सकते हैं।

अक्सर खाना खाने के बाद सीने में जलन होने लगती है। यह एक आम समस्या है जिससे कई लोग परेशान हैं। दरअसल खाना पाचन की प्रक्रिया में हमारा पेट एक ऐसे एसिड को बनाता है जो खाने को पचाने में मदद करता है। लेकिन कई बार यह एसिड आवश्यकता से अधिक मात्रा में बन जाता है जिससे सीने में जलन महसूस होती है। इसके लिए आमतौर पर लोग दवाइयों का सेवन करते हैं। लेकिन आप कुछ घरेलू उपचारों से भी सीने में जलन की समस्या को ठीक कर सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको एसिडिटी या सीने की जलन को दूर करने के कुछ कारगर घरेलू नुस्खे बताने जा रहे हैं -

अदरक

पेट की जलन में अदरक का सेवन बहुत फायदेमंद माना जाता है। अगर आपको खाना खाने के बाद सीने में जलन की शिकायत है तो खाना खाने के बाद रक छोटा टुकड़ा अदरक का चबाकर खाएं या अदरक की चाय बनाकर पिएँ। इससे आपको सीने में जलन से जल्द आराम मिलेगा।

अजवाइन

एसिडिटी या पेट में जलन होने पर आप अजवाइन के पानी का सेवन कर सकते हैं। इसके लिए एक चम्मच अजवाइन को एक कप पानी में उबाल लें। जब पानी आधा हो जाए तो इसे गैस से उतार लें और ठंडा कर लें। जब पानी ठंडा हो जाए तो इसमें काला नमक मिलाकर पिएं। ऐसा करने से एसिडिटी की समस्या से जल्द छुटकारा मिलेगा।

गुड़

आपने देखा होगा कि खाना खाने के बाद मीठे में गुड़ दिया जाता है। दरअसल, गुड़ हमारे पेट के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। यह पाचन क्रिया को तेज करता है और पेट में एसिड को बढ़ने से रोकता है। अगर आप एसिडिटी की समस्या से परेशान हैं तो खाना खाने के बाद थोड़ा सा गुड़ खाकर एक गिलास पानी पी लें।

नींबू

नींबू में विटामिन सी की भरपूर मात्री होती है। सीने में जलन होने पर नींबू और काला नमक पानी में मिला कर पिएँ। इससे बाइल जूस बनाता है, जो खाने को पचाने का काम करता है। ऐसा करने से सीने में जलन नहीं होगी।

डैंड्रफ की समस्या से हैं परेशान तो एलोवेरा का यूं करें इस्तेमाल

डैंड्रफ से निजात पाने के लिए एलोवेरा जेल का इस्तेमाल करना बहुत ही आसान है। आप स्टोर से खरीदे गए जेल का उपयोग कर सकते हैं या इसे अपने एलोवेरा के पौधे से निकाल सकते हैं। इस एलोवेरा जेल को शैंपू करने से 30 मिनट पहले अपने स्कैल्प और बालों पर लगाएं। ठंड के मौसम में अक्सर डैंड्रफ की समस्या काफी बढ़ जाती है। दरअसल, ठंडी हवाओं के कारण स्कैल्प का रूखापन बढ़ जाता है और एक पतली लेयर अलग से नजर आने लगती हैं। जो बाद में डैंड्रफ का रूप ले लेती है। अमूमन लोग इस डैंड्रफ से मुक्ति पाने के लिए तरह-तरह के हेयर केयर प्रोडक्ट्स का सहारा लेते हैं। इसे उन्हें फायदा तो कम होता है लेकिन पैसे बहुत अधिक खर्च हो जाते हैं। ऐसे में अगर आप एक नेचुरल तरीके से डैंड्रफ को अलविदा कहना चाहते हैं तो एलोवेरा को अपने हेयर केयर रूटीन का हिस्सा बना सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको बता रहे हैं डैंड्रफ से निजात पाने के लिए एलोवेरा का इस्तेमाल किस तरह करें-

बालों में लगाएं एलोवेरा जेल

डैंड्रफ से निजात पाने के लिए एलोवेरा जेल का इस्तेमाल करना बहुत ही आसान है। आप स्टोर से खरीदे गए जेल का उपयोग कर सकते हैं या इसे अपने एलोवेरा के पौधे से निकाल सकते हैं।

इस एलोवेरा जेल को शैंपू करने से 30 मिनट पहले अपने स्कैल्प और बालों पर लगाएं। प्रभावी परिणामों के लिए आप इसे सप्ताह में दो बार दोहरा सकते हैं।

बनाएं एलोवेरा और नींबू का हेयर मास्क

एलोवेरा की तरह ही नींबू भी डैंड्रफ के इलाज के लिए बेहद प्रभावी रूप से काम करता है और आप एलोवेरा और नींबू को मिक्स करके बालों में लगा सकते हैं। इसके लिए आधा कप एलोवेरा जेल एक बाउल में लें और उसमें 2 बड़े चम्मच नींबू का रस डालकर मिक्स करें।

नींबू और कपूर से कई समस्याएं होंगी दूर

यूं तो कपूर की मदद से ही सिर की जुओं से काफी हद तक छुटकारा मिलता है, लेकिन अगर आपको लाभ नहीं मिल पा रहा हैं तो ऐसे में आप कपूर के साथ नींबू को मिक्स करके इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, इस उपाय में आप सुहागे का भी अवश्य प्रयोग करें।

दांत दर्द को कहें बाय-बाय

अगर आपको दांत में दर्द की समस्या होती हैं तो ऐसे में आप घरेलू इलाज के रूप में नींबू और कपूर के मिश्रण का इस्तेमाल कर सकते हैं। दांत में दर्द होने पर प्रभावित स्थान पर नींबू का रस और कपूर मिलाकर लगाएं। इसे कुछ देर के लिए ऐसे ही रहने दें। अंत में आप कुल्ला कर लें। आप चाहें तो इसे ऐसे ही लगा भी रहने दे सकते हैं। इससे ना केवल आपको दांत दर्द से राहत मिलेगी, बल्कि कैविटी को भी खत्म करने में मदद मिलेगी।

पैरों का रखें ख्याल

अगर आप घर पर ही अपने पैरों का ख्याल बेहद आसान तरीके से रखना चाहते हैं तो ऐसे में आप नींबू के रस और कपूर का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह मिश्रण ना केवल आपके पैरों को क्लीन करता है, बल्कि टैनिंग को

भी दूर करता है। पैरों की क्लीनिंग करने के लिए आप पहले एक टब में गुनगुना पानी लें। इसके बाद, आप इसमें नींबू का रस और कपूर डालकर मिक्स करें। अब आप अपने पैरों को इसमें डुबोकर रखें। कुछ देर तक इसे डिप करें और फिर आप फुट स्क्रबर की मदद से अपने पैरों की क्लीनिंग करें। ऐसा करने से पैरों की गंदगी आसानी से निकल जाएगी। अंत में, पैरों को साफ पानी की मदद से क्लीन करें।

दलिए की मदद से करें अपनी स्किन की केयर

अंडे की सफेदी और दलिए की मदद से एक बेहतरीन फेस पैक बनाया जा सकता है। यह आपकी स्किन को अधिक यूथफुल व टाइटन बनाने में मदद करता है। इस फेस पैक को बनाने के लिए आप एक बाउल में दो बड़े चम्मच दलिया लें आमतौर पर, लोग घरों में दलिए का सेवन करना पसंद करते हैं। कई पोषक तत्वों से युक्त दलिया या ओटमील सेहत के लिए बेहद ही गुणकारी माना गया है। हालांकि, यह जरूरी नहीं है कि ओटमील को आप सिर्फ अपनी डाइट का ही हिस्सा बनाएं। यह आपकी स्किन का ख्याल भी उतनी ही बेहतरीन तरीके से रख सकता है। भले ही आपकी स्किन ऑयली हो या रूखी, लेकिन फिर भी दलिए की मदद से कुछ फेस पैक बनाए जा सकते हैं और आप उसे अपनी स्किन पर इस्तेमाल कर सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको दलिए की मदद से बनने वाले कुछ फेस पैक्स के बारे में बता रहे हैं-

एग व्हाइट और दलिए से बनाएं फेस पैक

अंडे की सफेदी और दलिए की मदद से एक बेहतरीन फेस पैक बनाया जा सकता है। यह आपकी स्किन को अधिक यूथफुल व टाइटन बनाने में मदद करता है। इस फेस पैक को बनाने के लिए आप एक बाउल में दो बड़े चम्मच दलिया लें। अब इसमें एक अंडे का सफेद भाग

डालें और अच्छी तरह से ब्लेंड करें। अब आप इस मिश्रण को अपने चेहरे पर लगाएं। करीबन 5-10 मिनट बाद अपने चेहरे को गुनगुने चेहरे से धो लें।

पपीते और दलिए का फेस पैक

यह एक नरिशिंग फेस पैक है, जो आपके फेस को एक रिफ्रेशिंग फील देता है। इस फेस पैक को बनाने के लिए कच्चे पपीते का एक छोटा टुकड़ा लें और उसे अच्छी तरह मैश कर लें। अब इसमें दो बड़े चम्मच दलिया, एक चम्मच बादाम का तेल और थोड़ा सा पानी मिलाकर पैक बना लें। इसे अपने चेहरे पर 15 मिनट के लिए लगाएं और फिर धो लें।

बेसन और दलिए का पैक

यह एक ऐसा फेस पैक है, जो हर स्किन टाइप पर अच्छा लगता है। इस पैक को बनाने के लिए आप 1 बड़ा चम्मच बेसन बाउल में डालें। अब इसमें 1 बड़ा चम्मच दलिया, 1 चम्मच शहद व गुलाब जल डालकर अच्छी तरह मिक्स करें। आप इससे एक स्मूद पेस्ट तैयार करें। अब अपने फेस को क्लीन करके इस पैक को चेहरे पर लगाएं और लगभग 15 मिनट के लिए इसे ऐसे ही रहने दें। अंत में, पानी की मदद से चेहरे को वॉश करें और अपनी स्किन को हमेशा की तरह मॉइस्चराइज़ करें।

विंटर में बनाएं यह क्विक हेयरस्टाइल्स और दिखें स्टनिंग

ठंड के मौसम में महिलाएं अपने आउटफिट से लेकर फुटवियर तक में बदलाव करती हैं, लेकिन आपके हेयरस्टाइल का क्या। आमतौर पर इस मौसम में, हम खुद को पूरी तरह कवर करते हैं, फिर भले ही वह हमारा सिर क्यों ना हो। तो ऐसे में आपको ऐसे कुछ हेयरस्टाल्स बनाने की जरूरत होती है, जिसे आप बिनी या कैप के नीचे भी बेहद आसानी से कैरी कर सकें। इतना ही नहीं, आपके हेयरस्टाइल्स विंटर वियर को भी कॉम्पलीमेंट करने चाहिए। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे ही हेयरस्टाइल्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें विंटर के मौसम में आसानी से बनाया जा सकता है और यह बेहद क्विक बन जाते हैं-

टू पोनीटेल लुक

अगर आप विंटर में एक क्विक हेयरस्टाइल की तलाश में हैं तो ऐसे में आप टू पोनीटेल हेयरस्टाइल को बना सकती है। इसके लिए आप बालों की मिडिल सेक्शन करें और कॉम्ब करते हुए रबर लगाकर पोनीटेल बनाएं। आप इस हेयरस्टाइल में एक वॉल्यूम एड करने के लिए पोनीटेल हेयर को हल्का कर्ल लुक दे सकती हैं।

बबल पोनीटेल हेयरस्टाइल

यह एक बेहद ही स्टाइलिश हेयरस्टाइल है, जो बेहद ही क्विक बन जाता है। इस हेयरस्टाइल को बनाने के लिए आप पहले बालों को कॉम्ब करें और फिर हाई पोनीटेल बना लें। इसके बाद आप थोड़ी-थोड़ी दूरी पर बालों में रबर लगाती जाएं। बस आपके बालों में बबल लुक रेडी है।

ओपन हेयर विद क्लिप हेयरस्टाइल

अगर आप एक बिगनर हैं तो ऐसे में आप इस हेयरस्टाइल को ट्राई कर सकती हैं। इसके लिए आपको बहुत कुछ करने की आवश्यकता नहीं है। बस आप बालों को कॉम्ब करें और साइड्स में क्यूट क्लिप लगाएं। आप चाहें तो बालों के एंड्स में हल्का वेव्स लुक भी दे सकती हैं।

हाफ अप एंड डाउन हेयरस्टाइल

यह हेयरस्टाइल किसी भी तरह के आउटफिट के साथ अच्छा लगता है। इस हेयरस्टाइल को बनाने के लिए आप पहले बालों को कॉम्ब करें। इसके बाद आपको बालों में सेक्शन नहीं करना है। अब आप क्राउन एरिया से बाल लेकर पीछे ले जाएं और फिर आप क्लचर लगाकर बालों को फिक्स करें। अगर आपके बाल मीडियम लेंथ या लंबे हैं तो ऐसे में यह हेयरस्टाइल बेहद की अच्छा लगता है।

फेस पैक में भूलकर भी ना करें यह इंग्रीडिएंट्स इस्तेमाल, स्किन को होगा नुकसान

कुछ लोग अपने स्किन केयर रूटीन में बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुंहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है। लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है।

स्किन की केयर का सबसे बेहतर तरीका है नेचुरल चीजों को इस्तेमाल करना। आमतौर पर, अपनी स्किन को पैम्पर करने के लिए हम घर पर ही फेस पैक बनाना अधिक पसंद करते हैं और इसके लिए किचन में ही मौजूद कई तरह के इंग्रीडिएंट्स को यूज भी करते हैं। लेकिन वास्तव में यह सोचना कि किचन में मौजूद हर इंग्रीडिएंट आपकी स्किन को लाभ पहुंचाएगा, यह गलत है। कभी-कभी कुछ नेचुरल इंग्रीडिएंट्स भी आपकी स्किन पर विपरीत असर डाल सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे ही नेचुरल इंग्रीडिएंट्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको अपने स्किन केयर रूटीन या फेस पैक के मिक्सचर में शामिल करने से बचना चाहिए-

नींबू एक ऐसा इंग्रीडिएंट है, जिसे अमूमन महिलाएं अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल करती हैं या फिर फेस पैक का हिस्सा बनाती हैं। लेकिन हर किसी को नींबू का इस्तेमाल फेस पर करने की सलाह नहीं दी जाती है। दरअसल, नींबू प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है और त्वचा में जलन पैदा कर सकता है। इसके अलावा, इसका तेल यूवी किरणों के संपर्क में आने पर आपकी त्वचा पर फोटोटॉक्सिक प्रतिक्रिया पैदा कर सकता है।

इसका मतलब है कि यह फफोले या चकत्ते पैदा कर सकता है। इसलिए, नींबू का इस्तेमाल बेहद सोच-समझकर करें।

बेकिंग सोडा

कुछ लोग अपने स्किन केयर रूटीन में बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुंहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है। लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है। दरअसल, बेकिंग सोडा में कई कंपाउंड होते हैं जो कि आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं और स्किन की एलर्जी का कारण बन सकता है।

विनेगर

नींबू की तरह ही विनेगर का इस्तेमाल भी फेस पैक में करना अच्छा आइडिया नहीं है। दरअसल, सिरका में उच्च पीएच होता है और प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है। यह जलन, सनबर्न, रासायनिक जलन आदि का कारण बन सकता है। इसलिए जहां तक संभव हो, आप विनेगर को फेस पैक में इस्तेमाल करना अवॉयड करें।

चीनी

कई फेस स्क्रब में लोग चीनी का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि चीनी एक प्राकृतिक एक्सफोलिएटर के रूप में काम करती है और आपके चेहरे से गंदगी और कीटाणुओं को दूर करती है। लेकिन यहां आपको यह भी समझना आवश्यक है कि आपकी फेस स्किन बॉडी स्किन से अधिक कोमल होती है और इससे फेस पर इस्तेमाल करने से आपकी स्किन में रेडनेस व अन्य प्रॉब्लम्स हो सकती है। यदि आप अपना फेस पैक तैयार करते समय प्राकृतिक स्क्रबर का उपयोग करना चाहते हैं, तो आप नमक या ओटमील का ऑप्शन चुन सकते हैं।

स्किन की हर समस्या का ख्याल रखता है शहद

अगर आप अपनी स्किन को नेचुरली हेल्दी व ग्लोइंग बनाना चाहती हैं तो इसके लिए शहद से अधिक बेहतर उपाय और कोई नहीं है। शहद में त्वचा को चमकदार बनाने के गुण होते हैं और यह उपयोग के बाद यह आपके फेस पर चमक के साथ-साथ नमी भी बनाए रखता है। जब भी स्किन केयर की बात होती है तो हम नेचुरल आइटम्स पर अधिक फोकस करना पसंद करते हैं। इनसे स्किन को किसी भी तरह के नुकसान होने की संभावना काफी हद तक कम हो जाती है। वहीं, दूसरी ओर यह नेचुरल इंग्रीडिएंट्स हर तरह की स्किन के लिए अच्छे माने जाते हैं। इन्हीं स्किन केयर इंग्रीडिएंट्स में से एक है शहद। शहद को लंबे समय से कभी स्किन केयर पैक तो कभी यूं ही इस्तेमाल किया जाता रहा है। इसमें गजब के मॉइश्चराइजिंग गुण होते हैं, जो आपकी स्किन को अधिक स्वस्थ और बेहतर बनाते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको शहद से स्किन को मिलने वाले कुछ गजब के फायदों पर चर्चा कर रहे हैं-

अगर आप अपनी स्किन को नेचुरली हेल्दी व ग्लोइंग बनाना चाहती हैं तो इसके लिए शहद से अधिक बेहतर उपाय और कोई नहीं है। शहद में त्वचा को चमकदार बनाने के गुण होते हैं और यह उपयोग के बाद यह आपके फेस पर चमक के साथ-साथ नमी भी बनाए रखता है। रूखी स्किन की महिलाएं तो इसे इस्तेमाल करती हैं ही, साथ ही साथ यह ऑयली, एक्ने और अन्य स्किन के लिए भी उतनी ही फायदेमंद है।

निशानों को करे हल्का

शहद में प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होते हैं जो घाव भरने और निशानों को मिटाने में मदद करते हैं। ऐसे में अगर आप अपनी स्किन पर किसी तरह के निशान को हल्का करना चाहते हैं तो ऐसे में शहद के इस्तेमाल से वह धीरे-धीरे मिटने लगते हैं। आप एक्ने के दाग-धब्बों को मिटाने के लिए शहद का इस्तेमाल स्पॉट ट्रीटमेंट के रूप में कर सकते हैं।

सनबर्न से राहत

अगर आपकी स्किन पूरे दिन धूप में रहने के कारण डैमेज हो रही है तो ऐसे में शहद आपकी मदद कर सकता है। धूप से झुलसी त्वचा के कारण स्किन में रेडनेस, सूखापन और जलन महसूस होती है। ऐसे में अपनी स्किन को ठंडक प्रदान करने के लिए आप एक भाग कच्चे शहद को दो भाग एलोवेरा जेल के साथ मिक्स करें और सीधे प्रभावित जगह पर लगाएं।

ऑनलाइन पैसे कमाने के बेहतरीन ऐप

आज के समय इंटरनेट ने हमारी जिंदगी बहुत आसान बना दी है। आप इंटरनेट की मदद से अपने रोजमर्रा के काम तो आसानी से कर ही सकते हैं। लेकिन इसके साथ ही आप इंटरनेट की मदद से घर बैठे पैसे भी कमा सकते हैं। जो लोग घर बैठे काम कर अपने करियर को आगे बढ़ाना चाहते हैं, उनके लिए इंटरनेट एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म हैं। यहां आप कोई भी व्यक्ति अपनी कला के अनुसार और अपनी मर्जी के मुताबिक काम कर सकता है। जैसे इंटरनेट काफी लोगों को पढ़ने की सुविधा देता है, वैसे ही अब इंटरनेट करियर के लिए भी बहुत उपयोगी हो गया है। जो लोग नौकरी की तलाश में अपने समय को बर्बाद नहीं करना चाहते हैं उनके लिए अब घर बैठे पैसे कमाने बहुत अच्छे विकल्प सामने आ गए है। आज हम आपको ऐसी मोबाइल ऐप्स के बारे में बताने जा रहे हैं जिनके जरिए आप घर बैठे ही आसानी से पैसे कमा सकते हैं -

वॉक

ऑनलाइन टीचिंग और होम ट्यूटरिंग के लिए वॉक बहुत पॉपुलर ऐप है। इस ऐप के जरिए आप घर बैठे चत्त से 12वीं क्लास तक के बच्चों को ऑनलाइन ट्यूशन दे सकते हैं। वॉक ऐप पर ट्यूटर्स के लिए भी एक ट्रेनिंग कोर्स भी उपलब्ध है जिससे आप अपनी स्किल्स को और बेहतर बना सकते हैं। वॉक पर ट्यूटर बनने के लिए आपको एक सर्टिफिकेट दिया जाता है जिसके बाद आप काम करना शुरू कर सकते हैं। इसके बाद आप अपनी क्वालिफिकेशन के हिसाब से कोई भी क्लास या सब्जेक्ट चूज़ कर सकते हैं। वॉक ऐप पर रोज़ाना 4-8 घंटे पढ़ा

कर आप महीने में 40 हज़ार तक कमा सकते हैं।

मीशो ऐप

घर बैठे पैसे कमाने के लिए मीशो ऐप बहुत लोकप्रिय है। इस ऐप को आप प्ले स्टोर से डाउनलोड कर सकते हैं। मीशो ऐप में आप चीज़ों को रीसेल यानि दोबारा बेच कर आसानी से घर बैठे पैसे कमा सकते हैं। इस ऐप में अलग-अलग कैटगरी हैं जिनमें से आप कोई भी कैटेगरी चूज़ कर सकते हैं। आपको सिर्फ इतना करना है कि जो भी सामान आपको पसंद है उसे अपने कॉन्टेक्ट्स के साथ शेयर करें। इस तरह से आप सामान के असली दम पर कुछ मार्जिन कमा सकते हैं। कोरोना के समय में मीशो ऐप आपको घर बैठे पैसे कमाने की सुविधा देता है। इस ऐप के जरिए आप घर बैठे 25000 से 1 लाख रूपए तक कमा सकते हैं।

टैगमैंगो

अगर आप सोशल मीडिया की दीवानी हैं और आपका दिन फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसी सोशल मीडिया साइट्स पर ही बीतता है तो आप इससे पैसे भी कमा सकते हैं। टैगमैंगो से आप सोशल मीडिया साइट्स पर ब्रांड्स को प्रमोट करके घर बैठे पैसे कमा सकते हैं। हालाँकि, इसके लिए आपके फेसबुक और इंस्टाग्राम पर 500 से ज्यादा फॉलोवर्स होने चाहिए।

गूगल ओपिनियन रिवॉर्ड्स

पेड सर्वे के बारे में तो आपने सुना ही होगा। इस तरह के सर्वे को भरने के लिए आपको पैसे मिलते हैं। गूगल ओपिनियन रिवॉर्ड्स ऐप पर भी आपको यही करना है। इस ऐप पर आपको सर्वे भरने के पैसे दिए जाते हैं। इस ऐप में आपको एक सर्वे भरने के लिए 32 रूपए का गूगल प्ले रिवॉर्ड मिलता है। खास बात यह कि पुरुषों की तुलना महिलाओं को ज्यादा सर्वे भेजे जाते हैं। लेकिन आपको सर्वे को बिना किसी का पक्ष लिए, सच्चाई के साथ भरना होता है।

एनिमेशन और ग्राफिक डिजाइनिंग में बनाएं कॅरियर

इस डिजिटल दौर में कंपनियां या विभिन्न संस्थाएं प्रचार के कामों में या उत्पादों को बेहतर बनाने में ग्राफिक डिजाइन का इस्तेमाल करती हैं। वहीं, बाहुबली, कुंग फू पांडा और आइस एज जैसी फिल्मों की लोकप्रियता के साथ, एनीमेशन में करियर के बेहतरीन अवसर मौजूद हैं। एनीमेशन और ग्राफिक डिजाइनिंग इन दिनों सबसे अधिक मांग वाले कैरियर विकल्पों में से एक है। आज लगभग हर जगह कंप्यूटर ग्राफिक्स का इस्तेमाल होता है। इंजीनियरिंग, फैशन डिजाइनिंग, सिनेमा में एनीमेशन और ग्राफिक डिजाइनिंग का खूब इस्तेमाल होता है। इस डिजिटल दौर में कंपनियां या विभिन्न संस्थाएं प्रचार के कामों में या उत्पादों को बेहतर बनाने में ग्राफिक डिजाइन का इस्तेमाल करती हैं। वहीं, बाहुबली, कुंग फू पांडा और आइस एज जैसी फिल्मों की लोकप्रियता के साथ, एनीमेशन में करियर के बेहतरीन अवसर मौजूद हैं।

क्या है एनिमेशन

एनीमेशन को एक चरित्र या एक वस्तु के लिए जीवन

को साँस लेने की कला के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह मनोरंजन उद्योग और प्रौद्योगिकी का मिश्रण है, जो ग्राफिक रूप से समृद्ध और आकर्षक मल्टीमीडिया क्लिप के डिजाइन, ड्राइंग, लेआउट और उत्पादन से संबंधित है।

योग्यता

एनीमेशन और ग्राफिक डिजाइनिंग के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए आप 12वीं पास करने के बाद आप ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट, डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। इतना ही नहीं, आजकल कई तरह के प्रोफेशनल कोर्स भी उपलब्ध हैं। एक जूनियर एनिमेटर के और पर आप 8000-15000 प्रति माह कमा सकते हैं। वहीं, 3-5 साल के अनुभव के बाद सैलरी बढ़कर 25,000- 75,000 रूपए तक हो सकती है। इसके साथ ही फ्रीलांस के तौर पर भी इस क्षेत्र में आप बहुत पैसा कमा सकते हैं। एनिमेशन की दुनिया में करने के लिए बहुत कुछ है। अगर आपमें हुनर और काम करने की इच्छा है तो आपको देश और विदेश दोनों जगह से काम करने का मौका मिल सकता है।

GOONJ

रजनीकांत के साथ फिर काम करेंगी ऐश्वर्या राय

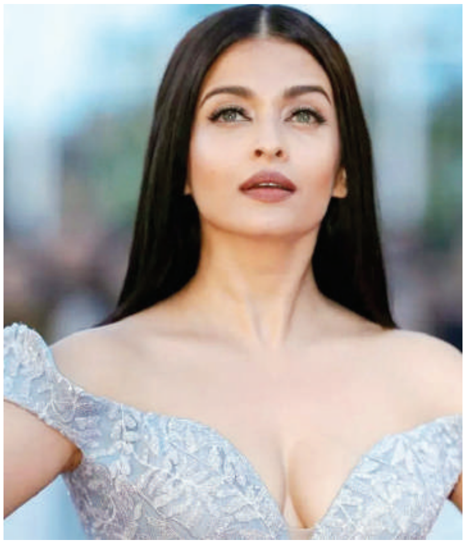

दक्षिण भारतीय सिनेमा के महानायक रजनीकांत एक बार फिर से ऐश्वर्या राय के साथ काम करते नजर आ सकते हैं। निर्देशक नेल्सन दिलीप कुमार , रजनीकांत को लेकर फिल्म थलाइवार 169 बनाने जा रहे हैं। चर्चा है कि इस फिल्म में रजनीकांत के अपोजिट ऐश्वर्या राय बच्चन नजर आ सकती है। ऐश्वर्या के पास फिल्म की स्क्रिप्ट भेजी गयी है। कहा जा रहा है कि वह इस फिल्म करने के मूड में हैं। यदि ऐश्वर्या राय इस फिल्म के लिए हां करती हैं तो वह दूसरी बार रजनीकांत के साथ स्क्रीन साझा करती दिखाई देंगी। ऐश्वर्या राय ने वर्ष 2010 में प्रदर्शित फिल्म रोबोट में रजनीकांत के साथ काम किया है।

बच्चन पांडे से कृति सैनन का पहला लुक रिलीज

बॉलीवुड अभिनेत्री कृति सैनन की आने वाली बच्चन पांडे से उनका पहला लुक रिलीज हो गया है। फिल्म बच्चन पांडे में अक्षय कुमार और कृति सैनन की मुख्य भूमिका है। अक्षय कुमार के बाद अब फिल्म से कृति सैनन का लुक रिलीज हो गया है।कृति सैनन का फिल्म बच्चन पांडे से पहला लुक अक्षय कुमार ने अपने इंस्टाग्राम पोस्ट पर शेयर किया। इस पोस्टर में कृति सैनन, अक्षय कुमार के पीछे बाइक पर बैठी हैं और उन्होंने अपना एक हाथ अक्षय कुमार के गले में डाला है और उनके दूसरे हाथ में बंदूक है। कृति फिल्म में एक महत्वाकांक्षी निर्देशक मायरा देवेकर की भूमिका निभा रही हैं, जो असल जिंदगी में गैंगस्टर बच्चन पांडे के साथ एक मनोरंजक गैंगस्टर बायोपिक फिल्म बनाने की तलाश में हैं।फर्स्ट लुक में कृति सेनन काफी रफ एंड टफ लुक में नजर आ रही हैं। इस पोस्टर को अपने इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए अक्षय कुमार ने कैप्शन में लिखा, बच्चन पांडे के नजर के तीर और कृति सेनन की होली पर गोली।

आलिया बनीं गंगूबाई काठियावाड़ी

इलीवुड अभिनेत्री आलिया भट्ट की आने वाली फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी 25 फरवरी को रिलीज होगी। संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनीं फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी में आलिया भट्ट की मुख्य भूमिका है। इस फिल्म में आलिया गंगूबाई काठियावाड़ी की भूमिका में नजर आयेगी। यह फिल्म मुंबई के कमाठीपुरा के एक वेश्यालय की मैडम गंगूबाई कोठेवाली के जीवन से प्रेरित है और हुसैन जैदी की किताब माफिया क्वींस ऑफ मुंबई के एक अध्याय पर आधारित है।फिल्म गंगूबाई काठियावाड़ी 25 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है। इस फिल्म में अजय देवगन विशेष भूमिका में नजर आयेंगे। भंसाली प्रोडक्शंस ने सोशल मीडिया के जरिए नई रिलीज डेट की घोषणा कीजिसके मुताबिक गंगूबाई काठियावाड़ी अब 25 फरवरी को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

मौसम कोई भी हो बच्चों की डाइट पर विशेष ध्यान दें: डॉ. अजय गौर

कोरोना वायरस महामारी के बीच डॉक्टर बिना थके मरीजों की सेवा में लगे हुए हैं. आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ऐसे ही कोरोना वॉरियर्स डॉ. अजय गौर को अपनी कलम के माध्यम से सलाम कर रहे हैं जो मरीजों की सेवा में तत्पर होकर कार्य कर रहे हैं।। डॉ. अजय गौर बाल एवं शिशु रोग विशेषज्ञ हैं और प्रोफ़ेसर एवं विभाग अध्यक्ष गजराराजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर में बाल एवं शिशु रोग विभाग में पदस्थ हैं वह पिछले 30 वर्षों से एक शिशु रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएँ निरंतर दे रहे हैं। गूंज पत्रिका को दिए साक्षात्कार के प्रमुख अंश इस प्रकार हैं।

● टीम गूंज न्यूज़ नेटवर्क

सबसे पहले हमें अपने बारे में बताइये

-मैं बाल एवं शिशु रोग विशेषज्ञ हूँ बच्चों के जो चिकित्सक होते हैं और साथ में गजराराजा मेडिकल कॉलेज में बाल एवं शिशु रोग विभाग में प्रोफ़ेसर एवं विभाग अध्यक्ष हूँ और करीब पिछले 30 वर्षों से एक शिशु रोग विशेषज्ञ के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहा हूँ

सर कोविड से काफ़ी बच्चे भी इसका शिकार हो रहे हैं, ऐसे में पेरेंट्स को क्या क़दम उठाने चाहिए?

-इस बार कोविड की जो तीसरी लहर है उसमें जिस प्रकार की एक आशंका व्यक्त की जा रही थी कि इस लहर में बच्चों को भी संक्रमण होने का भी ख़तरा है और वह आशंका सही साबित हुई है अगर हम पूरे भारत वर्ष का और ग्वालियर का भी डेटा देखें तो तो हम यह पाएंगे कि प्रतिदिन काफ़ी बच्चे भी करोना से संक्रमित हुए। बच्चों में भी जैसे बड़ों में होते हैं सर्दी खाँसी बुख़ार जैसे लक्षण, लेकिन बच्चों में उल्टी दस्त जैसे लक्षण भी सामने आये। पेरेंट्स को बच्चों के ऊपर एक सतर्क निगरानी रखनी चाहिए और यदि घर में किसी बड़े व्यक्ति को सर्दी खाँसी या जुखाम है यह अगर कोई कोरोना से पॉज़िटिव है घर में दो इस तरह के जो लक्षण है उनको बिलकुल भी नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए साथ ही इस बात पर भी ध्यान देना है चाहिए कि अगर बच्चे को सर्दी ख़ासी जुखाम है और बुखार की दवा देने के बाद भी हर तीन चार घंटे में दोबारा से आ रहा है तो यह सब कोरोना के लक्षण हो सकते हैं उस समय यह उचित रहेगा कि बच्चों की आरटीपीसीआर की जाँच या कोरोना की जाँच वह करा लेनी चाहिए

इस इस समय ठंडक के मौसम में बच्चों की डाइट कैसी होनी चाहिए?

-मौसम कोई भी हो हमें बच्चों की डाइट पर विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि ग्रोइंग स्टेज होती है बच्चों की बढ़ने की उम्र होती है और जिस तरह से बच्चे का वजन बढ़ता है उस गति से बड़ों का वज़न नहीं बढ़ता है उसी अनुपात में जो है हमें बच्चों के खानपान का ध्यान ध्यान रखना चाहिए। खानपान में जो है की मुख्य रूप से तीन चीज़ें आती है प्रोटीन, फैट, कार्बोहाइड्रेट्स प्रोटीन जो है हमारे लिए बोहोत ज़्यादा ज़रूरी होता है अगर हम भर्ती के लिए देखें तो बच्चों की फिजिकल ग्रोथ के लिए देखें तो क्योंकि जो हमारा वज़न बढ़ता है वे हमारी मांसपेशियों

डॉ. अजय गौर
(बाल एवं शिशु रोग विशेषज्ञ)
विभाग अध्यक्ष गजराराजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर

से भरता है यह हड्डियों से बढ़ता है तो माँसपेशियों की जो मसल्स होती है तो रूप से प्रोटिन निर्धारण करता है ,प्रोटीन की डाइट जो लोग वेजीटेरियन हैं उनके लिए जैसे डाल छोले राजमा सोयाबीन इस तरह की जो चीजें हैं प्रोटीन के अच्छे सोर्स माने जाते हैं और जो लोग नोन वेजेटेरीयन हैं उनके लिए ऐनिमल प्रोटीन अच्छा स्थ्रोत माना जाता है कार्बोहाइड्रेट हमको एनर्जी देते हैं ऊर्जा देते हैं और कार्बोहाइड्रेट के लिए हम जैसे गेहूं खाते हैं चावल लेते हैं यह हम कोई मीठी चीज़ खाते हैं तो यह सब कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं इसके बाद तीसरी चीज़ आती है वो है फ़ैट जिसमें हम तेल घी या वसा का इस्तेमाल करते हैं डाइट हमारी इस तरह से होनी चाहिए कि इन तीनों चीज़ों का सही अनुपात एक बैलेंस डाइट हो, अपने बच्चे को हर तरह का भोजन दें ।

माँ को अगर करोना पॉज़िटिव है तो कितने चान्सेस है कि बच्चा भी करोना पॉज़िटिव होगा?

-देखिए यह आवश्यक नहीं है कि अगर माँ को करोना है तो बच्चा भी हर वक्त पॉज़िटिव ही होगा, यह इस पर ही निर्भर करता है कि बच्चे की उम्र क्या है जहाँ तक नवजात शिशुओं का सवाल है हालाँकि इसका कोई प्रमाण अभी तक नहीं आया है कि अगर माँ कोविड पॉज़िटिव है या गर्भावस्था के दौरान कोविड पीड़ित है तो बच्चों पर इसका असर होना ज़रूरी हो, क्योंकी कोविड साँस और हवा के द्वारा फैलता है ऐसे में संभावना रहती है कि माँ से बच्चे को कोविड लग सके इसी लिए माताओं को विशेस ख़याल रखना चाहिए।

हमारे देश की स्वास्थ्य प्रणाली कितनी सक्षम है कि अगर बच्चों में कोविड इन्फ़ेक्शन बढ़ने लग जाए तो?

कोविड या कोविड के बिना भी जो हमारे स्वास्थ्य सेवाएँ है उनकी अगर हम बात करें तो मैं इस पर यह कहना चाहूंगा कि हमारी जो स्वास्थ्य प्रणाली है वो बहुत अच्छी है। सभी प्रकार की सुविधाएँ जो है प्रशासन के द्वारा उपलब्ध कराई जा रही हैं , जो पीड़ित बच्चे हैं उन्हें किसी भी प्रकार की समस्या न आए और वर्तमान मे हमारे पास एक वॉरंट जो केवल बच्चों के लिए ही आरक्षित है अगर नौबत आती है तो वहाँ उन्हें भर्ती कर कर उनका सही इलाज किया जा सकेगा साथ में मैं यही कहना चाहूंगा कि ऐसे समय में कोरोना से बचाव के लिए सही क़दम उठाए तो ऐसी नौबत कम ही आती है कि मरीज़ों को छुए हमको अस्पताल में भर्ती करवाना पड़े।

सर आप सॉसायटी और हमरे पाठकों को क्या संदेश पहुँचाना चाहते हैं?

सभी लोगों को मैं यही चाहूंगा कि अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहें, जागरूक रहे, अपने मन से किसी भी तरह की दवाई का उपयोग न करें ना ही बीमारी को लेकर तकमटोलि करें। थोड़ी सी भी परेशानी हो अगर तो सही क़ालिफ़ायड डॉक्टर से सलाह लें और सुरक्षित रहें

प्रभारी मंत्री ग्वालियर तुलसी सिलावट ने स्मार्ट सिटी द्वारा निर्माणाधीन स्मार्ट रोड का निरीक्षण किया। परियोजना के प्रथम चरण के अन्तर्गत थीम रोड पर चल रहे विकास कार्य से अवगत कराया।

स्मार्ट सिटी : जक्शनों को सुगम, सुंदर व सुरक्षित जंक्शन उन्नयनीकरण का कार्य प्रगति पर

● गूंज न्यूज नेटवर्क

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत शहर में विभिन्न जक्शनों को सुगम, सुंदर व सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से स्मार्ट सिटी द्वारा जंक्शन उन्नयनिकरण का कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना के अंतर्गत प्रथम चरण में शहर के मुख्य जंक्शन तानसेन चौराहा, हजीरा, व उरवाई गेट जंक्शन का उन्नयनिकरण किया जा रहा है। स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती जयति सिंह ने बताया कि ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा आमजन की मूलभूत सुविधाओं में सुधार व उनके जीवन को सुगम बनाने के उद्देश्य से विभिन्न परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी क्रम में ग्वालियर स्मार्ट सिटी ने जंक्शन उन्नयनिकरण परियोजना का कार्य शुरू किया गया है। इस परियोजना के तहत शहर के चिन्हित जंक्शनों को यातायात के हिसाब से सुरक्षित व सुगम बनाना है। इसके साथ ही इस परियोजना से चिन्हित जंक्शनों का सौंदर्यीकरण भी किया जा रहा है। लैंड्स्केपिंग की विभिन्न शैलियों जैसे एफ़आरपी वॉल, म्युरल, वॉल आर्ट, पत्थर शिल्प, इत्यादि के माध्यम से ये जंक्शन शहर को एक अलग पहचान देंगे। इस परियोजना के तहत उरवाई गेट, हजीरा चौराहा व तानसेन जक्शन पर उन्नयनिकरण किया जा रहा है। इस परियोजना के तहत तानसेन होटल जंक्शन सुधार का कार्य पूर्ण हो चुका है व उरवाई गेट, हजीरा जंक्शन उन्नयनिकरण का कार्य अंतिम चरण में है। यातायात सुगमता को ध्यान में रखते हुये उरवई जंक्शन पर मूलभूत डिज़ाइन में सुधार किया गया है। यहाँ रोटरी को रीअलाइन कर सेण्टर अलाइनमेंट प्रदान किया गया है। ऐसा करने से अब यातायात बिना अवरोध संचालित होता देखा जा सकता है, इसके अलावा यहाँ डाउन चेम्बर को व्यवस्थित कर सुगमता भी प्रदान की गई है।

अटल जी के जीवन से जुड़ी स्मृतियों की पिक्चर गैलरी

पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी की यादों को संजोने के लिए गोरखी स्कूल परिसर में स्मार्ट म्यूजियम का काम तेज गति से प्रगतिरत है। म्यूजियम में बनने वाली आधा दर्जन गैलरी में अटल जी के सम्पूर्ण जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं को स्मार्ट तरीके से संजोया जाएगा। इसी क्रम में म्यूजियम में अटल जी की स्मृति को संजोए चित्रों की गैलरी का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इस गैलरी में अटल जी के पूरे जीवन के अलग अलग पहलुओं को तस्वीरों के माध्यम से सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है। ग्वालियर स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती जयति सिंह नें जानकारी देते हुए बताया कि अटल जी को समर्पित अटल म्यूजियम का कार्य तेज गति से प्रगतिशील है जहां एक और गोरखी स्कूल के एक ब्लॉक को अटल म्यूजियम के रूप में बिल्डिंग की ऐतिहासिकता को सजोते हुए विकसित किया जा रहा है तो वही स्मार्ट सिटी का प्रयास है कि अटल जी की स्मृतियों को बड़ी संख्या में म्यूजियम के लिए एकत्रित किया जाए ताकि अटल म्यूजियम को भव्यता प्रदान की जा सके। श्रीमती सिंह ने बताया कि म्यूजियम में अटल जी की स्मृतियों को सजोते हुए एक पिक्चर गैलरी तैयार हो चुकी है और म्यूजियम के अन्य कार्य भी तेजगति से प्रगतिरत है और जल्द ही शहरवासी अटल जी की स्मृतियों को इस संग्रहालय के माध्यम से देख सकेंगे। इस गैलरी में अटल जी की वैश्विक दौरों, विशेष के अग्रणी नेताओं से मुलाक़ात, उनके जीवनकाल से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं को क्रमबद्ध तरीक़े से दर्शाया गया है ।

पोषण की पोटली कार्यक्रम आयोजित

महिलाओं को किया जागरूक

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गूंज 90.8 एफएम की डायरेक्टर कृति सिंह ने पोषण की पोटली कार्यक्रम के बारे में महिलाओं को विस्तारपूर्वक समझाया और मार्गदर्शन किया

● **गूंज न्यूज नेटवर्क**

महिलाओं को सशक्त बनाने एवं उनके स्वास्थ्य संबंधी जानकारी देने हेतु गूंज, स्मार्ट एवं यूनिसेफ द्वारा नया बाजार स्थित टापू मोहल्ला आंगनबाड़ी केंद्र पर पोषण की पोटली कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में गूंज 90.8 एफएम की डायरेक्टर कृति सिंह थीं। उन्होंने पोषण की पोटली कार्यक्रम के बारे में महिलाओं को विस्तारपूर्वक समझाया और मार्गदर्शन किया साथ ही उन्होंने गर्भवती महिलाओं को खास विशेष जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मां स्वस्थ तो शिशु स्वस्थ। कार्यक्रम का संचालन फैमिली प्लानिंग एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ग्वालियर ब्रांड के अछेन्द्र सिंह कुशवाह द्वारा किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं के स्वास्थ्य जांच हेतु गूंज की डायरेक्टर कृति सिंह की ओर से वजन तोलने वाली मशीन एवं ब्लड प्रेशर मशीन आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मीणा खरे एवं आशा कार्यकर्ता गीता सूर्यवंशी को भेंट की गयी।

कार्यक्रम में महिलाओं के स्वास्थ्य जांच हेतु गूंज की डायरेक्टर कृति सिंह की ओर से वजन तोलने वाली मशीन एवं ब्लड प्रेशर मशीन आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मीणा खरे एवं आशा कार्यकर्ता गीता सूर्यवंशी को भेंट की गयी।

कार्यक्रम में महिला बाल विकास की योजनाओं के बारे में मीणा खरे ने महिलाओं को जागरूक किया एवं महिला बाल विकास द्वारा चलाई जा रहीं कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी।

कैंसर से घबराए नहीं, समय समय पर चेकअप करवाते रहें: डॉ. संजय चन्देल

डॉक्टर धरती पर भगवान का दूसरा रुप होते हैं. भगवान तो हमें एक बार जीवन देता है पर डॉक्टर हमारे अमूल्य जान को बार-बार बचाता है. कोरोना काल में सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में डॉक्टर समर्पण भाव से मरीजों की सेवा में लगे हैं ऐसा ही एक नाम हैं डॉ. संजय सिंह चन्देल अध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष कैन्सर रोग विभाग जयरोग्य चिकित्सालय गाजराराजा मेडिकल कॉलेज जिन्होंने कोरोना काल में पूरी मेहनत से हर परिस्थिति का सामना किया और पूरे समर्पण के साथ मरीजों की सेवा भाव में लगे रहे गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से उन्हें सलाम करती है।

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

डॉ. संजय सिंह चंदेल अध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष कैन्सर रोग विभाग जयरोग्य चिकित्सालय गाजराराजा मेडिकल कॉलेज ग्वालियर जो कि विगत 15 वर्षों से कैंसर जैसी जटिल बीमारी से ग्रसित मरीजों का उपचार कर रहे हैं। कोरोना काल में भी सच्चे कोरोना वॉरियर्स के रूप में डॉ. चंदेल ने अपनी सेवाएं निरंतर दी और मरीजों की सेवा में खुद को समर्पित होकर कार्य किया गूंज मीडिया ग्रुप से बातचीत में डॉ. चंदेल ने कहा कि कैंसर से घबराए नहीं, आज कल नई टेक्नॉलजी आयी है, समय समय पर चेकअप करवाते रहें। गूंज पत्रिका को डॉ. चंदेल ने दिए इंटरव्यू के मुख्य अंश इस प्रकार हैं।

आप सबसे पहले हमारे पाठकों से खुद को रूबरू कराएं।

-मैं डॉक्टर संजय सिंह चंदेल , अध्यापक एवं विभाग अध्यक्ष कैन्सर रोग विभाग जयरोग्य चिकित्सालय गाजराराजा मेडिकल कॉलेज में कार्यरत हूँ 15 साल से कैन्सर की फ़ील्ड में अनुभव है ।

सर ऑकॉलॉजी के फ़ील्ड में आ रहे नए डिवेलप्मेंट्स के बारे में हमें बतायें?

-ऑकॉलॉजी में बहुत सारी चीजें होती है मेडिकल ऑकॉलॉज हो गई एक रेडीएशन हो गई सर्जिकल

डॉ. संजय सिंह चन्देल
एम. डी., पी.डी.सी.आर., एफ.सी.आर.टी.
(प्रोफेसर एवं एच.ओ.डी.) कैंसर रोग विशेषज्ञ

ऑकॉलॉजी मेन्ली ये तीन ब्रैंचेज़ होती हैं , जो ट्रीटमेंट की अपन बात करते हैं तो मेडिकल रेडीएशन और सर्जिकल ऑकॉलॉजी होती है । मेडिकल में नाम से स्पष्ट होता है ये दवाइयों से ठीक किया जाता है दवाई और इंजेक्शन के फ़ोरम में आ सकता है , रेडीएशन ऑकॉलॉजी में हम रेडीएशन से कैन्सर का ट्रीटमेंट करते हैं

सर कैन्सर का अर्ली डायग्नोसिस ट्रीटमेंट कितना लाभदायक होता है ?

अर्ली डायग्नोसिस में ये है की हमने जल्दी कैन्सर का पता चल गया स्टेज वन या स्टेज टू में तो हम जल्दी से जल्दी ट्रीटमेंट चालू कर सकते हैं तो उससे पेशंट के ठीक होने की सम्भावना ज़्यादा होती है । अलग अलग कैन्सर के स्टेज वन में परिणाम अलग होते हैं । स्टेज वन में 80प्रश से ज़्यादा मरीज़ों के ठीक होने की सम्भावना होती है

कैन्सर सिर्फ़ एक मरीज़ की नहीं बल्कि पूरे परिवार की लड़ाई है , बोहोत बार लम्बे ट्रीटमेंट के चलते परिवार निराश हो जाता है, उनको आप क्या सलाह देंगे?

-इसको हम पॉज़िटिव तरीक़े से देखे , अभी करोना में भी कितने लोगों ने जान गवाई है , करोना के समय में मरीज़ अस्पताल में भर्ती हुआ और फिर लौटके नहीं आया, कोई ख़तरनाक ऐक्सिडेंट हो गया वहीं कैन्सर में तो मरीज़ लम्बे समय तक लड़ सकता है , ऐसे में मोरल सपोर्ट बोहोत ज़रूरी होता है।

यदि परिवार में किसी को कैन्सर है तो बाक़ी परिवार वालों को भी इसका ख़तरा हो सकता है क्या ?

-कैन्सर फैलने वाली बीमारी तो है नहीं लेकिन कुछ कैन्सर ऐसे होते है जो अनुवमशिक होते हैं जैसे स्तन कैन्सर है तो ये माँ से बेटी में होने के थोड़े चैन्सेज़ है वरना कैन्सर कोई फैलने वाली बीमारी नहीं है , स्प्रेड नहीं होती है एक से दूसरे को।

सर एक मेसिज जो आप हमारे पाठकों और सॉसायटी को देना चाहते हों।

सभी को हम यही संदेश देना चाहेंगे की कैन्सर से घबराए नहीं , आज कल नयी टेक्नॉलजी आयी है , समय समय पर चेकप करवाते रहे । महिलाओं में curvical कैन्सर और स्तन कैन्सर बढ़ रहा है तो 40 से ऊपर की उम्र की महिलाएँ समय पर अपना चेकप करवाती रहें।

गूंज पत्रिका का अवलोकन करते डॉ. संजय सिंह। उन्होंने पत्रिका को बारीकी से पढ़ा और इसके सफलतम प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई भी दी।

कोई भी मौक़ा हो, गिफ़्ट में देते हैं रामायण, ताकि युवा पीढ़ी को बनी रहे संस्कृति की पहचान

GOONJ

SPECIAL REPORT

धर्म के प्रति अलख जगा रहे हैं डॉ रविंद्र सिंह कुशवाह

(दादा जी की स्मृति में रामायण कर रहे हैं भेंट चार हज़ार से अधिक रामायण का कर चुके हैं वितरण

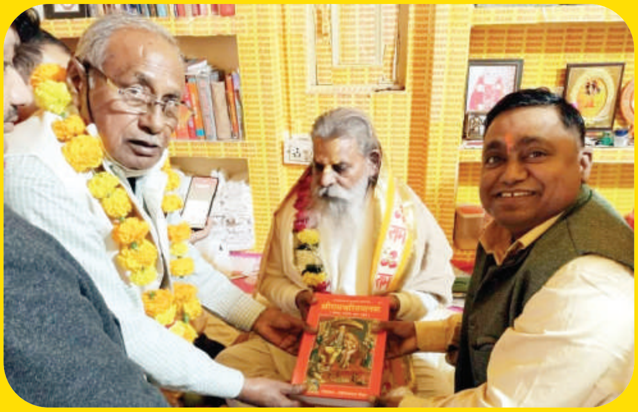

● **गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर**

किसी का जन्मदिन हो, विवाह की वर्षगाँठ हो या कोई अन्य उपलक्ष्य, तो महँगे से महँगा उपहार देना प्रचलन में आ गया है, मगर शहर के एक युवा प्रोफ़ेसर ऐसे हैं, जो कि उपहार में रामचरित मानस भेंट करते हैं। ऐसा इसलिए कर रहे हैं, ताकि आने वाली

पीढ़ी अपनी संस्कृति और धर्म को न भूल पाए।

प्रोफ़ेसर डॉ रविंद्र सिंह कुशवाह होमियोपैथिक मेडिकल कोलेज में प्राचार्य के पद पर पदस्थ हैं.और शहर के दीनदयाल नगर में निवास करते हैं। वह क़रीब तीन साल से रामायण बांट रहे हैं। इनका कहना है कि वे अब तक चार हज़ार के क़रीब रामायण का वितरण कर चुके हैं। डॉ कुशवाह बताते हैं कि आज के युवा हिंदू ग्रंथों को भूलते जा रहे हैं। हर घर में खुशहाली लाने हेतु लोगों को रामायण के प्रति जागरूक करने हेतु उन्होंने यह पहल शुरू की है। इसके अंतर्गत देश, विदेश, राज्य, जिले या तहसील कहीं-किसी भी शहर में जन्मदिन होता है या उनको जिनकी जन्मदिन की जानकारी लगती है, तो वह रामचरितमानस उपहार के स्वरुप भेंट करने पहुंच जाते हैं व शुभकामना देते हैं। इसी क्रम में उन्होंने जन समुदाय में साधारण व्यक्तियों, परिवार जनों एवं रिश्तेदारों में रामायण भेंट करनी शुरू की। यह मुहिम उन्होंने अपने दादाजी स्वामी श्री विवेकानंद जी महाराज स्वर्गीय श्री (कोक सिंह राजावत जी) की स्मृति में शुरू की, जिनको रामायण कंठस्थ याद थी और इसके बारे में पूरा ज्ञान था। श्री कुशवाहा द्वारा पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया के एक निजी कार्यक्रम से मार्गदर्शन लेकर रामचरितमानस उपहार के स्वरुप भेंट करने की शुरुआत की क़रीब चार साल पहले की थी।

डॉ रविंद्र सिंह कुशवाह ने केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर व प्रदेश के मंत्रियों, सांसदों, विधायक व प्रशासनिक अधिकारियों समेत कई लोगों को रामायण भेंट की है। लगभग हर घर में रामचरितमानस ग्रंथ पहुँचाना ही उनका एकमात्र लक्ष्य है। इसके अलावा भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रामायण भेंट करने हेतु पत्र के माध्यम से उन्होंने समय की मांग की है। इसका मुख्य अभिप्राय यह भी है कि परिवार में आने वाली पीढ़ी को ईश्वर के प्रति आध्यात्मिकता से जोड़ना।डॉ रविन्द्र सिंह कुशवाह जीवन का एक मात्र लक्ष्य हैं की एक रामायण बैंक बनाई. जाये जहाँ आम नागरिक आसानी से रामायण को हासिल कर सखे उनसे बातचीत के दौरान बताया की वह जल्द जल्द इस स्थापित करेंगे..इससे वो बिलकुल. निशुल्क रखना चाहते हैं।

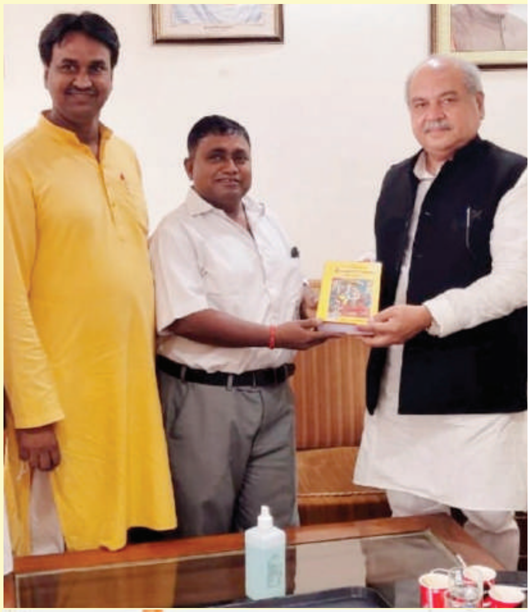

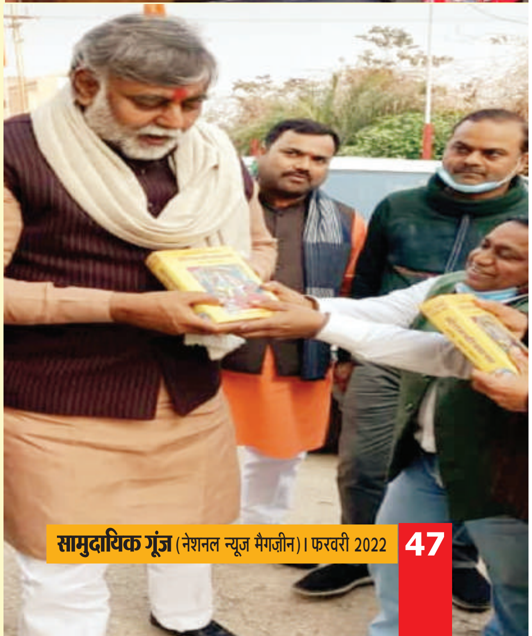

खेलों में आत्मनिर्भर बनें.....

खेल मनुष्य की जन्मजात प्रकृति है। बच्चे बचपन से ही किसी न किसी खेल का आनन्द उठाते हैं। विद्यालयों में भी उनको खेलने का अवसर मिलता है। किन्तु खेलों के प्रति जिस प्रोत्साहन की जरूरत है, उस ओर समाज और सरकार को ही गम्भीरता से आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता बनी हुई है। हमारे देश में खेलों को शिक्षा में बाधक माना जाता है। परिवार के बड़े बच्चों को खेलकूद के प्रति हतोत्साहित करते हैं। उनका मानना है कि दूसरे बच्चों का ध्यान पढ़ाई-लिखाई से हट जाता है और वे जीवन में पिछड़ जाते हैं। कहावत प्रचलित है पढ़ोगे लिखोगे

बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब।' यद्यपि यह कहावत आधारहीन है। खेल जीवन को सँभालने के लिए जरूरी हैं और शिक्षा के समान ही आवश्यक हैं। इस मनोवृत्ति का परिणाम यह है कि खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए हमारे यहाँ कोई व्यवस्था ही नहीं है। सरकार की खेलों को बढ़ावा देने की सुनिश्चित नीति न होने के कारण, खेलने के मैदानों में बस्तियाँ बस गई हैं। स्कूलों के पास कोई प्ले ग्राउण्ड बचा ही नहीं है। न खेलने का सामान है और न खेलों के लिए धन की कोई व्यवस्था है।

खेल उन सभी के लिए, जो इनमें पूरी लगन के साथ शामिल होता के लिए भविष्य में अच्छा कैरियर रखते हैं। यह विशेषरुप से विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभदायक है क्योंकि, यह शारीरिक और मानसिक विकास को सहायता प्रदान करता है। वे लोग जो खेलों में अधिक रुचि रखते हैं और खेलने में अच्छे हैं, वे अधिक सक्रिय और स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

प्रगतिशील और आधुनिक बनने के दौड़ में हम अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। खेल का महत्व जैसे हम भूलते जा रहे हैं। आज के बच्चे मोबाइल,लैपटॉप और वीडियो गेम्स में ही खेल खेलते हैं। परंतु खेल का महत्व बच्चों की बढ़ती ग्रोथ के साथ जानना आवश्यक है। मजबूत आत्मा और पक्के मन का मंदिर शरीर कल्पना में भी कैसे कच्चा हो सकता है? खेलकूद स्वास्थ्य-रक्षा का निःशुल्क साधन है। स्वामी विवेकानंद जी ने स्वास्थ्य का मस्तिष्क पर प्रभाव के विषय में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किए थे स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।

खेलों से स्वास्थ्य तो ठीक रहता ही है इनसे मनुष्य का चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास भी होता है। खेलकर से पुष्ट और स्फूर्तिमय शरीर ही मन को स्वस्थ बनाता है। खेलकूद मानव मन को प्रसन्न और उत्साहित बनाए रखते हैं। खेलों से नियम पालन के स्वभाव का विकास होता है और मन एकाग्र होता है। खेल में भाग लेने से खिलाड़ियों में सहिष्णुता,धैर्य और साहस का विकास होता है तथा सामूहिक सद्भाव और भाईचारे की भावना बढ़ती है। खेलकूद अप्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होते हैं ये जीवन संघर्ष का मुकाबला करने की शक्ति प्रदान करते है। खेलकूद से एकाग्रता का गुण आता है जिससे अध्यात्म साधना में मदद मिलती है।

खेलों में बच्चे, बूढ़े, युवक सभी आयु वाले भाग ले सकते हैं। खेल दो प्रकार के हैं- एक वे जो घर में बैठकर खेले जा सकते हैं या किसी हॉल में जैसे-शतरंज, लूडो, केरमबोड,टेबल टेनिस आदि। दूसरे प्रकार के खेल वे है जो घर से बाहर खुले स्थानों और मैदानों में खेले जाते हैं जैसे- हॉकी, क्रिकेट, बॉलीबॉल, फुटबॉल, लोन टेनिस, कबड्डी आदि। घर में खेले जाने वाले खेलों से केवल मनोरंजन होता है। इन से मन मस्तिष्क का व्यायाम तो हो जाता है, परंतु शरीर का व्यायाम नहीं होता। शारीरिक व्यायाम तो मैदान में खेले जाने वाले खेलों से ही होता है।

आज संसार के सभी देशों ने खेल के महत्व को समझ लिया है, इसलिए खेलों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। स्कूलों,कॉलेजों में खेलों पर अधिक खर्च किया जाने लगा है। अब हर स्तर पर खेलों का महत्व समझाने के लिए खेलों का आयोजन होने लगा है। इससे न केवल खिलाड़ियों बल्कि देखने वालों और सुनने वालों का भी मनोरंजन होता है। इससे जीवन रसमय बन जाता है। खेल के मैदान में खिलाड़ियों से अधिक उत्साह दर्शकों में दिखाई देता है। विदेशों में खेल के महत्व को समझते हुए खेल पर बहुत ध्यान दिया जाता है। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश में सरकार खेलों पर उतना ध्यान नहीं देती जितना देना चाहिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि खेलों में भाग लेकर खिलाड़ी अपना स्वास्थ्य तो ठीक रखते ही है साथ ही अपने विद्यालय, कार्यालय तथा देश का नाम भी उज्वल करते हैं।

धन्यवाद

= मनोज सिंह भदौरिया

मनोज सिंह भदौरिया

सह संपादक

“ प्रगतिशील और आधुनिक बनने के दौड़ में हम अपने स्वास्थ्य से खिलवाड़ कर रहे हैं। खेल का महत्व जैसे हम भूलते जा रहे हैं। आज के बच्चे मोबाइल,लैपटॉप और वीडियो गेम्स में ही खेल खेलते हैं। परंतु खेल का महत्व बच्चों की बढ़ती ग्रोथ के साथ जानना आवश्यक है। मजबूत आत्मा और पक्के मन का मंदिर शरीर कल्पना में भी कैसे कच्चा हो सकता है? खेलकूद स्वास्थ्य-रक्षा का निः शुल्क साधन है। स्वामी विवेकानंद जी ने स्वास्थ्य का मस्तिष्क पर प्रभाव के विषय में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त किए थे स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। ”

COVID-19 (कोरोना वायरस)
घबराएं नहीं, जानकारी ही हमारा सुरक्षा कवच है

हमें मिलकर कोरोना को हराना है

डॉ. संजय सिंह चन्देल

एम. डी., पी.डी.सी.आर., एफ.सी.आर.टी.
(प्रोफेसर एवं एच.ओ.डी.)
कैंसर रोग विशेषज्ञ

अपील : कोरोना नियमों का पालन करें,
सावधानी बरतते रहिए, दो गज दूरी,
अभी मास्क है जरूरी

जयारोग्य चिकित्सालय एवं गजराराजा मेडीकल कॉलेज, ग्वालियर म.प्र.
सदस्य सलाहकार समिति मेडीकल ऑन्कोलॉजी, भारत सरकार, नई दिल्ली

गणतंत्र दिवस, बसंत पंचमी एवं महाशिवरात्रि पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएं

शिवा सिंह तोमर (एडवोकेट)

(जिलाध्यक्ष)
डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन, युवा कांग्रेस लीगल सेल ग्वालियर

PARAKH

X-RAY, ULTRASOUND & COLOUR DOPPLER CENTRE

Dr. R.P. Gupta
M.D. (Radiology)
Sonologist,
Radiologist& C.T.
Scan Specialist

Dr. J.S. Sikarwar
Hony. Consultant
M.D, (Radiology)
Professor, G.R. Medical
College, Gwalior

PARAKH X-RAY & ULTRASOUND

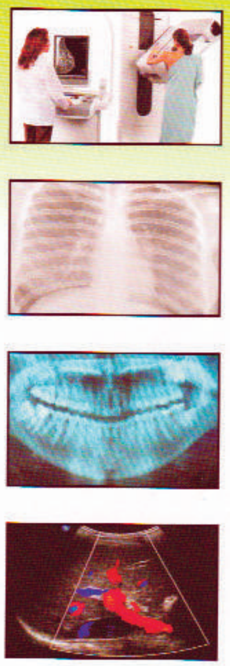

Facilities Available

- Digital X-Ray
- Ultrasonography
- High Resolution Sonography
- Colour Doppler
- USG - 3D / 4D
- Anomaly Scan / Target Scan
- O.P.G.
- ECHO Cardiography
- Mammography

OLD BUS STAND, KAMPOO, LASHKAR, GWALIOR- 474009 (M.P.)
PHONE : 0751- 2628850, 4030299